मेवाड़ दर्शन दीर्घा : फतहसागर झील के किनारे लिंक नहर के गेट से मोती मगरी तक बनाई गई 'मेवाड़ दर्शन दीर्घा' में मेवाड़ व उदयपुर के प्रमुख पर्यटन व ऐतिहासिक स्थलों का चित्रण भव्यता के साथ लाखों रुपये खर्च कर किया गया है। मेवाड़ दर्शन दीर्घा पर 24 मार्बल पेन्टिंग का कार्य किया गया है। इन पेन्टिंग्स को सुरक्षित रखने के लिए एल्यूमिनियम फ्रेम में 16 गुना 6 फीट साईज के 24 टपन ग्लास लगाये गये हैं।

इनके उचित रखरखाव के अभाव में या निर्माण में त्रुटिवश दीर्घा के अन्दर खरपतवार एवं पौधों के फलने–फूलने के दृश्य देखने को मिले। ऐसे दृश्य भविष्य में नजर नहीं आवे, इस हेतु उचित कदम उठाये जाने चाहिये क्योंकि फतहसागर एवं मोती मगरी 'प्रताप स्मारक' उदयपुर शहर के अति महत्त्वपूर्ण पर्यटक स्थल है।

मेवाड़ दर्शन दीर्घा – चौबीस मार्बल पेन्टिंग्स

फतहसागर पार्क : मेवाड़ दर्शन दीर्घा के साथ पूरी लम्बाई पर दीर्घा की छत एवं इससे लगी पहाड़ी पर रंग–बिरंगे पौधों एवं फूलों से सुसज्जित सुन्दर उद्यान विकसित किया गया है। इस पार्क पर पर्यटकों एवं शहरवासियों के बैठने के लिए आरामदायक कुर्सियाँ भी लगाई गई हैं। इन पर बैठकर फतहसागर की विशाल जल सतह एवं उठती हुई लहरों के साथ पश्चिम में सूर्यास्त का सुन्दर नजारा एवं पानी पर उसकी परछाई के अलौकिक दृश्य का आनन्द उठा सकते हैं। यहाँ से रात में प्रकाशमान सज्जनगढ़ का अद्भुत नजारा, जल सतह पर तैरते हुए फव्वारों में से उठते हुए पानी की मनोहारी एवं रंग–बिरंगी छटा के दृश्य देखें जा सकते हैं। इस पार्क के उच्च स्तरीय रखरखाव के साथ मौसमी फूलों से इसे नियमित रूप से सुसज्जित किया जाना चाहिये। यह स्थान ध्यान–साधना के लिए भी अनुकूल है।

मेवाड़ दर्शन दीर्घा के आगे फतहसागर पार्क से फतहसागर का विहंगम् सुन्दर स्वरूप

मेवाड़ दर्शन दीर्घा : परिचय पट्ट विवरण

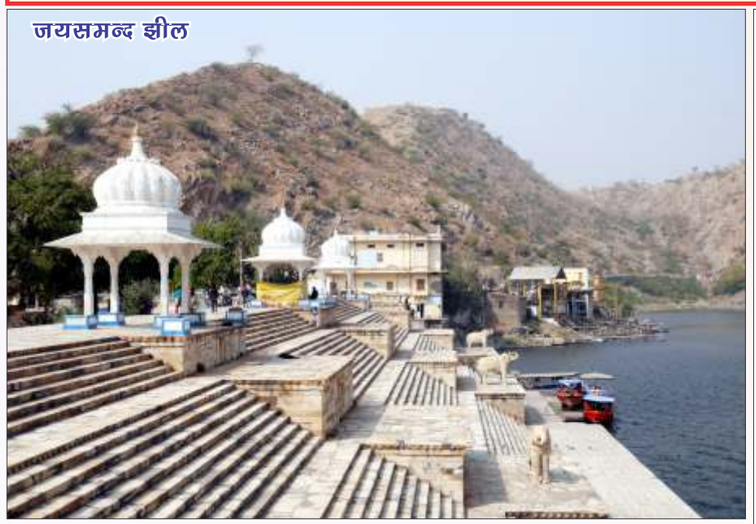

जयसमन्द झील : जयसमन्द झील एशिया की दूसरी सबसे बड़ी मानव निर्मित झील है। यह झील उदयपुर जिला मुख्यालय से 45 कि.मी. दूर है जो उदयपुर–सलूम्बर रोड़ पर स्थित है। यह जब पूरी भरी हुई होती है तो इसका क्षेत्रफल 87 वर्ग कि.मी. का होता है। यह 17वीं शताब्दी में जब उदयपुर के महाराणा जयसिंह ने गोमती नदी पर संगमरमर का बाँध बनाया, तब बनी थी। तब यह विश्व की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील थी। इसके पास जयसमन्द वन्य–जीवन अभयारण्य अवस्थित है। यहाँ पर उदयपुर से बांसवाड़ा जाने के लिए राज्य राजमार्ग से जाया जा सकता है। जयसमन्द वन्य–जीवन अभयारण्य 162 वर्ग कि.मी. के ढ़ेबर झील के किनारे के सागवान के जंगल की सुरक्षा करता है। इस झील में कई टापू हैं, जो 10 से 40 एकड़ क्षेत्र में फैले हुए हैं। जयसमन्द झील को ढ़ेबर झील भी कहते है। इस पर जो संगमरमर का बाँध है, वह 300 मीटर लम्बा है। बाँध पर एक हवा महल भी है, जो सर्दियों में तत्कालीन मेवाड़ की राजधानी होता था।

दूध तलाई : दूध तलाई की कुण्डलाकार सड़क सुरम्य पिछोला झील से सटी हुई है। दूध तलाई छोटी–छोटी पहाड़ियों से घिरी हुई है। इसके पास ही दीनदयाल उपाध्याय पार्क एवं माणिक्यलाल वर्मा उद्यान भी है, जिसे रॉक गार्डन या संगीतमय फव्वारा गार्डन भी कहा जाता है। यहाँ पर फास्टफूड केन्द्र, ऊँट व घोड़े की सवारी तथा नौकायन की व्यवस्था भी उपलब्ध है। माणिक्यलाल वर्मा उद्यान से पहाड़ी के शिखर से करणीमाता मन्दिर तक जाने के लिए रोप–वे भी संचालित हो रहा है।

पन्नाधाय दीर्घा (गोवर्द्धन सागर) : गोवर्द्धन सागर का निर्माण महाराणा स्वरूप सिंह जी ने सन् 1855 ई. में कराया था। यह झील पिछोला के दक्षिण में स्थित है तथा लिंक नहर से जुड़ी हुई है। अपने शौर्य एवं बलिदान के लिए प्रसिद्ध मेवाड़, महाबलिदानी पन्नाधाय की जन्मभूमि है। माँ पन्नाधाय के जीवन एवं गौरवशाली इतिहास को चित्रित करते हुए पन्ना दीर्घा का निर्माण गोवर्द्धन सागर के मध्य स्थित टापू पर जहाजनुमा आकार में किया गया है। पन्नाधाय ने उदयसिंह द्वितीय की रक्षा हेतु अपने पुत्र चन्दन का बलिदान दिया। इससे संबंधित समस्त विवरणों को मॉडल्स एवं एनीमेशन फिल्म द्वारा पन्नाधाय दीर्घा में दर्शाया गया है।

मोती मगरी : महाराणा प्रताप स्मारक का प्रारम्भ महाराणा भगवत सिंह मेवाड़ द्वारा किया गया, जिसे आगे बढ़ाकर सार्वजनिक ट्रस्ट ने पूरा करने में सहायता की। मोती मगरी उदयपुर में फतहसागर के सामने स्थित है। मोती मगरी के शिखर पर विश्व प्रसिद्ध महाराणा प्रताप का स्मारक है। इस स्मारक में अपने प्रिय घोड़े चेतक पर सवार महाराणा प्रताप की विशालकाय कांस्य प्रतिमा, उद्यान एवं एक संग्रहालय हैं। प्रतिमा के पीछे ऐतिहासिक महत्व के अवशेष हैं, जो मोती महल के नाम से जाने जाते हैं।

भारतीय लोक कला मण्डल (आदिवासी एवं लोक कलाओं का संस्थान) : भारतीय लोक कला एवं आदिवासी कलाओं का संरक्षण, प्रलेखन, विकास एवं प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से शहर में 1952 ई. में स्थापित भारतीय लोक कला मण्डल विश्व का अपनी तरह का एक अनूठा संस्थान है। शहर के मध्य स्थित लोक कला मण्डल का संग्रहालय पारम्परिक परिधान, आभूषण, मुखौटे, लोक वाद्यों एवं लोक चित्रों के कारण विशिष्टता लिए हुए है, जो प्रतिदिन होने वाले लोकगीत, लोकनृत्य एवं कठपुतली के प्रदर्शन ना केवल भारतीय बल्कि विदेशी पर्यटकों का भी मन मोह लेते हैं। खास धागा पुतली में तो यह विश्व का अग्रणी संस्थान कहलाता है। इसकी स्थापना पद्मश्री देवीलाल सामर ने की।

रणकपुर : इस मन्दिर के निर्माण के बारे में 1437 ई. के एक ताम्रपत्र, मन्दिर में उपलब्ध अभिलेख एवं सोम सौभाग्य काव्य नामक संस्कृत ग्रन्थ में उल्लेख मिलता है। दिव्य यान के स्वप्न से प्रेरित होकर घाणेराव गाँव के धन्नाशाह ने राणा कुम्भा के संरक्षण में, जो उस समय मेवाड़ के शासक थे, इस मन्दिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवाया। मुख्य मंदिर के पास एक खंभे पर लिखे हुए अभिलेख में यह बताया गया है कि 1439 ई. में वास्तुकार दीपक ने एक जैन भक्त धारका के निर्देशन में इस मन्दिर का निर्माण किया। इस मन्दिर का निर्माण कार्य 1458 ई. तक चलता रहा। भूतल का निर्माण कार्य पूर्ण होने पर तप गच्छ के आचार्य सोम सुन्दर सूरी के पर्यवेक्षण में वहाँ पर धार्मिक आयोजन हुए जिसका वर्णन सोम सौभाग्य काल में मिलता है। धन्नाशाह के वंशज अब भी मुख्य रूप से घाणेराव में ही रहते हैं। इस मन्दिर का रखरखाव पिछली शताब्दी से आनन्द जी कल्याण जी पेढ़ी ट्रस्ट द्वारा किया जा रहा है। उदयपुर से रणकपुर की दूरी 94.5 कि.मी. है।

चित्तौड़गढ़ किला

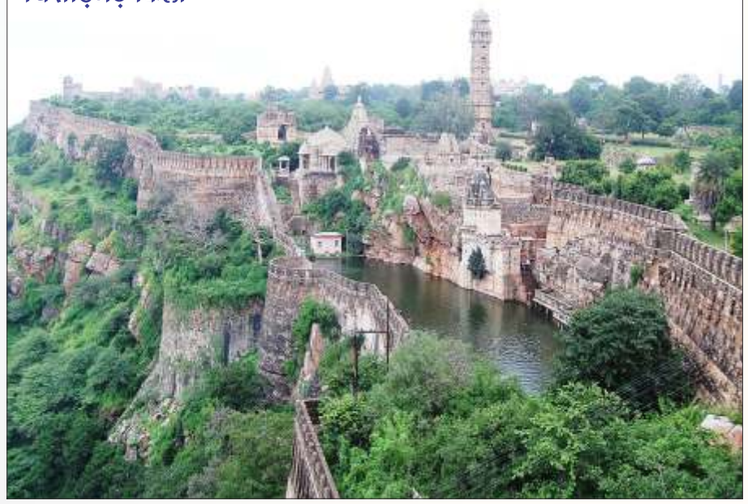

राजसमन्द झील

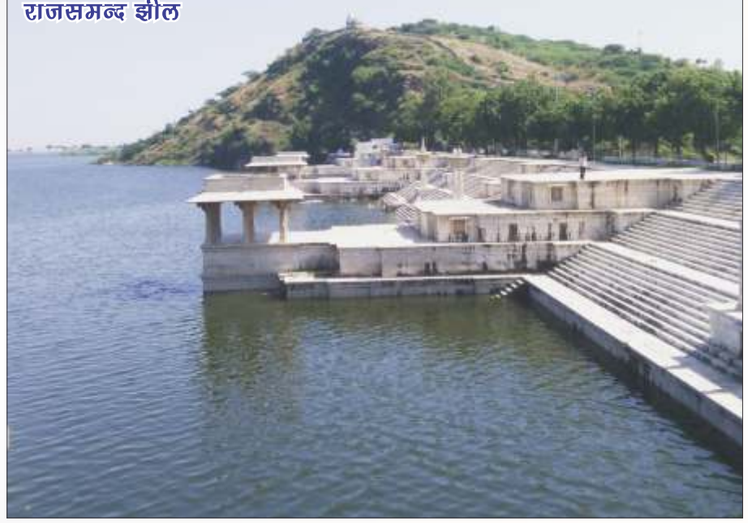

बड़ी तालाब (जनादे सागर)

चित्तौड़गढ़ किला : चित्तौड़ का किला भारत के सबसे बड़े किलों में से एक है। यह यूनेस्को की वर्ल्ड हेरीटेज स्थली है। यह मेवाड़ राज्य की राजधानी था और वर्तमान में चित्तौड़गढ़ शहर में स्थित है। इस पर प्रारम्भ में गोहिल वंश के सूर्यवंशी राजा तथा बाद में सिसोदिया वंश के सूर्यवंशी राजपूत राजा राज्य करते थे। इनका राज्य सातवीं शताब्दी से प्रारम्भ होकर 1567 ई. में बादशाह अकबर के आक्रमण के बाद 1568 ई. में इसे छोड़ देने तक रहा। यह किला अपने एश्वर्यशाली विस्तार के साथ 180 मीटर ऊँची पहाड़ी पर करीब 700 एकड़ भूमि में फैला हुआ है, जो बेड़च नदी द्वारा तैयार किये गये मैदानी इलाके पर स्थित पहाड़ी के ऊपर है। इस किले पर अनेक ऐतिहासिक महल, विशाल द्वार, मंदिर, तालाब, कुंड तथा दो विजय स्मारक हैं। इन ऐतिहासिक भग्नावशेषों ने सदियों से यात्रियों तथा लेखकों की कल्पना को प्रेरित किया है। 15वीं एवं 16वीं शताब्दी में इस किले को तीन बार ध्वस्त किया गया। राजपूत महिलाओं ने अपने बच्चों के साथ यहाँ तीन जौहर किये। पहला जौहर महाराणा रतन सिंह की पत्नी पद्मिनी ने 1303 ई. में महाराणा रतन सिंह की युद्ध में मृत्यु के पश्चात् किया। दूसरा जौहर महारानी कर्णावती ने किया। इन जौहरों में हजारों राजपूत महिलाओं ने अग्निकुण्ड में कूदकर अपनी जान दे दी। इस प्रकार राष्ट्रीयता, साहस, स्वाभिमान एवं अपने सतीत्व की रक्षा की।

राजसमन्द झील : राजसमन्द झील का निर्माण महाराणा राजसिंह ने 1660 ई. में कराया था। इस झील की विशेषता है कि यहाँ नौ–नौ चौकियाँ हैं, प्रत्येक चौकी में नौ सीढ़ियाँ हैं। मुख्य बाँध नौ चौकी ही है। 17वीं शताब्दी में निर्मित यह झील 2. 82 कि.मी. चौड़ी, 6.40 कि.मी. लम्बी तथा 60 फीट गहरी है। यह झील गोमती, केलवा एवं अन्य छोटी–छोटी नदियों द्वारा पोषित होती है तथा लगभग 510 वर्ग कि.मी. क्षेत्र को प्रभावित करती है। राजसमन्द झील मेवाड़ क्षेत्र की पाँच प्रमुख झीलों में से एक है। उदयपुर शहर के उत्तर में 66 कि.मी. दूर यह झील राजसमन्द शहर एवं कांकरोली के बीच में स्थित है।

बड़ी तालाब (जनादे सागर) : बड़ी गांव के पास स्थित यह तालाब उदयपुर वासियों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। इसका नामकरण महाराणा राजसिंह की माता जनादे कर्मेति (जन देवी) के नाम पर जनासागर किया गया है। यह उदयपुर से 10 कि.मी. दूर स्थित है। इसका निर्माण 1664 ई. में महाराणा राजसिंह द्वारा 6 लाख रुपये खर्च कर करवाया गया। इस झील की पाल 180 मीटर लम्बी एवं 18 मीटर चौड़ी है। पाल पर तीन कलात्मक छतरियाँ हैं। यह एक अच्छा पिकनिक स्पॉट है।

बेणेश्वर मेला

शहीद स्मारक एवं शौर्य दीर्घा

श्री केसरियानाथजी

बेणेश्वर मेला : यह राजस्थान के डूंगरपुर जिले में लगने वाला आदिवासियों का लोकप्रिय मेला है। यह मेला फरवरी में बेणेश्वर में लगता है। बेणेश्वर उदयपुर से 116.5 कि.मी. की दूरी पर सोम, माही एवं जाखम नदियों द्वारा निर्मित एक छोटे से टापू पर स्थित है। यह मेला आदिवासियों का सबसे बड़ा मेला है। बेणेश्वर का अर्थ होता है वेणी–आवृतमाला। नदी की वेणी में आवृत महेश्वर ही बेणेश्वर महादेव हैं, जो डूंगरपुर में शिव मन्दिर में अवस्थित शिवलिंग से लिया गया है। यह एक धार्मिक मेला है जिसमें सरल व पारम्परिक रीति–रिवाजों का पालन होता है। मध्यप्रदेश व गुजरात के पड़ौसी राज्यों से आदिवासी भीलों के समूह यहाँ आते हैं तथा भगवान शिव की पूजा करते हैं।

शहीद स्मारक एवं शौर्य दीर्घा : नगर निगम, उदपुर के परिसर में स्थित शहीद स्मारक एवं शौर्य दीर्घा का निर्माण मेवाड़ी शैली में किया गया है। इसमें सन् 1857 ई. से 1947 ई. के मध्य देश में स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले एवं स्वतंत्रता के लिए भारत माता के चरणों में अपना जीवन अर्पित करने वाले 34 महापुरुषों की प्रतिमाएँ स्थापित की गई है। शहीद स्मारक का निर्माण भारत के शहीदों को श्रद्धा–सुमन अर्पित करने के लिए बनाया गया है। इसी स्मारक में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की प्रतिमा भी स्थापित की गई है। इसके चारों ओर सुन्दर पार्क विकसित किया गया है।

श्री केशरियानाथजी : श्री केशरियानाथजी तीर्थ के मन्दिर का इतिहास स्पष्ट है कि यह जैन मन्दिर है। अति प्राचीन होने के कारण कब निर्मित हुआ, इसका उल्लेख नहीं मिलता है। संपूर्ण मन्दिर, मूलगंभारा, गूढ़मंडप, नवचौकी, सभामंडप, भमती की बावन देवकूलिकाएं, शृंगार चौकी, शिखर एवं कोटबंधी कलारूपी रचना वाली है। मूलगंभारे में ऋषभदेव भगवान की 41 इंच ऊँची श्यामवर्ण की तेजस्वी चमत्कारी प्रतिमा विराजमान है। इस मन्दिर की पूजा पद्धति मेवाड़ महाराणा द्वारा जारी चार्ट संवत् 1982 के अनुसार की जाती है जो आज भी निरन्तर जारी है। श्रद्धालुओं द्वारा केसर अधिक चढ़ाने के कारण प्राचीनकाल से इस तीर्थ का नाम केशरियानाथजी विख्यात् है। मेवाड़ एवं वागड़ क्षेत्र के भील समुदाय की गहरी आस्था है तथा परमात्मा के पक्षाल को अति पवित्र मानते हैं तथा पक्षाल की एक बूँद लेने के बाद प्राण निकल जाए तो भी झूठ नहीं बोलते हैं। यह भारतवर्ष में एकमात्र प्राचीन जैन तीर्थ है, जिसमें सभी वर्ग के श्रद्धालुओं की आस्था एवं विश्वास है तथा सभी प्रचलित परम्परानुसार दर्शन एवं पूजा करते हैं। मेवाड़ के महाराणा स्वर्गीय श्री फतह सिंह जी अटूट श्रद्धा रखते थे। इसी श्रद्धा स्वरूप प्रतिमाजी पर हीरे जड़ित सोने की आंगी धारण करवायी जो आज भी धारण करवायी जाती है।

सुखाड़िया सर्कल

सुखाड़िया सर्कल : सुखाड़िया सर्कल उदयपुर के पंचवटी क्षेत्र में स्थित सबसे बड़ा सर्कल है। इसका निर्माण 1970 में हुआ था। इसका नामकरण राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया के नाम पर हुआ। यह एक सुन्दर स्थान है जहां पर हरे–भरे उद्यान के बीच एक जलाशय है। इस जलाशय के बीच में एक कृत्रिम झरना है। इसे तीन तश्तरियों को एक के ऊपर एक रखकर बनाया गया है। सबसे ऊपर सम्पन्नता की प्रतीक गेहूँ की एक बाली है। इस जलाशय में पर्यटक पैडल नौकायन का आनन्द उठाते हैं।

सहेलियों की बाड़ी

सहेलियों की बाड़ी : महाराणा संग्राम सिंह ने इस उद्यान को शाही महिलाओं के वन विहार के लिए 18वीं शताब्दी में बनवाया था। कहा जाता है कि राजा ने इस सुरम्य उद्यान को स्वयं तैयार करवाकर अपनी रानी को भेंट किया, जो शादी के बाद 48 सहेलियों के साथ यहाँ आई थी। फतहसागर झील के समीप स्थित यह स्थल खूबसूरत झरने, हरे–भरे लॉन, ध्वनि संवेदी फव्वारें और संगमरमर के काम के लिए विख्यात है।

सज्जनगढ़

सज्जनगढ़ : शहर के प्रत्येक स्थल से लुभाता यह पहाड़ी पर बना हुआ बहुत ही सुन्दर महल है। 1100 फीट की ऊँचाई पर बने इस महल को महाराणा सज्जन सिंह व फतह सिंह ने बनवाया था। उस समय में वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था कर एक बड़े जलाशय (टांका) में उसे एकत्र कर वर्षभर उसका उपयोग किया जाता था।

एकलिंगजी मन्दिर

एकलिंगजी मन्दिर : यह शिव मन्दिर उदयपुर के सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राचीन धार्मिक केन्द्रों में से एक है, जो उदयपुर शहर से 20 कि.मी. दूर स्थित है। यह माना जाता है कि इसे आचार्य विश्वस्वरूप ने 8वीं शताब्दी में बनवाया था। बाद में 15वीं शताब्दी में पुराने मन्दिर के स्थल पर ही वर्तमान मन्दिर परिसर का निर्माण गुहिल वंश, जिसे सिसोदिया वंश भी कहा जाता है, के राजाओं ने अपने राज्य के प्रमुख शासनकर्त्ता के रूप में करवाया था। मेवाड़ के महाराणा स्वयं को एकलिंगजी का दीवान मानकर ही राज्य चलाते थे। विस्तृत क्षेत्र में फैले इस मन्दिर परिसर में 108 मन्दिर हैं। परकोटे से घिरा मन्दिर परिसर संगमरमर एवं ग्रेनाइट से बना हुआ है। इसमें विस्तृत खंभों से युक्त बड़ा मण्डप है। पिरामिड़ के आकार की विशाल छत है। इसमें भगवान शिव की चतुर्मुखी प्रतिमा बनी हुई है।

जगदीश मन्दिर

जगदीश मन्दिर : यह मन्दिर सिटी पैलेस के पास स्थित है। महाराणा जगत सिंह प्रथम द्वारा इसका निर्माण करवाया गया। इसमें काले पत्थर की विष्णु भगवान की प्रतिमा स्थापित है। इसके अन्दर एक प्रशस्ति लगी हुई है जिसमें हल्दी घाटी युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय का वर्णन है।

शिल्पग्राम

शिल्पग्राम : यह फतहसागर के किनारे हवाला गांव के पास स्थित है। यह राजस्थान, महाराष्ट्र, गोवा व गुजरात के कलाकारों एवं हस्तशिल्पियों का संगम स्थल है। विविध कला आयोजनों के माध्यम से अपनी संस्कृति को जीवन्त करने का यह अनुपम केन्द्र है। यहाँ दिसम्बर में मेला आयोजित होता है।

आयड़ गंगु कुण्ड : आयड़ सभ्यता संग्रहालय के पास स्थित यह एक बड़ा कुण्ड है जिसके केन्द्र में छोटा शिव मन्दिर है। यहा मेवाड़ के पूर्व राज–परिवार की महासतियाँ भी है। स्नान व प्रार्थना करने की सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हैं। महाराणा अमर सिंह प्रथम पहले महाराणा थे, जिनका निधन उदयपुर में 1615 ई. में हुआ। इनके दादा महाराणा उदयसिंह की मृत्यु गोगुन्दा में हुई व इनके पिता महाराणा प्रताप का निधन चावण्ड में हुआ था।

मेवाड़ जैव विविधता उद्यान : यह पार्क उदयपुर शहर से 10 कि.मी. दूर नाथद्वारा मार्ग पर अम्बेरी ग्राम के 165 हैक्टेयर वन क्षेत्र में फैला हुआ है। विविधता की दृष्टि से यह बहुत समृद्ध है। इसमें अनेक प्रकार के वृक्ष हैं। उनमें से कुछ तो 300 से 400 वर्ष पुराने हैं। इस पार्क में अनेक प्रकार की झाड़ियाँ, लताएं, शाक, घास व आर्किड देखे जा सकते हैं। यहाँ पर प्राणि जगत में विभिन्न प्रकार के स्तनधारी, पक्षी, रेंगने वाले जीव, कीट–पतंग आदि पाये जाते हैं। इस पार्क का विकास पर्यावरण एवं एडवेन्चर पर्यटन के रूप में भी किया गया है।

सिटी पैलेस : महाराणा उदयसिंह ने सन् 1553 ई. में उदयपुर शहर को बसाने के साथ ही सिटी पैलेस के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया, जिसे आगे के महाराणाओं ने 300 वर्षों तक जारी रखा। यह अपनी तरह का राजस्थान में सबसे बड़ा एवं इतिहास से परिपूर्ण शाही परिसर माना जाता है। शहर को स्थापित करना व पैलेस परिसर के निर्माण कार्य को अलग–अलग करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि यहाँ पर महाराणा रहते भी थे तथा यहीं से वे अपने राज्य का संचालन भी करते थे। इस पैलेस परिसर में 11 महल हैं।

गुलाब बाग : शहर के हृदय स्थल में स्थित महाराणा सज्जन सिंह द्वारा निर्मित इस बाग में विविध गुलाब प्रजातियाँ, दुर्लभ पुस्तकों से युक्त सरस्वती पुस्तकालय तथा बच्चों के लिए रेल यहाँ के मुख्य आकर्षण है। अब यहाँ बर्ड पार्क भी विकसित किया जा रहा है।

प्रताप गौरव केन्द्र : मेवाड़ तथा महाराणा प्रताप के इतिहास को यदि हम जीवन्त देखना चाहते हैं तो प्रताप गौरव केन्द्र का भ्रमण अवश्य करना चाहिये। धातु की विश्व की सबसे बड़ी 57 फीट ऊँची महाराणा प्रताप की प्रतिमा, मेवाड़ पर आधे घंटे की फिल्म, यांत्रिक दीर्घा, भारत दर्शन, लाईट एण्ड साउण्ड शो तथा विविध आकर्षण न केवल हमें भरपूर जानकारी देंगे अपितु प्रेरित भी करेंगे।

कुम्भलगढ़ दुर्ग : 1458 ई. में कुम्भलगढ़ का निर्माण महाराणा कुम्भा ने करवाया था। इसी दुर्ग में 1468 ई. में कुम्भा का स्वर्गवास हो गया था। 1537 ई. में पन्नाधाय द्वारा बचाकर लाए उदयसिंह को यहीं पर महाराणा बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यहीं पर उनकी महारानी जयन्ती देवी ने 9 मई, 1540 को महाराणा प्रताप को जन्म दिया।

मेवाड़ की महान् विभूतियों को शत्-शत् नमन

पं. जनार्दन राय नागर : इनका जन्म 16 जून, 1911 को ऐतिहासिक शहर उदयपुर, मेवाड़ की तत्कालीन रियासत की राजधानी में हुआ। पं. नागर अपनी माँ श्रीमती विजयलक्ष्मी (विजया माँ) से बहुत प्रभावित रहे, जो कि एक क्रांतिकारी विचारों वाली दबंग, साहसी, प्रगतिशील एवं निडर महिला थी। वह एक स्वतंत्रता सैनानी थी जिन्होंने मेवाड़ की महिलाओं में मुक्ति की भावना को बढ़ाने में

महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इनके पिता पं. प्राणलाल जी मेवाड़ दरबार में एक जिम्मेदार पद पर आसीन थे। स्वतंत्रता का आन्दोलन अपने चरम पर था। लोग गिरफ्तारियाँ दे रहे थे। स्वतंत्रता संग्राम में बढ़–चढ़कर भाग ले रहे थे और औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सामूहिक प्रतिरोध का निर्माण कर रहे थे। इस तरह की गतिविधियों के प्रति एक युवा पं. नागर का आकर्षित होना स्वाभाविक था। उन्होंने अपने लेखन से जागरूकता फैलाने और संदेश प्रसारित कर स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों में भाग लिया। उनका मुख्य ध्येय जन साधारण को शिक्षित कर राष्ट्रीय मुख्यधारा में भाग लेने हेतु सक्षम बनाना था। एक प्रबुद्ध ऋषि की तरह उन्होंने भी भारत के भविष्य का निर्माण करने की क्षमता के तहत अपने निजी सुखों और परिवार की चिंताओं को त्याग कर स्वयं को जनता की भलाई के लिए समर्पित कर दिया।

आपने कविताओं, लघुकथाओं, महाकाव्य, उपन्यास आदि का शंकराचार्य के रूप में ज्ञान का एक बड़ा पुल बनाया। पतित का स्वर्ग, उदित इतियारा, अकार्य चाणक्यं, वैवस्वत मनु और अमृतम् गमायंह उनके द्वारा रचित नाटक के साथ उन्होंने 200 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी कहानियों के दो संग्रह 'जनार्दन राय नागर की कहानी' भाग–1 एवं भाग–2 राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित किये गये। इसके अतिरिक्त शाला में बालक, घर में बालक और प्राथमिक–माध्यमिक शिक्षा, योजना पुस्तकें उनके महत्त्वपूर्ण विचारों से युक्त अनमोल रचनाएँ हैं। इनका उपन्यास 'जगतगुरु शंकराचार्य' 10 भागों एवं 5000 पृष्ठों में प्रकाशित है। अन्य कृति 'रामराज्य' हिन्दी साहित्य का अत्यन्त उपयोगी खजाना है।

लेखन में उनकी रुचि का मुख्य क्षेत्र दर्शन था। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य तय किया कि वह शिक्षा के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के लिए कार्य करेंगे। वे दक्षिणी राजस्थान के दूर–दराज क्षेत्रों में जनजातियों के बीच गये तथा उन्हें ऐसे समय में शिक्षित करने के लिए संस्थान प्रारम्भ किया जब कोई भी परिवहन का साधन उपलब्ध नहीं था। उदयपुर जिले की झाड़ोल तहसील में लुरों का फला और बदराना जैसे बहुत छोटे गाँवों को शिक्षा के केन्द्र के रूप में विकसित किया। ऐसे बच्चों, जिनके अभिभावक नहीं रहे या आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी, के लिए कानपुर, टीड़ी, साकरोदा, बेदला एवं नाई गांवों में हॉस्टल बनाये गये।

रोजगार आमुख वर्ग, मजदूर वर्ग के लोगों को शिक्षा पूर्ण कराने के उद्देश्य से सायंकालीन कक्षा की शुरूआत की गयी। शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षाविद् एवं प्रशासनिक अधिकारियों को उच्च शिक्षा के क्षेत्र में सायंकालीन कॉलेज के प्रयास को आसानी से स्वीकार नहीं किया गया, उनका मानना था कि सायंकालीन कॉलेज से उच्च शिक्षा कैसे दी जा सकती है? इस तरह की आलोचना एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आप स्थिर एवं समभाव बने रहे।

आप एक दूरदर्शी थे। आपने 1948 में विश्वविद्यालय के रूप में राजस्थान विद्यापीठ का उपयोग संस्था के नामकरण के रूप में करना प्रारम्भ कर दिया था। विश्वविद्यालय की स्थिति प्राप्त करने में संस्था को 40 वर्ष लग गये।

आपने प्रिन्टिंग प्रेस, कृषि फार्म, डेयरी फार्म, कॉलेजो, स्कूलों, विज्ञान मन्दिर, सामुदायिक केन्द्र, समाचार पत्र, मीडिया सेन्टर, सहकारी स्टोर, औषधालय, कैफेटेरिया और मोबाइल लाईब्रेरी के साथ संस्थान अपने आप में एक कम्यून था। यह व्यापक दृष्टि किसी भी सामान्य व्यक्ति में संभव नहीं है। इस महान प्रतिभा ने 15 अगस्त, 1997 को उदयपुर में 88 वर्ष की आयु में इस दुनिया से विदा ले ली।

आज उनके नाम से एक डीम्ड विश्वविद्यालय संचालित है जिसे उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की तर्ज पर बनाने की परिकल्पना की थी। आशा है कि यह विश्वविद्यालय उनकी दृष्टि और मिशन को उनकी तार्किक परिणति तक ले जायेगा, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धा एवं श्रद्धांजलि होगी।

डॉ. मोहन सिंह मेहता : समाजसेवी, शिक्षाविद् एवं कुशल प्रशासक डॉ. मोहन सिंह जी मेहता का जन्म भीलवाड़ा (राज.) में 20 अप्रेल, 1895 को श्री जीवन सिंह जी मेहता के यहाँ हुआ। आपने आगरा कॉलेज से बी.ए. (1916), इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. (अर्थशास्त्र) (1918), एल.एल.बी. (1919), पीएचडी लन्दन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स (1927)

तथा मिडिल टेम्पल में 1927 में बैरिस्टर–एट–लॉ में प्रवेश किया। उन्होंने अपना सेवाकाल व्याख्याता के रूप में आगरा कॉलेज, आगरा एवं गवर्नमेन्ट कॉलेज अजमेर में आरम्भ किया।

तत्पश्चात् वे मुख्यालय आयुक्त, सेवा समिति बॉय स्काउट एसोसिएशन के बाद मेवाड़ राज्य प्रशासन में राजस्व अधिकारी (1922–28), मुख्य राजस्व अधिकारी (1928–1936), मुख्यमंत्री बाँसवाड़ा राज्य (1937–40), शिक्षा मंत्री मेवाड़ (1940–44), वित्त व शिक्षा मंत्री (1946–48), सदस्य, भारतीय विधानसभा के सदस्य (1946–47) रहे। आप नीदरलैण्ड में भारत के राजदूत (1949–51), पाकिस्तान में उच्चायुक्त (1951–55), स्विट्जरलैण्ड, ऑस्ट्रिया और वेटिकन में राजदूत (1955–58), सदस्य भारतीय प्रतिनिधि मंडल, संयुक्त राष्ट्र महासभा (1959) एवं कुलपति, राजस्थान विश्वविद्यालय (1960–66) रहे।

उन्होंने 1926 में पेरिस में आयोजित दो दिवसीय विश्व कॉंग्रेस ऑन सेटलमेन्ट्स सम्मेलन में भाग लिया। युगोस्लाविया में विश्व छात्र ईसाई आन्दोलन के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन (1926) एवं कनाड़ा की शिक्षा पर आयोजित गैर–अधिकारिक राष्ट्रीय सम्मेलन (1962) में भाग लिया।

सामाजिक और शैक्षणिक संस्थान की स्थापना में संस्थापक अध्यक्ष के रूप में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। 'विद्याभवन' एक प्रगतिशील सह–शिक्षा परिसर एवं 'सेवा–मन्दिर' नाम से समाज सेवा और ग्रामीण विकास केन्द्र की स्थापना कर उन्हें सक्रियता एवं ख्याति प्रदान करने में इनका बहुमूल्य योगदान रहा है। मेवाड़ में सामाजिक उन्नयन क्षेत्र में इनका सराहनीय योगदान रहा है।

विद्याभवन स्कूल में चरित्र निर्माण, सामाजिक दायित्व एवं प्रकृति व ग्रामीण परिवेश के प्रति संवेदशीलता के आदर्शों पर ध्यान केन्द्रित करने एवं युवाओं को जिम्मेदार नागरिक बनाने के दृढ़ संकल्प की भावना को प्रेरित करने में इनका प्रयास पूर्णरूपेण सफल रहा। डॉ. मेहता के लिए सेवा मन्दिर इन्हीं चिंताओं और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में नागरिकता के विचारों का विस्तार था।

आपको मेवाड़ राज्य सरकार ने विशिष्ट सेवा के लिए पुरस्कार एवं खिताब (1940 व 1945), राष्ट्रीय पुरस्कार पद्मविभूषण (1969), विलियम ट्रॉली अवार्ड सिरैक्यूज़ यूनिवर्सिटी, यू.एस. (1969), यूनेस्को संघों (1979) के भारतीय राष्ट्रीय महासंघ का पुरस्कार, एशियार्ड और दक्षिण प्रशान्त ब्यूरो ऑफ एडल्ट एजुकेशन (1972) का विशेष पुरस्कार, जीडी पारिख मेमोरियल अवार्ड (1980), इंडियन यूनिवर्सिटी एसोसिएशन फोर कन्टीन्यूइंग एजुकेशन, नई दिल्ली (1985) द्वारा सम्मानित किया गया है। इसके अतिरिक्त उदयपुर विश्वविद्यालय (1976), राजस्थान विश्वविद्यालय (1982) में डॉक्टर ऑफ लिटरेचर (ऑनोरिस कोसा) से भी इन्हें सम्मानित किया गया है।

डॉ दौलत सिंह कोठारी : भारतीय रक्षा विज्ञान के जनक विश्वविख्यात् वैज्ञानिक डॉ. दौलत सिंह कोठारी ने जीवन पर्यन्त विज्ञान और अहिंसा के योग पर बल दिया। उनका व्यक्तित्व प्रतिभा, सादगी और निस्पृहता का त्रिवेणी संगम था। डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के अनुसार भारत के पुनर्निर्माण में जिन महान वैज्ञानिकों की अमूल्य भूमिका रही, उनमें डॉ. डी.एस. कोठारी, डॉ. विक्रम साराभाई जैन और होमी जहांगीर भाभा का अवदान ऐतिहासिक महत्त्व का है। डॉ. कोठारी महान वैज्ञानिक होने के साथ ही एक शिक्षाविद्, भारतीय भाषाओं के पैरोकार, आध्यात्मिक चिंतक और श्रेष्ठ श्रावक भी थे।

दिनांक 6 जुलाई 1906 को उदयपुर (मेवाड़ राजस्थान) में एक साधारण जैन परिवार में जन्मे दौलत सिंह के पिता का मात्र 38 वर्ष की आयु में देहांत हो गया था। उनकी धर्मनिष्ठ माताश्री ने उनको उच्च कोटि के संस्कार दिये। उन्होंने अपने माता–पिता के गुणों तथा उपकारों को हमेशा याद रखा। श्री दौलत सिंह जब केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे थे तब वहां के प्रोफेसर अर्नेस्ट रदरफोर्ड ने दिल्ली विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति को लिखा था, मैं निःसंकोच कोठारी को केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त करना चाहता हूँ। लेकिन यह युवक पढ़ाई पूरी करके तुरंत अपने देश लौट जाना चाहता है। यह डॉ. कोठारी का अथाह देश प्रेम ही था कि उनकी योग्यता का लाभ भारत को मिला। उन्होंने जो भी कार्य किया, उसे पूर्ण लगन, मेहनत और ईमानदारी के साथ किया। भारत सरकार ने उनकी निष्ठापूर्ण लोकसेवा के लिए उन्हें 1962 में पदमश्री और विज्ञान के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिये 1973 में पदम विभूषण से सम्मानित किया।

भारत के रक्षा मंत्री रहे कृष्ण मेनन के एक बार कहा था कि यदि डॉ. कोठारी को सिर्फ विज्ञान के क्षेत्र में ही रहने दिया जाता तो वे नोबेल पुरस्कार भी प्राप्त करते। उनकी असाधारण प्रतिभा और उपलब्धियां उस श्रेणी या उससे भी बढ़कर थी, वैसे भी उनका आज भी विज्ञान, रक्षा और शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही सम्मान है। दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, रक्षा मंत्रालय, भारतीय रक्षा अनुसंधान संगठन आदि जिस किसी संस्थान या निकाय से वे जुड़े उसे उन्होंने अपनी निष्ठा, योग्यता और दूरदर्शिता से असीम ऊँचाई और गौरव प्रदान किया। यही कारण है कि रक्षा वैज्ञानिक डॉ. ए. नागरत्नम ने भारत में 1948 से 1961 तक की अवधि को रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में "कोठारी युग" की संज्ञा दी।

विश्वविद्यालयों की तत्कालीन शांत पृष्ठभूमि से सम्पन्न डॉ. कोठारी ने अपने मधुर स्वभाव और विनयशीलता से जल, थल और वायुसेना तीनों के ही प्रमुखों के साथ अच्छा संवाद, स्थापित कर लिया था। रक्षा मंत्रालय के अधिकारी और तीनों सेनाध्यक्ष डॉ. कोठारी के विस्तृत ज्ञान से बेहद प्रभावित थे। भारतीय संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य मास्टर बलवंत सिंह मेहता के अनुसार 1971 के भारत पाक युद्ध में भारत की विजय में डॉ. कोठारी की रणनीति का बड़ा योगदान था। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अगस्त 1945 में अमेरिका ने जापान के नागासाकी और हिरोशिमा पर अणुबम बरसाकर विनाश लीला रची। उससे डॉ. कोठारी बहुत दुःखी हुए। तब विज्ञान के हिंसक उपयोग को रोकने की अपील के रूप में उन्होंने दो व्याख्यान दिये, जिनमें से एक सामान्यजन के लिए, दूसरा सैनिक समुदाय के लिए था। उसके बाद अणुबम के खतरों से आगाह करने के लिये उन्होंने अंग्रेजी में एक किताब लिखी– "न्यूक्लिमर एक्सप्लोजंस एंड देयर इफैक्टस" (परमाणु विस्फोट और उनके प्रभाव)। इस किताब का रूसी, जर्मनी और जापानी भाषाओं में अनुवाद हुआ। यह किताब आज भी विज्ञान, वैज्ञानिकों एवं बारूद के ढेर पर खड़ी दुनिया को अहिंसा की राह दिखाती है। वे बार–बार परमाणु आयुधों के खतरों से सावधान करते थे। उनका मानना था कि अहिंसा के बगैर विज्ञान दिशाहीन हो जाता है। विज्ञान का उपयोग अहिंसा को व्यापक बनाने और मानवता के कल्याण के लिए किया जाना चाहिए।

उनकी दिनचर्या सहज व सधी हुई थी। वे कभी अस्वस्थ नहीं हुए। उन्हें कभी अस्पताल नहीं जाना पड़ा। उन्हें अपनी शुद्ध शाकाहारी जीवनशैली पर गर्व था। केम्ब्रिज प्रवास के दौरान कई व्यक्तियों ने अपने खान–पान की मर्यादा तोड़ दी थी, लेकिन डॉ. कोठारी ने कभी भी सामिष भोजन को भाव से भी नहीं चाहा। वे दूसरों को भी शाकाहार ही ग्रहण करने की प्रेरणा देते थे।

उनका मानना था कि मानव के लिए शाकाहार, स्वाभाविक, निरापद और करुणामय आहार है। अपरिग्रह के जीवंत प्रतिमान डॉ. कोठारी ने जब दिल्ली विश्वविद्यालय और दिल्ली छोड़ा तो दो बेग और दो सूटकेस में उनका सारा सामान समा गया। दिनचर्या में वे प्रातः जल्दी उठकर माला फेरते, ध्यान और स्वाध्याय करते थे। सुबह नौ बजे तक मौन रखते थे। यदि कभी सुबह 6 बजे उन्हें प्रवास पर जाना होता तो वे और उनकी पत्नी साढ़े तीन बजे ही उठ जाते और सारे नित्य नियम पूरे करके ही घर से प्रस्थान करते थे।

डॉ. कोठारी के चिकित्सक पुत्र डॉ. ललित ने एक संस्मरण में बताया कि जीवन की सांध्य वेला में एक बार उन्होंने पिताजी को कोई व्याधि न होते हुए भी शारीरिक जांच के लिए कहा तो डॉ. कोठारी ने कहां "तुम्हे समझना चाहिए कि अब मेरे लिये कोई कार्य करना शेष नहीं है।'

दिनांक 14 फरवरी 1993 को जयपुर में भारत के महान सपूत डॉ. दौलत सिंह कोठारी निद्रावस्था में ही चिरनिद्रा में लीन हो गये। उस दिन उनके सिरहाने भक्तामर स्रोत की पुस्तक और गीता की प्रति रखी हुई मिली थी। ऋषि तुल्य वैज्ञानिक डॉ. कोठारी का उज्ज्वल व्यक्तित्व और कालजयी कृतित्व आज भी प्रेरणा देता है।

प्रताप स्मारक–मोती मगरी : महाराणा प्रताप की वीरता, बलिदान और उनके अदम्य साहस को कभी नहीं भुलाया जा सकता है और न ही उनका साथ देने वाले उन रणबांकुरों को जिन्होंने हल्दीघाटी के युद्ध में माटी के मान के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। प्रताप का साथ देने वाले हर सूरमा में एक सुपर हीरो की तरह अनूठे गुण थे। उनके इन्हीं खास गुणों के कारण ही वे प्रताप की सेना में विशेष स्थान रखते थे। ये सभी हमारे प्रेरणास्रोत रहे। इनकी वीरता एवं गुणों को सदियों तक संजोये रखने के लिए प्रताप स्मारक की स्थापना की गयी। यह स्मारक फतहसागर के किनारे मोती मगरी पर स्थित है। इस पहाड़ी के सबसे ऊपर महाराणा प्रताप की अपने प्रिय घोड़े चेतक पर बनी एक प्रभावशाली कांस्य प्रतिमा स्थापित है।

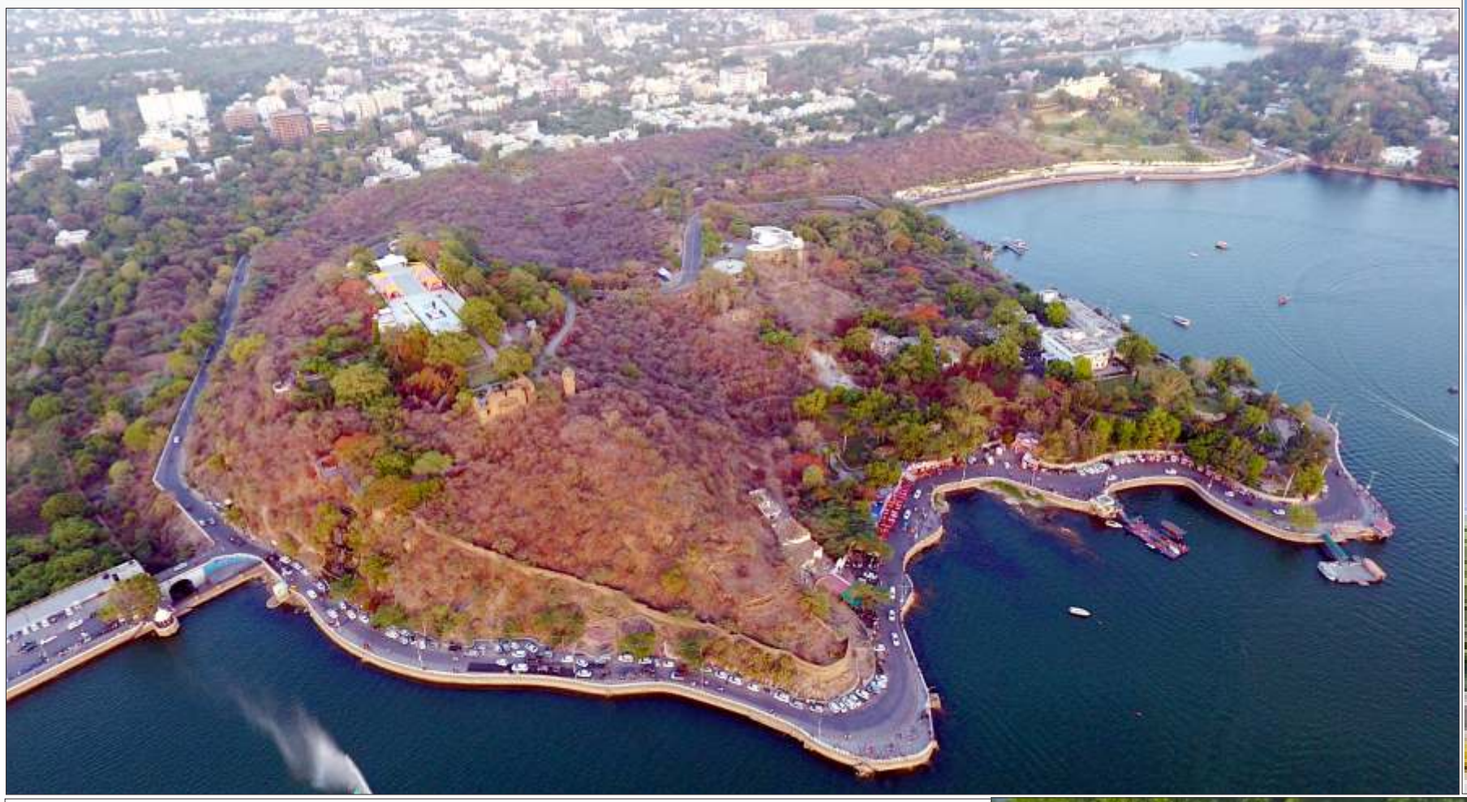

महाराणा प्रताप (1572–97 ईस्वी) : महाराणा प्रताप चित्तौड़गढ़ राजवंश के सबसे प्रसिद्ध एवं महान् पुत्रों में से एक थे। वे अपने जीवनकाल में ही ख्यातिप्राप्त व्यक्ति बन गये। उनके कर्मों की चमक, उनके तेजस्वी व्यक्तित्व का आदर, उनके संघर्ष और बलिदानों का प्रभाव समय बीतने के साथ कभी भी कम नहीं हुआ। उनका नाम 'आजादी का दिवाना' का पर्याय बन गया। वे प्रतापी होने के साथ ही युद्ध के महान् सेनापति थे। उनका ऊँचा ललाट, विशिष्ट मूँछे एवं दीप्तिमान आँखें, उनके भीतर समाहित वृहद् ज्वाला एवं दृढ़ संकल्प को परिलक्षित करती थी।

20 फरवरी, 1572 ईस्वी में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद महाराणा प्रताप मेवाड़ के सिंहासन पर आरूढ़ हुए। मेवाड़ का सिंहासन उनके लिए सुखदायक एवं परिस्थिति अनुकूल नहीं था। मुगलों ने पहले ही चित्तौड़ और माण्डलगढ़ पर कब्जा कर लिया था। अकबर वास्तव में मेवाड़ के पूरे क्षेत्र को जीतकर राणा को उनकी पराधीनता स्वीकार करवाना चाहता था। अतः अकबर व्यक्तिगत रूप से 1576 ई. में अजमेर पहुँचा और मानसिंह को सेना का सर्वोच्च कमांडर–इन–चीफ बनाया। महाराणा प्रताप ने अकबर की अवहेलना जारी रखी और 18 जून, 1576 को हल्दीघाटी में मुगल सेना से युद्ध हुआ। युद्ध एक गतिरोध में समाप्त हो गया और महाराणा प्रताप एवं उनके अनुयायी चावण्ड के पास मेवाड़ की उबड़–खाबड़ पहाड़ियों में चले गये, जहाँ से वे आगे के 20 वर्षों तक गुरिल्ला युद्ध पद्धति के माध्यम से मुगलों को परेशान करते रहे।

महाराणा प्रताप ने अपने वंशजों को संकल्प दिलाया कि वे चित्तौड़ पर विजयी होने तक, न तो बिस्तर पर सोयेंगे, न ही महलों में रहेंगे और न ही धातु के बर्तनों का उपयोग करेंगे। आदिवासी लोग, विशेष रूप से भील, राणा के आस–पास थे। दो वर्ष के भीतर ही राणा प्रताप ने चित्तौड़ और माण्डलगढ़ को छोड़कर लगभग पूरे मेवाड़ पर कब्जा कर लिया। यद्यपि महाराणा प्रताप मुसलमानों को सफलतापूर्वक पराजित करने में सक्षम नहीं थे, लेकिन मुस्लिम शासन में राजपूत प्रतिरोध की गाथा 17वीं शताब्दी तक जारी रही। 1597 ईस्वी में महाराणा प्रताप की मृत्यु हो गयी। जब उनकी मृत्यु की खबर सम्राट अकबर तक पहुँची, तो यह कहा जाता है कि सम्राट की आँखों में आँसू थे और उन्होंने अपने दरबारी कवि को अपने वीर शत्रु के सम्मान में एक कविता लिखने का आदेश दिया। उनकी मृत्यु के साथ ही लोगों को यह महसूस हुआ कि हिन्दुओं का सूर्य अस्त हो गया है। महाराणा प्रताप के सैन्य प्रबन्धन एवं अद्भुत युद्ध कौशल के साथ कृषि एवं आपदा प्रबन्धन, खान प्रबन्धन, अर्थ प्रबन्धन, धार्मिक स्थल रखरखाव एवं साहित्य रचना में भी विशेष योगदान रहा।

मोती मगरी : विहंगम् दृश्य

इस ऐतिहासिक स्मारक का निर्माण मेवाड़ के महाराजा प्रमुख महाराणा भूपाल सिंह ने करवाया था, जिन्होंने रुपये 1.10 लाख दान देकर यह कांस्य प्रतिमा प्राप्त की थी। प्रताप की प्रतिमा के गुम्बद पर चित्रण करते हुए चार काँसे के पैनल हैं, जिन पर हल्दीघाटी का युद्ध, उनके प्रिय घोड़े चेतक की मृत्यु, प्रताप के जीवन की महत्वपूर्ण तिथियाँ, मेवाड़ के सिसोदिया घराने के प्रतीक स्वर्णिम सूर्य देवता अंकित है। यहाँ से पुराने मोती महल पैलेस के खण्डहर भी देखें जा सकते हैं, जिसे महाराणा उदयसिंह ने बनवाया था। स्मारक में महाराणा प्रताप के चार करीबी सहयोगियों – भामाशाह, हकीम खान सूरी, भीलू राणा और झाला मान की सुन्दर प्रतिमाएँ स्थापित हैं। भामाशाह ही थे, जिन्होंने संकट के समय में राणा प्रताप को धन देकर अपने देश को बचाया। हकीम खान सूरी एक महान् सेनापति थे, जो हल्दीघाटी के युद्ध में अपने देश के लिए लड़ते हुए शहीद हो गये तथा भीलू राणा प्रताप की सेना के भील सरदार थे। राणा प्रताप ने हल्दीघाटी के युद्ध में उन्हें अपनी सेना के पार्श्वभाग के प्रभारी के रूप में चुना। झाला मान सिंह वह व्यक्ति थे जिन्होंने हल्दीघाटी के युद्ध में राणा प्रताप को बचाया था। उन्होंने राणा के शाही प्रतीक चिह्न को छिन लिया एवं उनके जीवन को बचाने के लिए इसे अपने सिर पर रख दिया। इन मूर्तियों के अलावा परिसर में नायकों का हॉल भी है, जिसे ''वीर भवन'' कहा जाता है। यह वास्तुकला की विशिष्ट मेवाड़ शैली में निर्मित एक भव्य इमारत है, जिसमें मेवाड़ के इतिहास को गौरवान्वित करने वाले नायकों के जीवन वृतान्त के चित्र बने हुए हैं।

महाराणा भगवत सिंह मेवाड़ ने स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् इस स्मारक को पब्लिक ट्रस्ट के सहयोग से मूर्त रूप दिया। वर्तमान में यह महाराणा प्रताप स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित है। मोती मगरी का संपूर्ण परिसर सघन वृक्षों से आच्छादित है।

तीर-कमान थामे मुगलों से ली थी टक्कर-भीलूराणा पूँजा

राणा का पूरा नाम भीलू राणा पूंजा सोलंकी था। मेवाड़ के भोमट संभाग के ओगणा–पानरवा क्षेत्र के भील समुदाय के मुखिया थे। महाराणा प्रताप ने उन्हें साहसी व देशप्रेमी भावना का उपयुक्त व्यक्ति पाकर हल्दीघाटी के युद्ध (जून 1576) में चन्दावल (पृष्ठभाग) के सैनिक विभाग का संचालक बनाया। उनकी भील सेना लाठियाँ, तीर–धनुष

भाटे और गोफन चलाने में माहिर थी। उन्होंने अपने भीलों के दल को घाटी की छोटी–छोटी पहाड़ियों पर तैनात किया। वहाँ से उन्होंने उस स्थान जिसे अब बादशाह बाग तथा रक्त तलाई कहते हैं, के भीषण रण–स्थलों में मुगल पक्ष पर सफल हमले किये और जब शत्रुदल लौट रहा था तो उसकी रसद को लूटा एवं रणनीति की नाकाबन्दी से उनके आक्रमणों को विफल कर दिया। सेना में घायलों की मरहम पट्टी करने का दायित्व भी उनका ही था।

हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् भी दस वर्ष तक मुगलों के हमले मेवाड़ पर होते रहे, उन्हें सतत् विफल करने का श्रेय पूँजा को जाता है जिसने ''गुरिल्ला युद्ध प्रणाली'' से शत्रुओं को नीचा दिखाया। वे जीवन पर्यन्त प्रताप के साथी रहे और प्रताप को भी उसकी देशभक्ति पर गर्व था। देश रक्षार्थ किये गये उसके आत्मोत्सर्ग के सम्मान में भीलों के प्रतिनिधि के रूप में पूँजा की आकृति को मेवाड़ के राज्य चिह्न पर अंकित किया जाता रहा है।

महाराणा को समर्पित कर दी थी अपनी जमा पूँजी-दानवीर भामाशाह

भामाशाह बाल्यकाल से मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप के मित्र, सहयोगी एवं विश्वासपात्र सलाहकार थे। मातृभूमि के प्रति अगाध प्रेम, बेमिसाल दानवीर एवं त्यागी पुरुष के रूप में भामाशाह का नाम इतिहास में अमर है। आत्मसम्मान एवं त्याग की यही भावना उन्हें स्वदेश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देशभक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है। भामाशाह का जन्म राजस्थान के मेवाड़ राज्य में 29 अप्रेल, 1547

को जैन धर्म को मानने वाले परिवार में हुआ। भामाशाह का निष्ठापूर्ण सहयोग महाराणा प्रताप के जीवन में महत्वपूर्ण और निर्णायक साबित हुआ। महाराणा प्रताप को दी गई उनकी हरसंभव सहायता ने मेवाड़ के आत्म–सम्मान एवं संघर्ष को नई दिशा दी।

अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ एवं अपने अस्तित्व को बनाये रखने के प्रयास में निराश होकर जब महाराणा प्रताप अपने परिवार के साथ जंगलों में भटक रहे थे, तब भामाशाह ने अपनी सारी जमा पूँजी महाराणा प्रताप को समर्पित कर दी। हल्दीघाटी युद्ध के उपरान्त महाराणा प्रताप द्वारा सेना को पुनः संगठित करने के दौरान भामाशाह ने अपनी निजी संपत्ति में से इतना धन दान दिया था कि जिससे 25000 सैनिकों का बारह वर्ष तक निर्वाह हो सकता था। प्राप्त सहयोग से महाराणा में नया उत्साह उत्पन्न हुआ और उन्होंने पुनः सैन्य शक्ति संगठित कर मुगल शासकों को पराजित कर चित्तौड़ व मांडलगढ़ को छोड फिर से मेवाड़ राज्य प्राप्त किया। इस प्रकार भामाशाह एक बेमिसाल दानवीर एवं त्यागी पुरुष थे। आत्म–सम्मान एवं त्याग की यही भावना उन्हे स्वदेश, धर्म और संस्कृति की रक्षा करने वाले देशभक्त के रूप में शिखर पर स्थापित कर देती है। इस प्रकार अपरिग्रह को जीवन का मूलमंत्र मानकर संग्रहण की प्रवृत्ति से दूर रहने की चेतना जगाने में भामाशाह सदैव अग्रणी रहे। धन अर्पित करने वाले दानदाता को दानवीर ''**भामाशाह**'' कहकर स्मरण–वंदन किया जाता है। जैन महाविभूति **भामाशाह** के सम्मान में भारत सरकार द्वारा 31 दिसम्बर, 2000 को 3 रुपये का विशेष डाक टिकिट भी जारी किया गया।

महाराणा की मौत को अपने सिर पर लिया-झाला मान

वीरश्रेष्ठ झाला मान (बीदा), झाला मान सिंह और झाला मन्ना के नाम से भी जाने जाते हैं। ये उस झाला कुल से थे, जिसके पहले की दो पीढ़ियाँ महाराणा की जान बचाने के लिए काम आयी थी। ये झाड़ोल के थे और बाद में इनके वंशजों

को बड़ी सादड़ी में ठिकाना मिला। हल्दीघाटी के युद्ध में इनके वंश को अर्थात् झाला मान 'बीदा' को महाराणा प्रताप की रक्षा करने का अवसर मिला। प्रताप जब युद्ध में शत्रु सेना से घिर गये तो उनके हिस्से की मौत झाला मान ने अपने सिर पर ले ली। उन्हें मेवाड़ के राज्य चिह्न छत्र धारण कर सेनापतित्व करने का मौका मिला। मैं प्रताप हूँ, चिल्लाते हुए शत्रु सेना पर टूट पड़े। दूसरी तरफ से महाराणा प्रताप को सुरक्षित निकाल लिया गया। झाला मान स्वामी भक्ति एवं वीरों का उच्च आदर्श प्रस्तुत करते हुए रक्त ताल में सोमवार ता. 18 जून, 1576 ई. की दोपहर को वीरगति को प्राप्त हुए।

मर कर भी नहीं छूटी हाथ से तलवार-हकीम खाँ सूरी

महाराणा प्रताप के लिए अकबर की सेना के सामने खड़ा हो गया था यह महान् पठान। हकीम खाँ सूरी अफगानी मुस्लिम पठान थे जो महाराणा प्रताप के तोपखाने के प्रमुख हुआ करते थे। हकीम खाँ सूरी हाथ में हमेशा तलवार थामें रहते थे। हल्दीघाटी के युद्ध में हकीम खाँ सूरी हर वक्त महाराणा प्रताप

के साथ खड़े रहे तथा प्रताप की सेना को कई दाँव–पेंच भी सिखाएँ। प्रताप का इन पर इतना यकीन था कि सेना में हरावल का एक मोर्चा उन्हें दे दिया। उन्होंने जो शौर्य दिखाया था उसके बारे में मुल्ला कादिर बदांयूनी ने लिखा है – ''उन्होंने कयामत ढ़ा दी थी, वे 350 मुसलमान सैनिकों के साथ हल्दीघाटी में दुश्मन पर टूट पड़े थे।'' हकीम खाँ कहते थे – ''मैं मर जाऊँगा लेकिन मेरे हाथ से तलवार नहीं छूटेगी।'' सचमुच जब इन्हें दफ़न किया तब भी उनके हाथ में तलवार थी। उन्होंने सैनिकों को लोहे के ''शिरप्राण'' पहनाकर सेना में नवाचार किया था। हल्दीघाटी के युद्ध के दौरान सेनापति हकीम खाँ का सिर धड़ से अलग हो गया, इसके बावजूद कुछ देर तक वे घोड़े पर योद्धा की तरह सवार रहे। मृत्यु के बाद हल्दीघाटी में जहाँ उनका धड़ गिरा, वहीं उनकी समाधि बनाने के साथ उन्हें अपनी तलवार के साथ ही दफ़नाया गया तथा उन्हें 'पीर' का दर्जा दिया गया। आज भी इस मज़ार पर मुस्लिम तथा हिन्दू समुदाय के लोग अपनी मन्नत पूरी होने के लिए माथा टेकते हैं। हकीम खाँ सूरी साम्प्रदायिक सौहार्द्र एवं स्वाभिमान के लिए महाराणा प्रताप की सेना में शामिल हुए थे।

मेवाड़ के लिए बहाया खून-रामशाह तोमर (तँवर)

रामशाह तोमर युद्धनीति के जानकार थे। वे ग्वालियर के राजा विक्रमादित्य के बेटे थे। बाबर के कब्जा करने पर मेवाड़ आ गये

थे। उस समय जब कई राजा मुगलों के झण्डे तले आ गये थे, तब ये ऐसे राष्ट्रवादी राजा सिद्ध हुए जो प्रताप के नेतृत्व में विश्वास करते थे। उन्होंने अपने 800 सैनिकों के साथ हल्दीघाटी का युद्ध लड़ा। महाराणा ने इन्हें मन्दसौर एवं बारां की जागीर दी। हल्दीघाटी युद्ध की रणनीति रचने का कार्य इनका ही था। प्रताप की सेना कम थी, जिस बात का वे ध्यान रखते थे। वे युद्ध विशारद थे तथा दुश्मन की सेना को जानते थे। प्रताप को आमने–सामने का युद्ध नहीं करने और दुश्मन को पहाड़ों के बीच लाकर युद्ध करने की सलाह दी। ये हरावल में अग्रिम मोर्चे पर इनके बेटे भवानी सिंह, प्रताप सिंह एवं शाहीवाहर के साथ लड़े और काम आये।

अन्य सम्मानित योद्धा : ऐतिहासिक पृष्ठों के अनुसार मानसिंह सोनगरा, डोड़िया भील सिंह, पुरोहित जगन्नाथ, रामा साधु, राठौड़ वीर, सौलंकी वीर आदि की भी मेवाड़ के लिए महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। वहीं चेतक घोड़े के योगदान को भी भुलाया नहीं जा सकता। इन सभी के अतिरिक्त मेवाड़ के उन हजारों वीर योद्धाओं जिन्होंने महाराणा प्रताप के हल्दीघाटी एवं गुरिल्ला युद्ध के साथ उनके प्रण को सफल बनाने में अंतिम समय तक साथ देकर इस पवित्र माटी के लिए बलिदान दिया, उन **सबको वन्दन–अभिनन्दन**।

मोती महल : महाराणा प्रताप की मूर्ति से कुछ ही दूरी पर मोती महल स्थित है जिसे महाराणा उदयसिंहजी द्वितीय ने अपने ज्येष्ठ पुत्र प्रतापसिंहजी के जन्म की खुशी में निर्माण करवाया था। वर्तमान में इस महल के खण्डहर विरासत के रूप में संरक्षित है तथा इस स्थान पर हर शाम को ''लाइट एण्ड साउण्ड शो'' का आयोजन किया जाता है जिसमें मेवाड़ के 900 वर्ष के इतिहास को दिखाया जाता है।

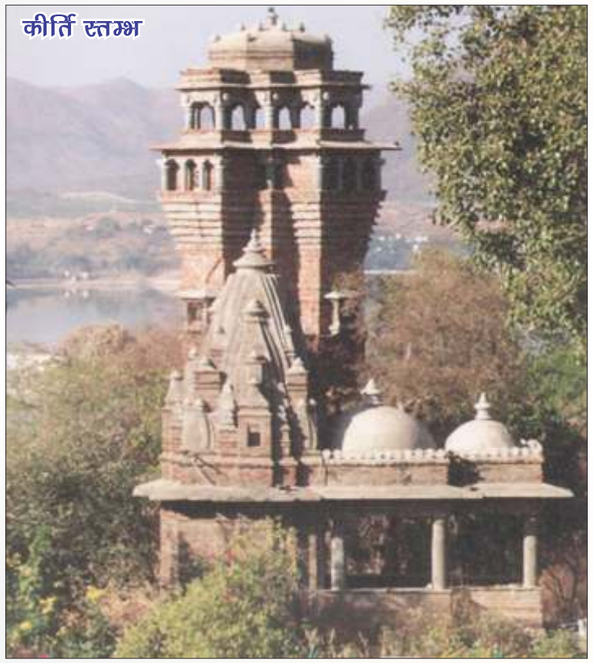

वीर भवन : यह वास्तुकला की विशिष्ट मेवाड़ शैली में निर्मित एक भव्य इमारत है जिसे संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया है। इसमें कई पुरानी पेन्टिंग्स, मेवाड़ के इतिहास को गौरवान्वित करने वाले सिसोदिया वंश के महाराणाओं के आदमकद चित्र, चित्तौड़ के दुर्ग का नमूना, हल्दीघाटी के युद्ध का चित्रण आदि मुख्य रूप से विद्यमान है। मोती मगरी पर एक धूप घड़ी भी है।

महाराणा प्रताप से जुड़े स्थल
जन्म स्थली : कुंभलगढ़
राजतिलक स्थल : गोगुन्दा
शस्त्रागार : मायरा की गुफा
निर्वाण स्थल : चावण्ड

महाराणा प्रताप जयन्ती : महाराणा प्रताप का जन्म तारीख के अनुसार 9 मई, 1540 (विक्रम संवत् 1597 के ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि) और मृत्यु 19 जनवरी, 1597 को हुई थी। मेवाड़ में तिथि के अनुसार जयन्ती मनाने की परम्परा है। तिथि के अनुसार प्रतिवर्ष महाराणा प्रताप जयन्ती ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाई जाती रही है।

MAHARANA PRATAP
Birth
9th May, 1540
Coronation
28th February, 1572
Battle of Haldighati
18th June, 1576
Death
19th January, 1597

''देश के महान् सपूत एवं वीर योद्धा महाराणा प्रताप को उनकी जयन्ती पर शत्–शत् नमन। उनकी जीवन गाथा साहस, शौर्य, स्वाभिमान और पराक्रम का प्रतीक है, जिससे देशवासियों को सदैव राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा मिलती रहेगी।''
–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

उदयपुर शहर के हरित क्षेत्र : महाराणा प्रताप स्मारक से शोभित पहाड़ी 'मोती मगरी' सघन वृक्षों की अपनी सम्पदा के कारण निश्चित रूप से उदयपुर शहर के लिए ऑक्सीजन का समृद्ध स्रोत है। इसके अतिरिक्त उदयपुर में वनस्पतियों की हरीतिमा से युक्त अन्य क्षेत्र भी हैं जो शहर को शुद्ध वातावरण प्रदान करते हैं। इनमें उदयपुर की 'हरित पट्टी' के रूप में प्रसिद्ध काफी बड़ा क्षेत्र कई शैक्षणिक संस्थाओं के अधीन हैं। इनमें पंचवटी के पास क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, उत्तर–पश्चिम रेलवे, उदयपुर सूरजपोल के समीप ''राजस्थान कृषि महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय'' की एक इकाई के हरित मैदान तथा नीमच माता पहाड़ी के पूर्व में स्थित 'विद्याभवन इंस्टीट्यूट' आदि प्रमुख हैं।

मोती मगरी पृष्ठभाग का सौन्दर्यीकरण : फतहसागर अपने पूर्ण भराव स्तर पर अपने भव्य स्वरूप के साथ जब ओवरफ्लो होता है एवं मोती मगरी के उत्तरी भाग से एक कृत्रिम झरना भी गिरता है, तब यह स्थान पर्यटकों एवं शहरवासियों के लिए बहुत लोकप्रिय हो जाता है। दूसरी ओर फतहसागर पाल एवं बम्बईया बाजार के मध्य एवं मोती मगरी के पश्चिमी ढ़लान पर स्थित क्षेत्र अभी तक अविकसित है। प्रताप स्मारक प्रशासन द्वारा इस क्षेत्र को भी दर्शनीय रूप में विकसित किया जाना चाहिये। मोती मगरी की ऊँची पहाड़ी पर चेतक पर आरूढ़ महाराणा प्रताप की प्रभावशाली कांस्य प्रतिमा तक पहुँचने के लिए इस छोर से एक और रास्ता पूर्ण सुरक्षा के मापदण्ड के साथ बनाया जाकर इस क्षेत्र को सुन्दर फूलों एवं रंगीन पौधों से सुसज्जित किया जाना चाहिये। इससे अधिकाधिक पर्यटक एवं शहरवासी इस स्मारक तक सुगमता से पहुँच सकेंगे।

विवेकानन्द पार्क : फतहसागर स्थित सर्किट हाउस के नीचे की तरफ बने पार्क में दस फीट ऊँची विवेकानन्द की प्रतिमा लगाई गई है। प्रतिमा का मुँह फतहसागर की तरफ रखा गया है। पार्क में पौधारोपण के साथ फाउण्टेन भी लगाया गया है। यह इस महान् व्यक्तित्व को श्रद्धांवत् करने के साथ उनके कृतित्व से प्रेरणा लेने का स्थान है। यहाँ से फतहसागर के पूर्वी छोर का सुहावना दृश्यावलोकन किया जाता है। इसके पास ही मोती मगरी का प्रवेश द्वार स्थित है। इसके पीछे सर्किट हाउस बना हुआ है तथा बायीं तरफ मेवाड़ दर्शक दीर्घा गैलेरी स्थित है।

विवेकानन्द पार्क से फतहसागर के पूर्वी छोर का भव्य स्वरूप एवं पर्यटकों की भारी संख्या

स्वामी विवेकानन्द एक महान् सन्त, प्रख्यात् दार्शनिक एवं युवाओं के प्रेरणास्रोत थे। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 में कोलकाता (कलकत्ता) में हुआ। उनका मूल नाम नरेन्द्र नाथ दत्त था। इनके गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस थे। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ देश की सबसे बड़ी दार्शनिक संपत्ति है। उन्होंने कई विषयों पर बहुमूल्य विचार दिये एवं कर्म योग, राजयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग जैसे ग्रंथों की रचना की। स्वामी विवेकानन्द ने पैदल ही पूरे भारत की यात्रा कर विषम परिस्थितियों एवं जीवन दर्शन का व्यापक अध्ययन किया।

स्वामी विवेकानन्द ने **11 सितम्बर, 1893 में शिकागो (अमेरिका) में आयोजित विश्व धर्म संसद** में विशिष्टजन को संबोधित करते हुए एक बेहद चर्चित भाषण दिया था। उन्होंने कहा–''अमेरिका के बहनों एवं भाइयों, आपके इस स्नेहपूर्ण एवं जोरदार स्वागत से मेरा हृदय अपार हर्ष से भर गया है। मैं आपको दुनिया की सबसे प्राचीन संत परंपरा की तरफ से धन्यवाद देता हूँ। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में हिन्दू धर्म को महत्वपूर्ण विश्व धर्म के रूप में स्थापित करते हुए चार वेदों, उपनिषदों, पुराणों एवं भागवत गीता जैसे हिन्दू धर्म ग्रंथों के सार को विश्व के दर्शकों के समक्ष रखा एवं हिन्दू धर्म का मजबूत पक्ष रखा एवं इन धर्मग्रन्थों के प्राचीन ज्ञान को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया। उन्होंने कहा – ''उठो, जागो और तब तक मत रूको, जब तक लक्ष्य पूरा नहीं हो जाता''। इस ध्येय वाक्य ने युवाओं को प्रेरित किया।

मैं आपको सभी धर्मों की जननी की तरफ से धन्यवाद देता हूँ और सभी जाति, संप्रदाय के लाखों, करोड़ों हिन्दुओं की तरफ से आपका आभार व्यक्त करता हूँ। मेरा धन्यवाद कुछ उन वक्ताओं को भी जिन्होंने इस मंच से यह कहा कि दुनिया में सहनशीलता का विचार सुदूर पूरब के देशों से फैला है। मुझे गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ, जिसने दुनिया को सहनशीलता एवं सार्वभौमिक स्वीकृति का पाठ पढ़ाया है। हम सिर्फ सार्वभौमिक सहनशीलता में ही विश्वास नहीं रखते, बल्कि हम विश्व के सभी धर्मों को सत्य के रूप में स्वीकार करते हैं। मुझे गर्व है कि मै एक ऐसे देश से हूँ, जिसने इस धरती के सभी देशों एवं धर्मों के परेशान और सताए गए लोगों को शरण दी है। मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि हमने अपने हृदय में उन इजराइलियों की पवित्र स्मृतियां संजोकर रखी हैं जिनके धर्म स्थलों को रोमन हमलावरों ने तोड़–मरोड़कर खंडहर बना दिया था और तब उन्होंने दक्षिण भारत में शरण ली थी। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं एक ऐसे धर्म से हूँ जिसने महान् पारसी धर्म के लोगों को शरण दी और अभी उन्हें पाल–पोस रहा है।

भाइयों, मैं आपको एक श्लोक की कुछ पंक्तियाँ सुनाना चाहूँगा जिसे मैंने बचपन से स्मरण किया और दोहराया है और जो रोज करोड़ों लोगों द्वारा हर दिन दोहराया जाता है। जिस तरह अलग–अलग स्रोतों से निकली विभिन्न नदियाँ अन्त में समुद्र में जाकर मिलती हैं, उसी तरह मनुष्य अपनी इच्छा के अनुरूप अलग–अलग मार्ग चुनता है। वे देखने में भले ही सीधे या टेढ़े–मेढ़े लगे, पर सभी भगवान तक ही जाते हैं। वर्तमान सम्मेलन जो कि आज तक की सबसे पवित्र सभाओं में से एक है, गीता में बताए गये इस सिद्धान्त का प्रमाण है – जो भी मुझ तक आता है, चाहे वह कैसा भी हो, मैं उस तक पहुँचता हूँ। लोग चाहे कोई भी रास्ता चुने, आखिर में मुझ तक ही पहुँचते हैं। साम्प्रदायिकताएँ, कट्टरताएँ और इसके भयानक वंशज हठधर्मिता लम्बे समय से पृथ्वी को अपने शिकंजों में जकड़े हुए हैं। इन्होंने पृथ्वी को हिंसा से भर दिया है। कितनी बार ही यह धरती खून से लाल हुई है। कितनी ही सभ्यताओं का विनाश हुआ है और न जाने कितने देश नष्ट हुए हैं। अगर ये भयानक राक्षस नहीं होते तो मानव समाज कहीं ज्यादा उन्नत होता, लेकिन अब उनका समय पूरा हो चुका है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आज इस सम्मेलन का शंखनाद सभी हठधर्मिताओं, हर तरह के क्लेश, चाहे वे तलवार से हो या कलम से और सभी मनुष्यों के बीच की दुर्भावनाओं का विनाश करेगा। स्वामी विवेकानन्द ने 9 दिसम्बर, 1898 को कलकत्ता के निकट गंगा नदी के किनारे बेलूर में ''रामकृष्ण मठ'' की स्थापना ''त्याग और सेवा'' का अभ्यास और प्रचार करने हेतु की। इसका आदर्श वाक्य ''आत्मानो मोक्षार्थम जगद् हितया च'' है, जिसका अर्थ है – स्वयं के उद्धार के लिए, दुनिया की भलाई के लिए – त्याग और सेवा। मात्र 39 वर्ष की अल्पायु में 4 जुलाई, 1902 को उनका निधन हो गया। भारत सरकार की घोषणा के पश्चात् वर्ष 1984 से हर वर्ष 12 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द का जन्मदिन ''राष्ट्रीय युवा दिवस'' के रूप में मनाया जाता है।

गुरू गोविन्द सिंह पार्क : फतहसागर के पूर्वी तट पर सर्किट हाउस के नीचे सड़क से कुछ ऊँचाई पर निर्मित यह पार्क इस झील पर निर्मित होने वाला प्रथम सुन्दर पार्क है। पूर्व में इसे रॉक गार्डन के नाम से जाना जाता था। शहरवासियों के मध्य यह बहुत लोकप्रिय रहा। वर्तमान में नेहरू पार्क जाने वाले पर्यटकों के लिए नाव का इन्तजार एवं विश्राम स्थल के रूप में इसका महत्त्व है। अभी यह जॉगर्स और प्रातःकालीन एक्सरसाईज मशीनों से सुसज्जित है। यह पार्क हर आयु वर्ग के लिए उपयुक्त है। विशेष रूप से युवाजन एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए सूर्यास्त, नेहरू गार्डन, सज्जनगढ़, विशाल जल सतह एवं स्पीड बोट को देखने के लिए प्रदूषण रहित उत्तम स्थल है।

सिखों के 10वें धार्मिक गुरु तथा खालसा पंथ के संस्थापक गुरु गोविन्द सिंह एक महान तेजस्वी और शूरवीर धार्मिक नेता थे। उनका जन्म 5 जनवरी, 1666 (वि.सं. 1727) को बिहार के पाटलीपुत्र (पटना) में हुआ था। उनके पिताश्री गुरु तेगबहादूर सिंह सिखों के 9वें गुरु थे। 29 मार्च, 1676 को बैसाखी के दिन मात्र 9 वर्ष की अल्पायु में ही इन्हें सिख धर्म का 10वाँ गुरु बनाया गया। सन् 1699 में बैसाखी के दिन उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की जो सिखों के इतिहास की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना मानी जाती है। गुरु गोविन्द सिंह एक महान् लेखक, फारसी तथा संस्कृत सहित कई भाषाओं के ज्ञाता भी थे। उन्होंने कई ग्रंथों की रचना की। 'दसम ग्रन्थ' गुरु गोविन्द सिंह की कृतियों के संकलन का नाम है। उन्होंने सिखों के पवित्र ग्रन्थ ''गुरु ग्रन्थ साहिब'' को पूरा किया तथा उसे ''गुरु रूप'' में सुशोभित किया। वे मानवमात्र में नैतिकता, निड़रता तथा आध्यात्मिक जागृति का संदेश दिया करते थे। वे शांति, क्षमा एवं सहनशीलता की प्रतिमूर्ति थे।

नेहरू पार्क : फतहसागर झील के बीचों–बीच एक द्वीप (पहाड़ीनुमा स्थल) खाली पड़ा था। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया ने झील की सुन्दरता को और अधिक बढ़ाने के लिए इस द्वीप पर सुन्दर उद्यान बनाने के लिए वर्ष 1963 में शिलान्यास किया। सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा निर्मित इस उद्यान का 14 जनवरी, 1967 को तत्कालीन राज्यपाल सरदार हुकुम सिंह ने उद्घाटन किया और इसे आम नागरिकों एवं पर्यटकों को समर्पित कर दिया। उस समय स्टाफ व पर्यटकों को लाने व ले जाने के लिए चप्पू नावें चलती थी और वर्तमान में डीज़ल की नावें चलती हैं।

उद्यानिकी की मुगल शैली का यह पार्क बहुत ही व्यवस्थित उच्च गुणवत्ता के मापदण्डों के साथ निर्मित हुआ था। फतहसागर के पूर्ण जल भराव स्तर को ध्यान में रखते हुए पार्क की मजबूत दीवार एवं भू–स्तर का निर्धारण किया गया। दीवार के साथ वॉक–वे एवं इसके साथ ही पाम ट्री की सुन्दर कतार विद्यमान है। दीवार के चारों कोनों पर छतरियाँ, पार्क के दक्षिण में एक छोटा बैठक कक्ष एवं उत्तर में पेवेलियन पर्यटकों के विश्राम स्थल के लिए बनी हुई है।

पार्क के मध्य भाग में विविध प्रकार के अनेक फव्वारों की शृंखला स्थापित है। फव्वारों के दोनों ओर भव्य लोन एवं इनके किनारों पर क्यारियों में मौसमी एवं सदाबहार रंग–बिरंगे फूल इस पार्क की सुन्दरता में अभिवृद्धि करते हैं। रात्रि में फव्वारों, क्यारियों, मुख्य दीवार पर की गई विभिन्न रंग बिखेरती हुई प्रकाश व्यवस्था पार्क की अपनी अनुपम सुन्दरता को निखारती है। पार्क के पश्चिमी दीवार से कुछ दूरी पर जल सतह पर तैरता हुआ रेस्टोरेन्ट भी विद्यमान है। यहाँ पर्यटकों एवं शहरवासियों को चाय, कॉफी एवं खाद्य सामग्री उपलब्ध होती है। वर्तमान में मध्यम एवं बड़ी आकार की डीजल चलित नावें चलती हैं। जल प्रदूषण को सीमित रखने हेतु सोलर एवं विद्युत बैट्री ऊर्जा चलित नावों का संचालन किया जाना चाहिये। नावे उच्च स्तर की बहुत सुन्दर स्थानीय संस्कृति के अनुरूप हो तथा दोनों तटों पर बहुत सुन्दर एवं व्यवस्थित जेटियाँ हो।

नेहरू पार्क सिर्फ पर्यटकों एवं आम नागरिकों के मनोरंजन व सुख–शांति के लिए ही होना चाहिये। यह पार्क शादी, महिला संगीत, सगाई रस्म, जन्मदिन एवं अन्य कार्यक्रम या समारोह हेतु उपयोग में नहीं लिया जाना चाहिये क्योंकि उक्त कार्यक्रमों के बाद जूठन, प्लास्टिक अवशेष और कूड़ा–करकट झील में डालने के साथ उद्यान के स्वरूप से छेड़छाड़ की भी संभावना रहती है। पार्क में प्लास्टिक, पॉलीथिन और पैकिंग खाद्य सामग्री के साथ सभी प्रकार के खाद्य पदार्थ ले जाने एवं खाने पर पूर्णतया प्रतिबन्ध हो।

नेहरू गार्डन के पीछे का क्षेत्र नो बोटिंग–नो टूरिज्म–नो फिशिंग क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिये ताकि यह पक्षियों का आश्रय स्थल बन सकें एवं अधिक संख्या में स्थानीय एवं प्रवासी पक्षी यहाँ आ सके। साथ ही पक्षी प्रेमी अधिक से अधिक नेहरूपार्क एवं फतहसागर झील का भ्रमण कर सकें।

फतहसागर की भराव क्षमता को 13 से 14 फीट बढ़ाने के कारण नेहरू पार्क में पानी भर जाने से गाद हो जाता है। इससे यहां की घास, पेड़–पौधों के साथ ही दीवारों को भी नुकसान पहुँचता है। झील की भराव क्षमता के अनुसार नेहरू पार्क के अन्दर की भूमि की सतह को मिट्टी से भरकर ऊँचा करने के साथ दीवारों, छतरियों एवं फव्वारों का स्तर भी ऊँचा उठाना चाहिये। म्यूजिकल व लेजर फाउन्टेन की शृंखला स्थापित कर मौसमी फूलों की क्यारियाँ, खरपतवार रहित लोन, अच्छे पाथ वे आदि का नियमित रखरखाव होना चाहिये। इसकी सुन्दरता बेमिसाल हो ताकि उदयपुर में आने वाला प्रत्येक पर्यटक इसे देखे बिना नहीं जा सके। यह पार्क उदयपुर की शान है।

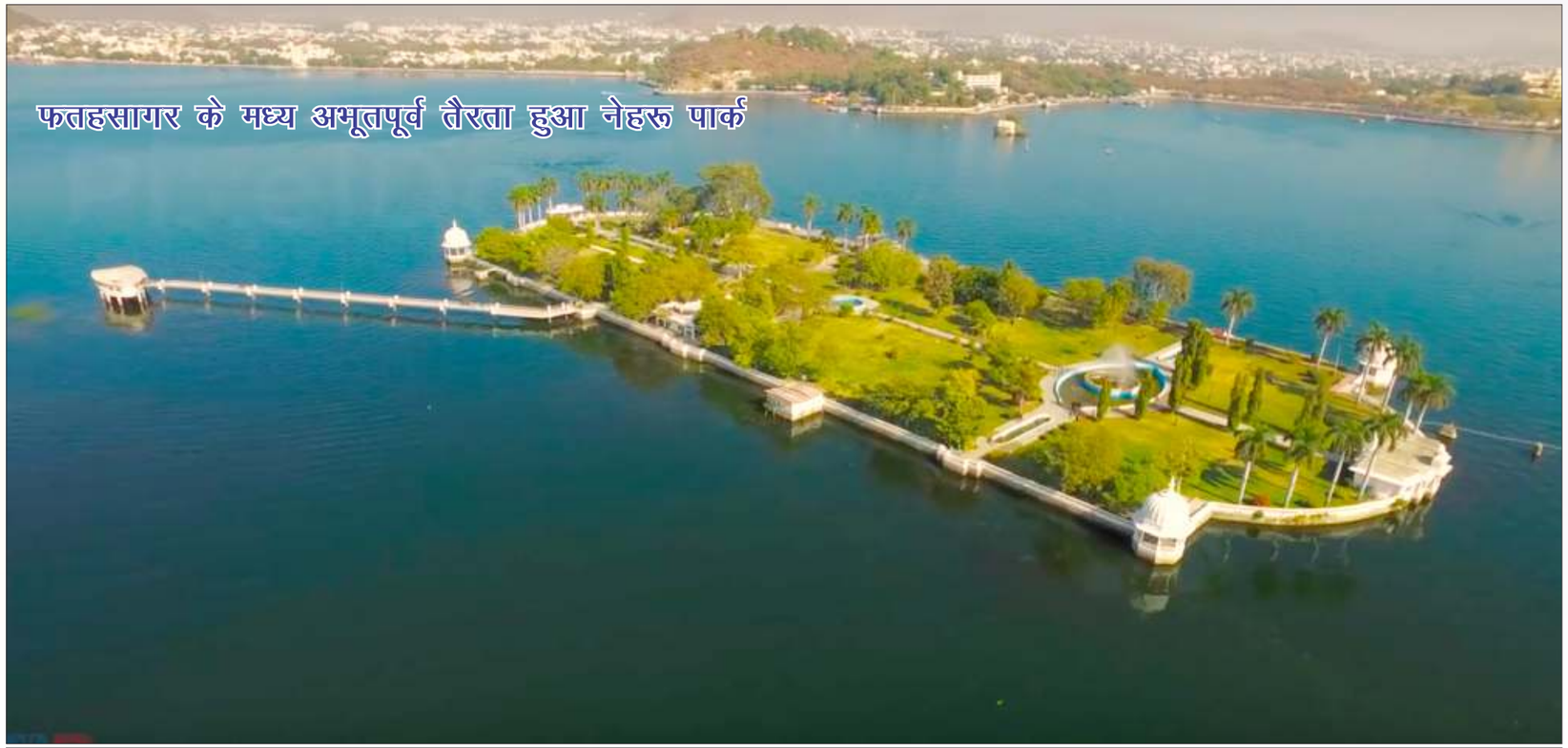

फतहसागर के मध्य अभूतपूर्व तैरता हुआ नेहरू पार्क

पार्क के पश्चिमी किनारे पर स्थित रेस्टोरेन्ट

फतहसागर झील के मध्य स्थित भव्य नेहरू गार्डन का संपूर्ण परिक्षेत्र – अति सुन्दर छवि

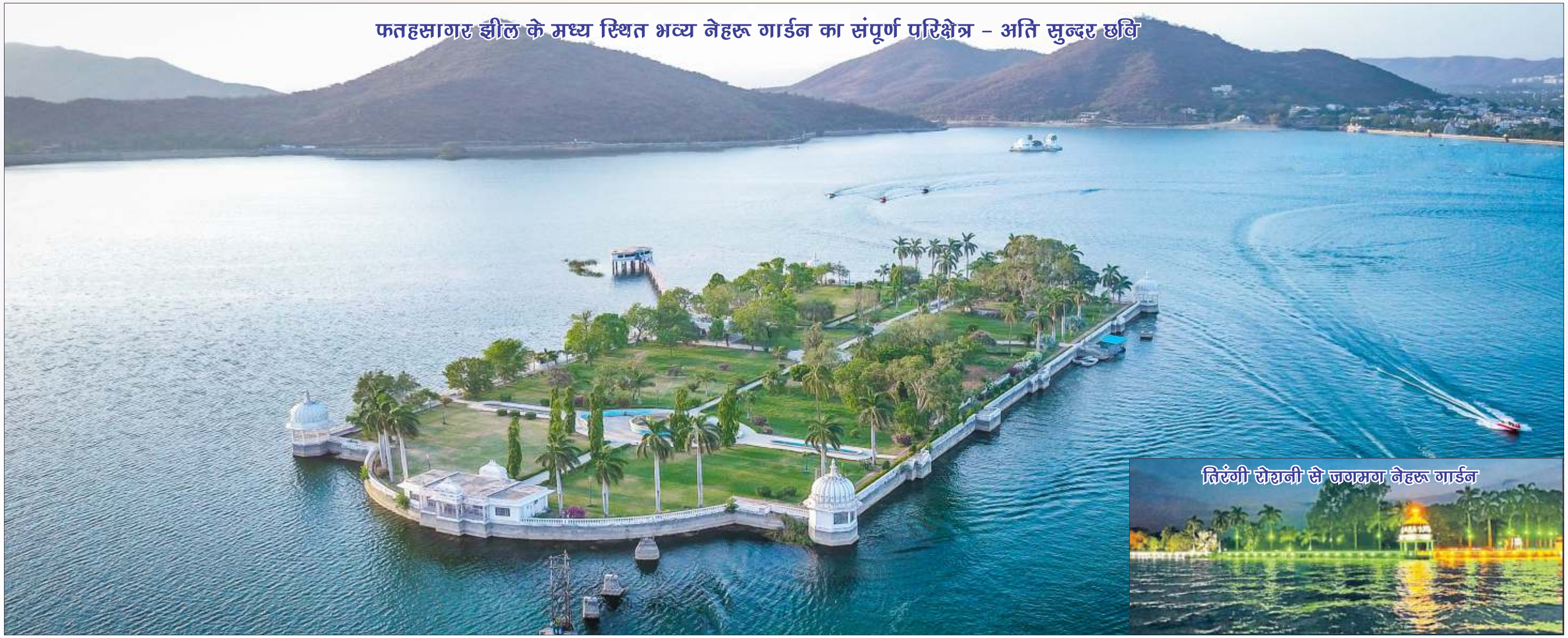

तिरंगी रोशनी से जगमग नेहरू गार्डन

नेहरू पार्क में सुधार एवं नव सृजन करने की आवश्यकता

अंडर दी सन एक्वेरियम : फतहसागर पाल के प्रथम खण्ड की पूर्वी दिशा में नगर विकास प्रन्यास द्वारा निर्मित 125 मीटर लम्बे आकर्षक 'अंडर दी सन एक्वेरियम' का लोकार्पण 21 अक्टूबर, 2017 को किया गया। यह झीलों के शहर में पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र बन गया है। इस एक्वेरियम में देशी और दुनिया के विभिन्न देशों की 200 से अधिक प्रजातियों की 150 टेंकों में छोटी–बड़ी, रंग–बिरंगी, खूबसूरत, मनमोहक मछलियाँ लाई गई। कारपेट, एनीमोन, सी आर्चिड और स्टार फिश जैसी समुद्री प्रजातियाँ भी इसमें शामिल हैं। एक्वेरियम में लुभावनी एक्वास्केपिंग और सुन्दर उष्ण–कटिबंधीय ताजे पानी की मछलियों के साथ एक्वेरियम को बहुत खूबसूरती से प्रदर्शित किया गया है। मछली के अलावा समुद्री जीवों जैसे एल्बिनो फॉक्स, इनोनेशियन क्रेब्स, फायर बेली न्यूट्स, फेश वाटर स्केम्पी आदि यहाँ देखे जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त ओ.एम. जी. टेंक है, जहाँ एक एक्वेरियम के अन्दर जाकर पानी के नीचे जीवन का अनुभव कर सकते हैं। समुद्र के नीचे जीवन का दुर्लभ अनुभव नवीनतम् वी.आर. गैजेट और पुरस्कृत समुद्री विशेषज्ञों के माध्यम से दर्शाया गया है। टच पूल जिसमें मछलियों को छूने का रोमांच साकार होता है। एक्वा ट्रिक आर्ट म्यूजियम एवं थ्री–डी पिक्चर के माध्यम से अद्भुत एवं अनोखी मछलियाँ तैरते हुए देखी जा सकती है। टीवी स्क्रिन पर मछलियों की विशेषताओं और जीवनचर्या से जुड़ी रोचक ज्ञानवर्द्धक सूचनाएँ डिस्प्ले होती हैं।

एक्वेरियम की स्थापना से रात्रिकालीन पर्यटन की ओर कदम बढ़ा है। यह प्रातः 8.00 बजे से रात 11.00 बजे तक खुलता है। यह शहर के हर आयु वर्ग को वरन् इसमें पहुँचने वाले हर पर्यटक को भी लुभा रहा है। सुरक्षा के मद्देनजर 16 सीसीटीवी कैमरे, सुविधा की दृष्टि से मोबाइल चार्जिंग प्वाइंट, मेल–फिमेल यूरिनल्स और ड्रिंकिंग वाटर सहित कैफेटेरिया में परिजनों, मित्रों संग बैठकर चाय, काफी, नाश्ता करने की सुविधा उपलब्ध है। यह एक्वेरियम अनुबंध पर संचालित है।

फ्लॉवर शो : पर्यटन सीजन में शहर में शिल्पग्राम, मोती मगरी, नीमच माता, सहेलियों की बाड़ी, फतहसागर और फिश एक्वेरियम में आने वाले पर्यटकों के लिए फूलों को निहारने एवं उनकी महक पाने हेतु जिला प्रशासन एवं नगर विकास प्रन्यास द्वारा प्रतिवर्ष फतहसागर की मुख्य पाल पर 'फ्लॉवर शो' का आयोजन किया जाता है। इसकी लोकप्रियता में तीव्रता से वृद्धि हो रही है। इस प्रदर्शनी में शहर के बड़े औद्योगिक संस्थानों, होटल समूह, शैक्षणिक संस्थानों, नगर निगम, उद्यान विभाग एवं पुलिस विभाग की भागीदारी रहती है। बच्चे, युवा, परिजन एवं प्रकृति प्रेमी प्रातः से लेकर सूर्यास्त तक रंग–बिरंगे फूलों के इर्द–गिर्द मण्डराकर मोबाइल कैमरों में अपनी मनोहारी स्मृतियों को सहेजते हुए नजर आते हैं। प्रदर्शनी में विभिन्न प्रकार की पोनसेटिया, गुलदाउदी, ग्राफ्टेड केक्टस, पिटूनिया, डायन्थस, पेन्जी, छोटे गुलाब, लिलियम, एन्थूरियम, सकूलेन्ट, सजावटी गोभी, इम्पेशियन जरबेरा, डाईब्रिड गुडहल, बोनसाई प्लान्ट आदि दुर्लभ व मौसमी पौधे प्रदर्शित किये जाते हैं। इसमें फूलों की अनेक बनावट, फूलों का डोम, तितली संग फूलों की सजावट (बटरफ्लाई), बोन्साई प्लांट, गेंदा, सूर्यमुखी, मोगरा, ऑकिंड, स्पाइडर, लीली, सीक्रेटा ओरेजा, टिकोमा पर्पल, मारसम आदि सम्मिलित रहती हैं। शो में क्रिएटिव कॉर्नर में इन सभी वेस्ट वस्तुओं से सजावट के सुन्दर सामान जैसे फ्लावर पॉट एवं गार्डन के छोटे–छोटे स्वरूप में अलग–अलग आकृतियों के गमलें, पक्षियों के पानी पीने के कटोरें आदि बनाकर प्रदर्शित भी किये जाते हैं। फूल–पत्तियों से बनी अनेक बनावट जैसे बटर फ्लाई आदि पर्यटकों एवं शहरवासियों को आकर्षित करती है।

इस प्रदर्शनी में कई नई देशी–विदेशी किस्मों के फूल–पौधों के साथ ही टी–ग्रीन ऑर्चिड में ऑर्गेनिक सब्जियों की स्मॉल यूनिट, रूफ टॉप गार्डनिंग, किचन गार्डन, गार्डनिंग मटेरियल आदि देखने को मिलते हैं। नर्सरी उद्योग को ऐसे आयोजन से बहुत लाभ मिलता है। इस पुष्प प्रदर्शनी के माध्यम से नई किस्म के सुन्दर एवं लुभावने पौधे, गार्डन मटेरियल रियायती मूल्य पर उपलब्ध होने चाहिये एवं कृषि और बागवानी से जुडे विशेषज्ञों की सेवाएं भी प्रदर्शनी स्थल पर आयोजक रूबरू करा सकें, तो बेहतर होगा। यह फ्लावर शो पर्यटक कैलेण्डर में स्थायी किया जाना चाहिये।

फतहसागर की पाल पर तो इस प्रदर्शनी को स्थायी नहीं किया जा सकता है लेकिन शहर के किसी उपयुक्त स्थान पर एक फ्लॉवर पार्क विकसित किया जाना चाहिये जिसे मौसमी फूलों से सहेजा जाये एवं अति सुन्दर पौधों की प्रदर्शनी भी हो। इसे और आकर्षक बनाने हेतु पर्यटक भ्रमण मानचित्र में इसे स्थायी स्थान प्राप्त होना चाहिये। गुलाब बाग में भी ऐसा एक स्थान चयनित किया जा सकता है।

फ्लॉवर शो फोटोग्राफ

चित्रकारी/हस्तकला प्रदर्शनी

फतहसागर की पाल पर फ्लॉवर शो, लेक फेस्टिवल, राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम की तरह स्थानीय ख्यातिप्राप्त एवं उभरते चित्रकारों एवं हस्त–शिल्पियों को जानने एवं उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु वर्ष में एक बार नियमित रूप से प्रदर्शनी लगाई जावे। इसके माध्यम से चित्रकार अपनी दुर्लभ पेन्टिंग्स एवं कलाकृतियों को प्रदर्शनी में प्रदर्शित कर लोकप्रियता के साथ आर्थिक सम्बल भी प्राप्त कर सकेंगे। इस कार्य के लिए स्थानीय एवं राज्य स्तर के चित्रकार एवं शिल्पकारों के संगठनों की भागीदारी स्थानीय प्रशासन एवं नगर निगम के साथ आवश्यक है। यह प्रदर्शनी फ्लावर–शो के साथ भी आयोजित की जा सकती है।

लेक फेस्टिवल

उदयपुर शहर की प्रसिद्ध झीलों के प्रति आकर्षण पैदा करने एवं उन्हें प्रदूषण मुक्त रखने के उद्देश्य से जिला प्रशासन, पर्यटक विभाग एवं अन्य विभागों के सहयोग से प्रतिवर्ष नवम्बर माह में लेक फेस्टिवल भव्यता के साथ आयोजित किया जाता है। इस फेस्टिवल में पिछोला एवं फतहसागर पर गीत–संगीत, लेजर शो, खेलकूद, वाटर स्पोर्ट्स, प्रकृति भ्रमण, श्रमदान, मैराथन सहित अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इस कार्यक्रम में स्थानीय प्रतिभागियों के अतिरिक्त देश–विदेश के कलाकार एवं खिलाड़ी भाग लेते हैं। इसमें जन भागीदारी की समुचित वृद्धि हेतु दैनिक समाचार पत्र, दूरदर्शन, आकाशवाणी, पेम्पलेट एवं अन्य संचार माध्यमों से अग्रिम अथवा दैनिक सूचना देने का आयोजकों का पूर्ण प्रयास होना चाहिये।

हरियाली अमावस्या : श्रावण (जुलाई–अगस्त) मास के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को हरियाली अमावस्या के नाम से जाना जाता है। सोमवार को पड़ने वाली अमावस्या को सोमवती अमावस्या कहते है (20 जुलाई, 2020)। इस पर्व को कृषि के द्वारा समृद्धि प्राप्त करने का प्रमुख पर्व माना जाता है। देश के कई भागों में इस दिन परम्पराओं के दामन में आंतरिक और बाह्य समृद्धि के लिए विशेष क्रियाएँ, मेले एवं उपासना, देह और आत्मा की मानिंद घुली–मिली दिखाई देती है। इस दिन निष्काम भाव से वृक्ष लगाना चाहिये। श्रावण माह इसके लिए सर्वोत्तम समय है।

उदयपुर में फतहसागर एवं सहेलियों की बाड़ी पर दो दिवसीय ''हरियाली अमावस्या मेला'' प्रत्येक वर्ष आयोजित किया जाता है। इन स्थानों पर श्रावण मास तक हरियाली आच्छादित हो जाती है। फतहसागर का जलस्तर भी ऊँचा हो जाने से मेले के लिए यह सर्वोत्तम स्थल होने के साथ लोगों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र भी बन जाता है।

इन स्थानों पर व्यापारी वर्ग द्वारा खाद्य पदार्थ, शृंगार सामग्री, मनोरंजन, खिलौने एवं अन्य घरेलू उपयोगी सामग्री आदि के लिए स्टॉल्स लगती हैं। दूरस्थ स्थानों के व्यापारी भी इस मेले में सक्रियता से भाग लेते हैं। नगर विकास प्रन्यास चौराहे एवं देवाली छोर पर चकरी डोलर व अन्य झूले भी लगाये जाते हैं, जो मेले के मुख्य आकर्षण होते हैं। सहेलियों की बाड़ी के फव्वारों का आनन्द लेते हुए उत्साही जन फतहसागर की पाल पर पहुँचते हैं। पहले दिन का मेला सभी के लिए आयोजित होता है एवं दूसरे दिन मेले में केवल महिलाएँ ही प्रवेश कर सकती हैं। महिलाएँ प्रायः हरे रंग की पोशाक पहनती हैं और बड़े उत्साह से समूहों में गीत गाते हुए इस मेले में शामिल होती है। दूसरे दिन दुकानदार, पुलिसकर्मी एवं प्रशासनिक अधिकारियों के अतिरिक्त कोई भी पुरुष मेले में नहीं जा सकता है।

राष्ट्रीय एकता कार्यक्रम : राष्ट्रीय एकता के महानाद की साक्षी बनी 8 नवम्बर, 2016 को फतहसागर पाल पर हुए ऐतिहासिक आयोजन में देशभक्ति गीतों के बीच जोश भरते वन्देमातरम् और भारत माता के जयकारे गुंजायमान हुए। इस प्रकार के आयोजन पर्यटन सीज़न में नियमित होने चाहिये जिससे उदयपुर आने वाले पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके।

हथियारों की प्रदर्शनी : फतहसागर की पाल पर भारतीय थल सेना की स्थानीय इकाई द्वारा सेना से जुड़े हुए आधुनिक हथियारों की प्रदर्शनी लगाई गई। इनमें प्रमुख रूप से टेंक, आर्टिलेरी गन, फायर पावर आदि हथियार रखे गये। सेना के जवानों एवं अधिकारियों ने इन हथियारों के बारे में विस्तृत जानकारी जन समुदाय को प्रदान की। ऐसे आयोजन प्रतिवर्ष और वृहद् रूप से आयोजित किये जाने चाहिये। इससे युवा वर्ग में भारतीय सेना की कार्य पद्धति, विषम परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता के साथ सभी प्रकार के हथियारों के ज्ञान की अभिवृद्धि होगी। इससे युवा वर्ग में राष्ट्र–प्रेम की वृद्धि के साथ देश की रक्षा में भी वे सदैव आगे रहेंगे। सेना को उच्च क्षमता के कुशल सैनिक एवं अधिकारी हर क्षेत्र से मिलने लगेंगे। ऐसे आयोजनों से आम नागरिकों में भी सेना के जवानों एवं अधिकारियों के प्रति श्रद्धा एवं सम्मान के भाव में अभिवृद्धि होगी एवं वे अपने को गौरवान्वित महसूस करेंगे।

विभूति पार्क : फतहसागर पाल के सौन्दर्यीकरण के अन्तर्गत इसकी मुख्य पाल के विकास के साथ विभूति पार्क का निर्माण किया गया। पाल के 8 खण्ड में प्रथम एवं आठवें खण्ड में दो–चारपहिया वाहन पार्किंग सुविधा विकसित की गयी। पाल के दूसरे व सातवें खण्ड के प्रवेश पर लोहे की फाटक लगाकर वाहनों का प्रवेश वर्जित किया गया। पाल के दूसरे से सातवें खण्ड के मध्य पूर्वी तट पर विभूति पार्क का निर्माण किया गया। विभूति पार्क में सुन्दर उद्यान के साथ फव्वारें भी लगाये गये। पाल के इसी खण्ड पर ग्रीन उदयपुर के अन्तर्गत सुन्दर पौधों व फूलों के गमलें रखे गये। पाल के प्रथम खण्ड के पार्किंग छोर के साथ भूतल पर एक्वेरियम विकसित किया गया है जो कि फतहसागर का एक नया आकर्षण है।

मुख्य पाल के मध्य टाया पैलेस के सामने 12–15 फीट नीचे दो बड़े फव्वारों के लिए पोण्ड बनाये गये जिनमें अनेक तरह के फव्वारें लगाये गये। ऊँचाई से पानी को रंग–बिरंगी रोशनी के साथ नीचे गिराया गया। इन दोनों फव्वारों के पोन्ड के उत्तरी एवं दक्षिणी छोर पर सुन्दर उद्यान लगाये गये। वर्तमान में इन दोनों पोन्ड में न तो पानी हैं, न ही फव्वारें चल रहे हैं। फव्वारें उनके मूल स्वरूप में भी नहीं रहे हैं। इनकी वस्तुस्थिति देखकर यह अन्दाजा लगाया जा सकता है कि इस पार्क को विकसित करने में राष्ट्रीय निधि का पूर्ण रूप से सदुपयोग नहीं हुआ है, मात्र 5–6 वर्षों में यह सब होना अति दुखद एवं सोचनीय है। साथ ही दोनों फव्वारों के पोन्ड एवं उद्यान भी एक सतह पर नहीं हैं, न ही एक–दूसरे के क्षेत्र (उत्तरी–दक्षिणी छोर) में पर्यटक या शहरवासी आ जा सकते हैं। एक से दूसरे पोन्ड एवं उद्यान में जाने के लिए पुनः मुख्य पाल पर आना पड़ता है। इस प्रकार इस पार्क का नियोजन, निर्माण एवं रखरखाव किसी भी रूप में उचित नहीं ठहराया जा सकता।

पूर्वजों ने जो प्राकृतिक धरोहर हमें विरासत में दी है, उसका रखरखाव करने के बजाय हम उसका मूल स्वरूप बिगाड़ रहे हैं। शहर का भला इसी में है कि पुरानी पहचान को बनाए रखें और उसको उसी रूप में और विकसित करें। फतहसागर पाल का मूल स्वरूप धीरे–धीरे बिगड़ रहा है। करोड़ों रुपये खर्च कर मुख्य पाल के लेवल से नीचे बनाए गए पार्क में लोगों का आवागमन नहीं के बराबर है और वरिष्ठ नागरिकों के लिए इतना नीचे उतरकर पार्क में पहुँचना बहुत ही कठिन है। दूसरी ओर नीमजमाता छोर की तरफ से मौजूदा पाल की सड़क के किनारे विभूति पार्क की ओर सीमेन्ट, स्टील, कंकरीट के भारी भरकम पीलर करीब 20 फीट से अधिक नीचे से बनाए गये हैं। अब वहाँ जो स्वरूप उभरकर आया है उससे पाल के किनारे पूर्व में कीकर के पेड़ों की जो कतार नजर आती थी, उसकी जगह सीमेन्ट कंकरीट के बड़े–बड़े पीलर एवं ग्रेनाइट युक्त पेडस्टल चौक नजर आ रहे हैं।

विभूतियाँ : फतहसागर पाल पर आने वाले पर्यटक और शहरवासियों को विभूति पार्क में निम्नलिखित 9 विभूतियों के दर्शन सुन्दर मूर्तियों के माध्यम से होंगे, जो याद दिलाएंगे आजादी के संघर्ष एवं उनके गौरवमयी व्यक्तित्व एवं ऐतिहासिक कृतित्व की।

बप्पा रावल (712–810 ईस्वी) (शासनकाल 734–53 ई.) : बप्पा रावल का जन्म 712 ई. में ईड़र में हुआ। उनके पिता ईड़र के शासक महेन्द्र द्वितीय थे। जब बप्पा रावल तीन वर्ष के थे तब वे और उनकी माताजी असहाय महसूस कर रहे थे। तब भील समुदाय ने इन दोनों की मदद कर सुरक्षित रखा। बप्पा ने अरावली की पहाड़ियों में स्थित नागदा के एक छोटे से गाँव कैलाशपुरी में चरवाहों एवं भील लड़कों के मध्य खेलते हुए अपने प्रतिभाशाली एवं कुशल नेतृत्व के संकेत दिये। मात्र 15 वर्ष की उम्र में बप्पा अपने चाचा मानमोरी, जो कि चित्तौड़ के शासक थे,

के दरबार में आये। इसी अवधि के दौरान एक आक्रमणकारी अरब जनरल पर बप्पा की भारी विजय से उन्हें राष्ट्र का नायक बना दिया और मोरी के सामन्ती प्रमुखों ने उन्हें स्वीकार कर लिया। उन्होंने मानमोरी के खिलाफ मोर्चा संभाला एवं चित्तौड़ के सिंहासन पर अधिकार करने के लिए बप्पा को मना लिया। बप्पा 22 वर्ष की उम्र में सन् 734 ई. में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। उन्हें मेवाड़ के संस्थापक एवं कालभोज के रूप में जाना जाता है। बप्पा रावल को हरित ऋषि के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है। उन्होंने ऋषि के आश्रम में स्थानीय देवता एकलिंगनाथजी की पूजा करना सीखा एवं उदयपुर के उत्तर में 25 कि.मी. दूर कैलाशपुरी में अपने इष्टदेव एकलिंगजी का मन्दिर बनवाया। यहाँ तक कि उन्होंने अपना संपूर्ण अस्तित्व अपने इष्टदेव के चरणों में रख दिया और एकलिंगजी को अपना शासक घोषित किया। वे स्वयं को अपने इष्टदेव के राज प्रतिनिधि या दीवान से अधिक नहीं मानते थे एवं उनकी ओर से राज्य करते थे।

बप्पा ने अपने शासनकाल में पश्चिम में ईरान एवं उत्तर में अफगानिस्तान चहुँओर विजय प्राप्त की। उन्होंने हिन्दुजा सूरज (हिन्दुओं का सूर्य), राजगुरु (राजकुमारों का शिक्षक) एवं चक्रवर्ती सम्राट (राजाओं का स्वामी) की उपाधि प्राप्त की। बप्पा ने अपने विशेष सिक्के जारी किए थे। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्प लेख है। बायीं ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग बना हुआ है। इसके दाहिनी ओर नन्दी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठा है। शिवलिंग और नन्दी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। पीछे की तरफ सूर्य और छत्र के चिह्न है। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पिता हुआ बछड़ा है। (शायद इसी कारण इन्हें कालभोज ग्वाल कहा गया है।) ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिव भक्ति और उनके जीवन की कुछ घटनाओं से सम्बद्ध है।

राजनीतिक एवं सैन्य उपलब्धियों से भरे मात्र 19 वर्षों के शासन के बाद बप्पा 753 ई. में मात्र 39 वर्ष की उम्र में सक्रिय जीवन से निवृत्त होकर संन्यास लेकर एक ऋषि बन गये। अपना शेष समय हरित ऋषि के आश्रम में वेदों के अध्ययन करने में व्यतीत किया और वे करीब 100 वर्ष की आयु तक जीवित रहे। इनका समाधि स्थान एकलिंगजी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है, इसे दर्शनीय बनाया जाना चाहिये।

राणा कुम्भा (1433–68 ईस्वी) : राणा कुम्भा एक कवि, संगीतकार एवं लेखक होने के साथ मेवाड़ के महान् योद्धाओं में से एक थे। राणा कुम्भा ने 35 वर्षों तक शासन किया जिसके दौरान चित्तौड़गढ़ ने स्थिरता एवं समृद्धि का सुखद लाभ लिया। महाराणा मोकल के पुत्र राणा कुम्भा 1433 ईस्वी में सिंहासनारूढ़ होने के पश्चात् युद्ध के मैदान में उनके साहसिक प्रदर्शन से उन्हें एक सैन्य प्रतिभा की पहचान मिली। यह पहली बार हुआ था कि दिल्ली, मालवा, नागौर और गुजरात

के मुस्लिम सुल्तानों ने एक हिन्दू राजा के प्रति पूर्ण सम्मान प्रदर्शित करते हुए कुम्भा की श्रेष्ठता को स्वीकार किया। 1437 ईस्वी में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को बुरी तरह से हराया और इस विजय के स्मारक स्वरूप चित्तौड़गढ़ में विख्यात विजय स्तम्भ बनवाया। राणा कुम्भा ने मेवाड़ की कमान वाले सबसे बड़े क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित किया। हालाँकि उनकी सबसे स्थायी छाप वास्तुकला एवं सांस्कृतिक कार्यों में उनका विशिष्ट योगदान रहा। कुम्भा ने दुर्गों के साथ अपने साम्राज्य को सुदृढ़ किया। चौरासी किलों में 32 किले जो कि मेवाड़ की रथा हेतु थे, का निर्माण कर उन्हें महलों एवं मन्दिरों से अलंकृत किया। कुम्भलगढ़ के प्रसिद्ध किले का निर्माण उनके शासनकाल के दौरान किया गया था जो चित्तौड़ के बाद मेवाड़ का सबसे सुरक्षित एवं महत्त्वपूर्ण किला है। राणा कुम्भा को चित्तौड़ दुर्ग का आधुनिक निर्माता भी कहते हैं। उन्होंने इसके अधिकांश वर्तमान भाग, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, अनेक महलों, देवालयों, सरायों एवं विद्यालयों का निर्माण कराया। चित्तौड़ का कीर्ति–स्तम्भ तो संसार की अद्वितीय कृतियों में से एक है। इसके एक–एक पत्थर पर उनके शिल्पानुरागी, विद्वता और व्यक्तित्व की छाप है।

उनके शासनकाल में धरणशाह नामक व्यापारी ने देपाक नामक शिल्पी के निर्देशन में रणकपुर के भव्य जैन मन्दिरों का निर्माण करवाया था। कुंभा का इतिहास केवल युद्धों में विजय तक ही सीमित नहीं था बल्कि उनकी शक्ति और संगठन क्षमता के साथ–साथ रचनात्मकता भी आश्चर्यजनक थी। वे वेदों, उपनिषदों, तर्क शास्त्र एवं नाट्य शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे। वे कुशल वीणा वादक भी थे। उनके लिखे **संगीतरस** एवं **संगीत रत्नाकर** नामक दो प्रसिद्ध संगीत ग्रन्थों को साहित्य के कीर्ति स्तम्भ माना जाता है। कुम्भलगढ़ किले के अन्दर एक मन्दिर में प्रार्थना करते हुए राणा कुम्भा की उनके सबसे बड़े पुत्र उदय सिंह प्रथम ने निर्मम हत्या कर दी थी।

राणा सांगा (22 अप्रेल, 1484 – 30 जनवरी, 1528) (शासनकाल 1509 से 1528 ई.) : महाराणा कुम्भा के लोकप्रिय पोते राणा संग्राम सिंह या राणा सांगा को अपने पिता श्री राणा रायमल की मृत्यु के बाद 1509 ई.सं. में सिंहासन पर बैठाया गया। वे मेवाड़ के सबसे महत्त्वपूर्ण शासक एवं अपने समय के महान् योद्धा थे जिससे मेवाड़ का गौरव एवं समृद्धि शिखर तक पहुँची। उन्होंने अपनी शक्ति एवं राजपूत राज्यों को संगठित कर मेवाड़ साम्राज्य का विस्तार उत्तर में जमुना के किनारे, दक्षिण में मालवा, पश्चिम में सिंध एवं पूर्व में अरावली तक कर दिया।

राणा सांगा ने दिल्ली, गुजरात व मालवा के सुल्तानों के विरुद्ध 18 युद्ध लड़कर राज्य की बहादुरी से रक्षा की। उस समय वे सबसे शक्तिशाली हिन्दू राजा थे। उनकी दिल्ली को जीतने एवं संपूर्ण उत्तर भारत में हिन्दू राज्य की स्थापना करने की अति महत्त्वाकांक्षा थी। इस समय तक मुगल शासक बाबर ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।

फरवरी, 1527 ईस्वी में खानवा के युद्ध के पूर्व बयाना के युद्ध में राणा सांगा ने मुगल सम्राट बाबर की सेना को परास्त कर बयाना का किला जीता। बयाना के युद्ध के पश्चात् 17 मार्च, 1527 को खानवा के युद्ध में राणा सांगा के पास युद्ध के लिए 80000 सैनिक, 500 युद्धक हाथी, सात राजपूत शासकों के साथ खानवा के भीषण युद्ध में बाबर को आगे बढ़ने से रोकने का प्रयास किया। राजपूतों ने बहादुरी के साथ युद्ध किया लेकिन राणा सांगा घायल हो गये और युद्ध विराम कर लिया। राजपूत सेना का प्रतिरोध इतना शक्तिशाली था कि जमीन का एक भाग भी नहीं खोया। सांगा के शरीर पर 84 घाव थे। उन्होंने एक विजेता के रूप में राजधानी में प्रवेश करने से इन्कार कर दिया तथा करीब एक वर्ष पश्चात् 30 जनवरी, 1528 को उनकी मृत्यु हो गयी।

राणा सांगा ने राज्य को सर्वोच्च शिखर तक पहुँचाया। इतिहास में इनकी गिनती महानायक तथा वीर के रूप में की जाती है। बाबर ने अपनी टिप्पणी में बड़े सम्मान के साथ राणा सांगा का उल्लेख किया। उन्होंने स्वीकार किया कि राणा सांगा अपनी वीरता एवं तलवार के बल पर ऊँचे स्थान पर पहुँचे।

राणा सांगा अदम्य साहस के साथ अपनी उदारता के लिए भी प्रसिद्ध थे। एक भुजा, एक आँख, एक टाँग के साथ घायल होने जाने एवं अनगिनत जख्मों के बावजूद उन्होंने अपना महान पराक्रम नहीं खोया। सुल्तान मोहम्मद शाह माण्डु को युद्ध में हराने व बन्दी बनाने के बाद उनका राज्य पुनः उदारता के साथ लौटा दिया।

रानी पद्मिनी : पद्मिनी चित्तौड़ के राणा रतन सिंह की रानी थी जिनका ऐतिहासिक अस्तित्व बहुत गौरवशाली है। सिंहल द्वीप के राजा गन्धर्वसेन की पुत्री पटरानी चम्पावती के गर्भ से पद्मिनी का जन्म हुआ एवं वह अद्वितीय सुन्दरी थी।

रानी पद्मिनी के रूप का वर्णन सुनकर दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी द्वारा उन्हें देखने की इच्छा व्यक्त की गयी। उनकी सेनाओं ने चित्तौड़ को घेर लिया और सुल्तान ने राणा रतन सिंह को सन्देश भेजा कि यदि वह अपनी रानी पद्मिनी को देखने की अनुमति देगा, तो वह शहर छोड़ देगा। ऐसा कहा जाता है कि अलाउद्दीन को सुन्दर रानी को मर्दाना महल के दर्पण के प्रतिबिम्ब में देखने की अनुमति दी गयी थी जबकि वह अपने जलमहल की सीढ़ियों पर थी। अलाउद्दीन ने अपने मेजबान का शुक्रिया अदा किया जो विनम्रतापूर्वक उसे बाहरी गेट तक ले गये, जहाँ सुल्तान के लोगों द्वारा राणा रतन सिंह का अपहरण कर उसे बंधक बना लिया गया।

रानी पद्मिनी ने एक योजना बनाई और सुल्तान को संदेश भेजा कि रानी उसके पास आयेगी। गोरा और बादल (रानी पद्मिनी के चाचा एवं चचेरे भाई) के नेतृत्व में दरबारी सेविकाओं के स्थान पर सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं के साथ दर्जनों पर्दे वाली पालकी बनाई गई। सुल्तान के शिविर के अन्दर प्रवेश करते ही चार सशस्त्र राजपूत योद्धा प्रत्येक पालकी से बाहर निकल गये। यद्यपि राणा रतनसिंह को बचा लिया गया था लेकिन युद्ध में 7000 से अधिक योद्धा मारे गये। रानी पद्मिनी ने अपमान के बजाय मृत्यु को प्राथमिकता दी। उन्होंने महिलाओं के साथ–साथ अपने बच्चों को निष्ठावान अनुचरों के संरक्षण में छिपाकर भेजा और स्वयं उनकी शादी की पोशाक पहनकर महासती चौक पर सोलह सौ महिलाओं के साथ एक विशाल अंतिम संस्कार की चिता में समाहित होकर जौहर कर लिया। यह पहला साका 1303 ई. में हुआ।

राणा रतनसिंह एवं उनके राजपूत योद्धाओं ने भगवा वस्त्र पहनकर अपनी महिलाओं की पवित्र राख को अपने माथे पर लगाया और मृत्यु तक लड़ने के लिए दुश्मन के जत्थे की ओर दौड़ पड़े। अलाउद्दीन ने जो कुछ हुआ वह देखा एवं बदले की भावना से सामान्य नागरिकों के नरसंहार का आदेश दिया। उसके आदेश पर लगभग 30,000 लोगों की हत्या कर दी गई तथा सभी इमारतों, महलों एवं मन्दिरों को नुकसान पहुँचाया गया। उन्होंने केवल पद्मिनी के जलमहल को छोड़ा। यह स्मृति आज भी कईयों के आँखों में आँसू ला देती है। रानी पद्मिनी सदैव स्मरणीय रहेगी। उन्होंने आग में कूदकर जान दे दी लेकिन अपनी आन–बान एवं सतीत्व पर आँच नहीं आने दी।

राणा हम्मीर सिंह (1314–1378 ई.) (शासन अवधि 1326 से 1364 ई.) : राणा हम्मीर सिह 14वीं शताब्दी के मेवाड़ के एक शासक थे। सिसोद गाँव के ठाकुर राणा हम्मीर सिसोदिया वंश के प्रथम शासक थे। उनके शासनकाल में मेवाड़ के शासकों की उपाधि रावल से बढ़कर राणा व महाराणा तक पहुँची थी तथा इन्हें मेवाड़ का उद्धारक भी कहा जाता है। राणा हम्मीर अरिसिंह के पुत्र एवं लक्ष्मणसिंह के पौत्र हैं, जिन्होंने अपनी सैन्य क्षमता के आधार पर मेवाड़ के केलवाड़ा नामक स्थान को मुख्य केन्द्र बनाया। उन्होंने चित्तौड़ से मुस्लिम सत्ता को उखाड़ने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। मेवाड़ की विषम परिस्थितियों के होते हुए भी इन्होंने चित्तौड़ पर विजयश्री प्राप्त की। इस प्रकार 1326 ई. में राणा हम्मीर को पुनः चित्तौड़ प्राप्त हुआ। इसी कारण मेवाड़ राज्य के इस शासक को ''विषम घाटी पंचानन'' (संकटकाल में सिंह के समान) के नाम से जाना जाता है।

उनको यह संज्ञा राणा कुंभा ने अपने कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में दी। राणा हम्मीर सिसोदिया राजवंश, जो कि गुहिल वंश की ही एक शाखा है, के प्रजनक भी बन गए, क्योंकि इसके बाद सभी महाराणा सिसोदिया राजवंश के ही रहे। इन्होंने चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चित्तौड़गढ़ दुर्ग में अन्नपूर्णा माता मन्दिर का निर्माण भी करवाया था।

इनके शासनकाल में दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने मेवाड़ पर आक्रमण किया तथा दोनों के मध्य सिंगोली नामक स्थान पर युद्ध हुआ, जिसे सिंगोली का युद्ध कहा जाता है। वर्तमान में यह स्थान उदयपुर में स्थित है। इस युद्ध के बाद मेवाड़ में राणा हम्मीर के दिन सामान्य रहे तथा 1364 ई. में इनकी मृत्यु हो गयी। वे भारत की शेष रही हिन्दू शक्ति का एकमात्र प्रतीक थे। अन्य सभी राजपूत राज्यों ने मुस्लिम सुल्तानों के आगे घुटने टेक दिये थे। हम्मीर सिंह मेवाड़ के सबसे बुद्धिमान एवं सबसे योग्य वीर राजकुमारों में से एक थे।

राणा राजसिंह प्रथम (24 सितम्बर, 1629 से 22 अक्टूबर, 1680 ई.) (राज्यकाल 1652 से 1680 ई.) : राणा राजसिंह प्रथम मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश के एक शक्तिशाली राजा थे। वे महाराणा जगत सिंह प्रथम के पुत्र थे। मात्र 23 वर्ष की अल्पायु में उनका राज्याभिषेक हुआ। वे न केवल वीर बल्कि एक कलाप्रेमी, जन–जन के चहेते, दानी, धर्मनिष्ठ, प्रजापालक एवं

बहुत ही कुशल प्रशासक भी थे। उन्होंने कई बार सोने, चांदी, अनमोल धातुएं, रत्नादि के तुलादान करवाये तथा आपके द्वारा कुशल शिल्पकार, कवि, साहित्यकार, दस्तकार, वीर योद्धाओं को सम्मानित किया गया।

राणा राज सिंह स्थापत्य कला के प्रेमी भी थे। उनका सबसे बड़ा कार्य राजसमन्द झील पर पाल बाँधना, कलापूर्ण नौ–चौकी का निर्माण करवाना एवं प्रस्तर पट्टों पर उत्कीर्ण राज–प्रशस्ति शिलालेख बनवाकर नौ–चौकी पर स्थापित करना था जो आज भी देखे जा सकते हैं। इस बांध के निर्माण से वे अपने मेवाड़ के लोगों को 1662 ईस्वी के विनाशकारी अकाल से बचाने में सक्षम रहे। उन्होंने किशनगढ़ के राजा रूपसिंह की पुत्री चारूमति के सतीत्व की औरंगजेब से रक्षा कर उससे विवाह किया तथा औरंगजेब से कई बार विद्रोह किया। वे एक महान ईश्वर भक्त भी थे। द्वारिकाधीशजी और श्रीनाथजी के मेवाड़ में आगमन के समय स्वयं पालकी को उन्होंने कन्धा दिया और उनका स्वागत कर उन्हें स्थापित किया।

गोविन्द गिरि (1858 से 1931 ईस्वी) : वर्तमान राजस्थान और गुजरात के आदिवासी बहुल सीमावर्ती क्षेत्रों में 1900 के दशक में वे एक सामाजिक और धार्मिक सुधारक थे। गोविन्द गिरि का जन्म पूर्व डूंगरपुर राज्य के बालिया गांव में एक बंजारा परिवार में हुआ था। गांव में प्राथमिक शिक्षा उपरान्त एक हाली के रूप में चिह्नित हुए। जिन्हें सुविधानुसार नियोजित नहीं करके स्थायी सम्पत्ति एवं सेवाओं को त्यागने नहीं दिया जाता। उनकी पत्नी और बच्चों की अकाल मृत्यु उपरान्त अपने भाई की विधवा से विवाह किया एवं हिन्दू भिक्षु (गोसाई) राजगिरी के शिष्य बन गये एवं अपना नाम गोविन्दगिरि में बदल लिया।

डूंगरपुर राज्य में वेदसा गांव लौट आए। यहाँ आदिवासियों के नैतिक चरित्र, आदतों और धार्मिक प्रथाओं में सुधार में खुद को व्यस्त किया एवं उनकी सेवा के इरादे से चम्प सभा का आयोजन कर अपराधों को त्यागना, कृषि का पालन करना, अंधविश्वास में विश्वास न करना आदि का प्रचार किया। आदिवासियों से उच्च जातियों को अपनाने और साहूकारों की तरह व्यवहार करने का आह्वान किया। गोवन्दिगिरी की शिक्षाएँ मूल रूप से सामाजिक और धार्मिक सुधार के उद्देश्य से थी लेकिन धीरे–धीरे रियासत के शासकों और जागीरदारों द्वारा आदिवासियों के शोषण एवं पिछड़ापन के लिए जिम्मेदार होने हेतु आवाज़ उठाकर इसके विरुद्ध आंदोलन खड़ा किया। गोविन्दगिरि का मत था कि भील जमीन के असली मालिक थे और वे इस पर शासन करने का अधिकार भी रखते थे।

उन्होंने सनथ और बांसवाड़ा राज्यों की पहाड़ियों में भील राज्य की स्थापना की जो आठ सौ साल पहले एक भील साम्राज्य को बहाल करता था। थोड़े समय के भीतर गोविन्दगिरि ने सनथ, बांसवाड़ा, डूंगरपुर और पंचमहल के ब्रिटिश जिलों के राज्यों के आदिवासियों में जागृति उपरान्त शासकों को सक्रिय विरोध का सामना करना पड़ा एवं उनके उपदेश से उनके अनुयायियों ने शराब मनाही के कारण शराब बिक्री से राजस्व में कमी एवं गोविन्दगिरि का प्रभाव बढ़ने से शासक चिन्तित एवं दबाव अनुभव करने लगे। गोविन्दगिरि की इन गतिविधियों से राज्यों के अधिकारियों और शराब के ठेकेदारों द्वारा विरोध हुआ और उन्हें डूंगरपुर राज्य ने उन्हें 1912 के अन्त या 1913 की शुरूआत में गिरफ्तार कर लिया गया एवं उनके आंदोलन को रोकने के लिए दबाव डाला। उन्हें बिना किसी प्रयास के अप्रेल, 2013 में रिहा कर दिया गया और डूंगरपुर राज्य छोड़ने का आदेश दिया गया।

गोविन्दगिरि और उनके अनुयायियों ने सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से मगरगढ़ नामक स्थान पर आश्रय लिया, जो बड़वारा और सनथ के पूर्व राज्यों की सीमाओं पर एक पहाड़ी क्षेत्र था। बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सनथ और बैरिया राज्यों के सैनिकों सहित स्थानीय और ब्रिटिश सैनिकों द्वारा मंगर की घेराबंदी की गई थी। 17 नवम्बर, 1913 को सैनिकों ने मंगर पर हमला किया। इस कार्रवाई में कई भीलों की मौत हो गई और गोविन्दगिरि को गिरफ्तार कर 2 फरवरी, 1914 को एक विशेष ट्रिब्यूनल ने गोविन्दगिरि को फाँसी की सजा सुनाई गई। बाद में इसे आजीवन कारावास में बदल दिया गया। वर्ष 1919 में इस शर्त पर जेल से रिहा किया गया कि वह राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेंगे। 30 अक्टूबर, 1931 को अपनी मृत्यु तक वह गुजरात के पंचमहल जिले में ही रहे थे।

केसरी सिंह बारहठ (21 नवम्बर, 1872 – 14 अगस्त, 1941) : एक कवि और स्वतंत्रता सैनानी का जन्म 21 नवम्बर, 1872 को शाहपुरा रियासत के देवखेड़ा गाँव में एक चारण समाज के परिवार में हुआ। उनके पिता श्री कृष्ण सिंह बारहट एवं माता वख्तावर कँवर का निधन उनके बाल्यकाल में हो गया। दादी माता शृंगार कँवर के ममत्व एवं संस्कारों भरे शैशवकाल में पले। प्रारम्भिक शिक्षा शाहपुरा में महन्त सीताराम एवं औपचारिक शिक्षा उदयपुर में काशी के विद्वान पंडित गोपीनाथ शास्त्री ने

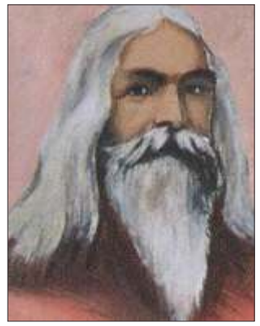

संस्कृत परिपाटी में आरम्भ करायी। उस समय के उत्कृष्ट बौद्धिक मापदण्ड के अनुसार केसरी सिंह जी ने पूरा ''अमरकोश'' कंठस्थ कर लिया था। केसरी सिंह ने संस्कृत एवं हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं बंगला, मराठी एवं गुजराती का भी पर्याप्त अध्ययन किया। ज्योतिष, गणित एवं खगोल शास्त्र में उनकी अच्छी पकड़ थी। केसरी सिंह ने राजस्थान के क्षत्रियों और अन्य लोगों को ब्रिटनी गुलामी के विरुद्ध एकजुट, शिक्षित एवं जागृति लाने के लिए 1903 से सक्रिय रूप से कार्य किया। भारतीय स्वतंत्रता सैनानियों का विविध प्रकार से समर्थन किया एवं देश के शीर्ष क्रांतिकारियों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रहे। सन् 1912 में राजपूताना में ब्रिटिश सी. आई.डी. द्वारा निगरानी रखे जाने वाले व्यक्तियों में राष्ट्रीय अभिलेखागार की सूची के अनुसार सबसे ऊपर अंकित रहा। शाहपुरा के राजा नाहर सिंह के सहयोग से 2 मार्च, 1914 को उन्हें गिरफ्तार कर प्यारेलाल नामक एक सुधि की हत्या और दिल्ली–लाहौर षड़यंत्र केस में राजद्रोह का आरोप लगाकर 20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा देकर बिहार की हजारीबाग जेल में डाल दिया गया। ब्रिटिश सरकार उनके विरुद्ध राजनीतिक उद्देश्य से की गयी हत्या का जुर्म साबित कर उन्हें फाँसी देना चाहती थी। उन्हें यातनापूर्वक कारावास के साथ उनके समूचे परिवार पर विपत्ति की दोहरी मार पड़ी। उनकी पैतृक जागीर का गाँव, विशाल हवेली एवं चल–अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गयी। हजारीबाग जेल से अप्रेल, 1920 में छूटने के बाद उन्होंने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अपना संघर्ष जारी रखा और इसके लिए लिखते रहे। वर्ष 1920–21 में सेठ जमनालाल बजाज के बुलावे पर केसरी सिंह वर्धा गये। वहाँ विजय सिंह पथिक के साथ मिलकर ''राजस्थान केसरी'' नामक साप्ताहिक पत्रिका निकालना आरम्भ किया। विजय सिंह पथिक इसके संपादक थे। वर्धा में केसरी सिह महात्मा गाँधी के निकट संपर्क में आए। डॉ. भगवानदास, पुरुषोत्तमदास टण्डन, पुरुषोत्तम बाबू, गणेश शंकर विद्यार्थी, चन्द्रधर शर्मा, गोपाल सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, अर्जुनलाल सेठी आदि वर्धा में उनके अन्य साथी थे। अगस्त, 1941 के प्रारम्भ में केसरी सिंह जी ज्वराकांत हुए। उनकी पौत्री राजलक्ष्मी के संस्मरण के अनुसार अंतिम सात दिनों में दाता (केसरी सिंह जी) निरन्तर गीता और उपनिषदों के श्लोक ही बोला करते थे। उसी वर्ष 14 अगस्त को उन्होंने हरिओम तत्सत् के उच्चारण के साथ देह त्याग दी।

पिलर एवं पेडेस्टल चौक, जहाँ विभूतियों की मूर्तियाँ स्थापित की जायेगी

पिलर एवं पेडेस्टल चौक : पिलर एवं पेडेस्टल चौक पर उच्च स्तर का प्लास्तर किया जाना चाहिये जिससे इनके किनारे सूत–सावल में दिखें। पेडेस्टल एवं पेडेस्टल चौक पर ग्रेनाइट के पतले स्लेब एवं उसके साथ स्टील की रैलिंग लगाई जा रही है। उदयपुर में अन्य पार्कों, हॉस्पीटल्स आदि स्थलों पर ग्रेनाइट के कार्यों को देखते हुए ग्रेनाइट 5–10 वर्षों में ही उखड़ जाने की संभावना रहती है। नगर विकास प्रन्यास फतहसागर की पाल एवं सहेलियों की बाड़ी में निर्मित सुन्दर छतरियों का गहराई से अध्ययन करें, तो आज भी पत्थर, संगमरमर, ग्रेनाइट आदि से ऐसी ही सुन्दर छतरियाँ बनाई जा सकती हैं। इनका न्यूनतम् रखरखाव, अधिक स्थायित्व एवं विरासत में मिली संरचना के आधार पर ही निर्माण होना चाहिये। फतहसागर पाल पर बनी 100 वर्ष से भी अधिक पुरानी छतरियाँ आज इसका सटीक उदाहरण हैं। स्टील रेलिंग की इस प्रकार की संरचना में कोई आवश्यकता नही हैं और न ही यह सुरक्षित है तथा न ही ये स्थायी रूप से टिक पायेगी।

विभूति पार्क के उत्तरी छोर पर 9 पीलर एवं पेडस्टल चौक जहाँ विभूतियों की सुन्दर मूर्तियाँ स्थापित किया जाना प्रस्तावित है।

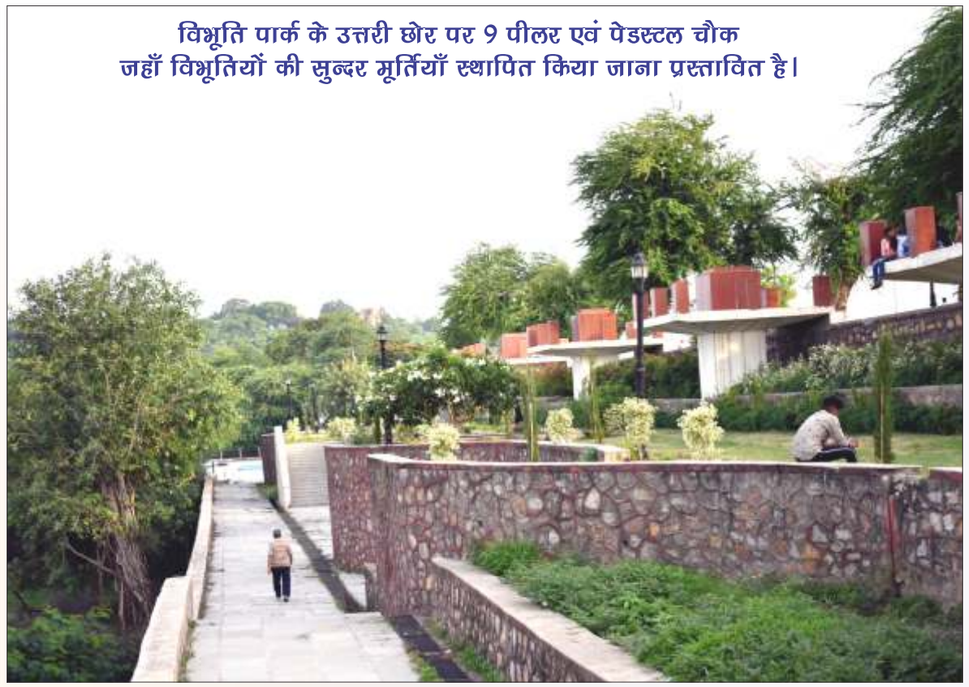

विजय सिंह पथिक (27 फरवरी, 1882 से 28 मई, 1954) : विजय सिंह पथिक उर्फ भूप सिंह गुर्जर एक प्रमुख स्वतंत्रता सैनानी थे। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के गुढ़ावली कला गांव में एक गुर्जर परिवार में हुआ था। बुलंदशहर जिले में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में अपने दादा इन्द्रसिह और अपने पिता हमीर सिंह जी के सिपाही विद्रोह में योगदान ने विजय सिंह पथिक को देश की आजादी में योगदान देने के लिए प्रभावित किया। पथिक जी पर उनकी माँ कमल कुमारी के संस्कारित जीवन का गहरा प्रभाव पड़ा।

विजय सिंह पथिक किशोरावस्था में ही क्रांतिकारी संगठन में शामिल हो गए। भारत में ब्रिटिश शासन के खिलाफ सक्रिय भाग लिया और राजस्थान में स्वतंत्रता आन्दोलन की मशाल जलाई। उनका संपर्क रासबिहारी बोस और शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि क्रांतिकारियों से हो गया था। 1915 में लाहौर अथवा फिरोजपुर षड़यंत्र के बाद उन्होंने अपना असली नाम भूप सिंह से बदलकर विजय सिंह पथिक रख दिया तथा

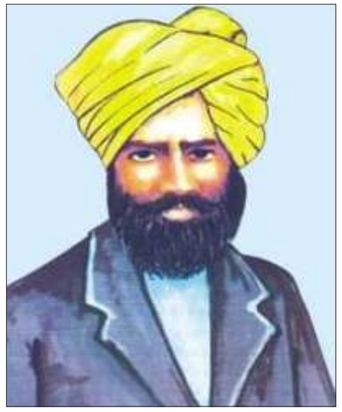

मृत्युपर्यन्त उन्हें इसी नाम से जाना जाता रहा। स्वतंत्रता सैनानी के साथ पथिक एक कवि, लेखक और पत्रकार भी थे। वे राजस्थान केसरी और नवीन राजस्थान के संपादक थे। उन्होंने अपने हिन्दी संस्करण में स्वतंत्र साप्ताहिक, राजस्थान सन्देश और अजमेर से नव सन्देश शुरू किया था। सन् 1915 में राव साहब के साथ उनको भी टाडगढ़ में नजरबंद कर बंदी बनाकर रखा गया था, जहां से वे फरार हो गये और विजयसिंह पथिक छद्म नाम से मेवाड़ में सक्रिय हुए। साधु सीताराम दास के नेतृत्व में 1913 में बिजौलिया के किसानों ने अपना विरोध प्रकट करते हुए भारी भूमि कर जागीरदारों को देने से इंकार कर दिया। जागीरदारों द्वारा भारी कर के साथ बेगार ली जाती थी। साधु सीताराम दास के आग्रह पर विजयसिंह पथिक ने बिजोलिया आन्दोलन का नेतृत्व करना स्वीकार किया। उनकी उपस्थिति से किसानों का उत्साह बढ़ गया। पथिकजी के नेतृत्व में संचालित हुए बिजोलिया आन्दोलन को इतिहासकार देश का पहला सत्याग्रह मानते हैं।

बिजोलिया आन्दोलन अन्य क्षेत्र के किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया था। सन् 1920 में पथिक जी के प्रयत्नों से अजमेर में ''राजस्थान सेवा संघ'' की स्थापना हुई। शीघ्र ही इस संस्था की शाखाएँ पूरे प्रदेश में खुल गई। इस संस्था ने राजस्थान में बेगूँ, पारसोली, भीण्डर, बाँसी और उदयपुर में कई जन शक्तिशाली आन्दोलनों का संचालन किया। सन् 1920 में पथिक जी अपने साथियों के साथ कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में शामिल हुए और बिजोलिया के किसानों की दुर्दशा और देशी राजाओं की निरंकुशता को दर्शाती हुई एक प्रदर्शनी का आयोजन किया। गाँधी जी पथिक जी के बिजोलिया आंदोलन से बहुत प्रभावित हुए। परन्तु गाँधीजी का रूख देशी राजाओं और सामन्तों के प्रति नरम ही बना रहा। कांग्रेस और गाँधीजी यह समझने में असफल रहे कि सामन्तवाद साम्राज्यवाद का ही एक स्तम्भ है और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विनाश के लिए साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के साथ–साथ सामन्तवाद विरोधी संघर्ष भी आवश्यक है। गाँधीजी ने अहमदाबाद अधिवेशन में बिजोलिया के किसानों को क्षेत्र छोड़ देने की सलाह दी। पथिक जी इससे सहमत नहीं थे।

बिजोलिया आन्दोलन अन्य क्षेत्र के किसानों के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन गया एवं राजस्थान में किसान आन्दोलन की लहर चल पड़ी। इससे ब्रिटिश सरकार डर गई। सरकार ने ए.जी.जी. हॉलैण्ड को ''बिजोलिया किसान पंचायत बोर्ड'' और ''राजस्थान सेवा संघ'' से बातचीत करने के लिए नियुक्त किया। शीघ्र ही दोनों पक्षों में समझौता हो गया जिसके तहत किसानों की अनेक माँगे मान ली गयी।

गाँधीजी ने पथिक जी के बारे में कहा था – ''और लोग सिर्फ बातें करते हैं परन्तु पथिक एक सिपाही की तरह काम करता है।'' उनके काम को देखकर ही उन्हें राजपूताना व मध्य भारत की प्रांतीय कांग्रेस का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। पथिक जी जीवनपर्यन्त निःस्वार्थ भाव से देश सेवा में जुटे रहे। भारतमाता का यह महान् सपूत 28 मई, 1954 में चिर–निद्रा में सो गया। भारत सरकार ने विजय सिंह पथिक की स्मृति में डाक टिकट भी जारी किया।

प्रस्ताव : विभूति पार्क पाल की मुख्य सड़क से 12–15 फीट नीचे क्यों निर्मित किया गया? यह एक सोचनीय विषय है। काश! पाल के पूर्वी छोर पर मजबूत दीवार बनाकर मध्य भाग को सड़क के स्तर तक झील से उपलब्ध मिट्टी या विशेषज्ञों के सुझाव के अनुसार भराव से भर दिया जाता तो अधिक उपयुक्त रहता। फतहसागर की पाल की संरचना भी उदयसागर, जयसमन्द, राजसमन्द आदि तालाबों की तर्ज पर ही की गई थी। लेकिन फतहसागर पाल की पूर्वी तट की दीवार को एक निश्चित ऊँचाई तक बनाकर मिट्टी की पाल एवं उस पर कीकर के वृक्ष लगाकर मजबूत आकृति दी गई। विभूति पार्क निर्माण के समय उदयसागर, जयसमन्द एवं राजसमन्द की तर्ज पर पूर्वी दीवार को मजबूती प्रदान करने के साथ ऊँचा उठाया जा सकता था। राष्ट्रीय झील सुधार परियोजना के अन्तर्गत प्राप्त बजट से फतहसागर झील का डिसिल्टेशन कराया गया एवं उस पर करीब 6 करोड़ रुपये खर्च किये गये। इस पाल पर भराव के लिए मिट्टी इस झील के डिसिल्टेशन से प्राप्त की जा सकती थी। विभूति पार्क के अन्तर्गत पूर्व स्थित मिट्टी की पाल को संरक्षित रखने हेतु पत्थर की पिचिंग के साथ पार्क में कई स्थायी निर्माण किये गये उस खर्च से एक मजबूत एवं सुरक्षित पूर्वी दीवार बनाई जा सकती थी। इस संरचना से फतहसागर पाल अधिक मजबूत एवं विभूति पार्क भी अधिक आकर्षक एवं उपयोगी होता।

विभूति पार्क का विकास उपरोक्तानुसार सुनियोजित रूप से किया जाता और उसमें अच्छे उद्यान के साथ आधुनिक भारतीय संस्कृति आधारित थीम बेस संगीतमय फव्वारें, पीपीपी मोड़ पर लगाये जा सकते थे। प्रत्येक दिन एक निश्चित समय पर करीब 45 मिनिट्स के लिए उक्त फव्वारें पर्यटकों एवं स्थानीय शहरवासियों को निश्चित राशि के टिकिट देकर दिखाये जाते तो ये स्वपोषित होते। फतहसागर पाल पर पर्यटकों की संख्या में भी कई गुणा वृद्धि होती।

विभूति पार्क में स्थित फव्वारों को अहमदाबाद स्थित स्वामी नारायण अक्षरधाम मन्दिर में "Katha Parishad" के थीम पर आधारित "The Sat-Chit-Anand-Water-Show" की भांति 45 मिनिट्स के फव्वारें की तर्ज पर विकसित किया जाता तो बेहतर होता।

The Sat-Chit-Anand-Water-Show" . स्वामी नारायण अक्षरधाम मन्दिर, अहमदाबाद

दी दुबई फाउण्टेन : इसके अतिरिक्त फतहसागर झील में पानी की सतह पर दुबई स्थित बुर्ज खलीफा टावर के नीचे खलीफा लेक पर ''दी दुबई फाउण्टेन'' की तर्ज पर फव्वारें स्थापित किये जाने चाहिये। इन कार्यों से फतहसागर झील का दर्शनीय स्वरूप कई गुना बढ़ जायेगा।

नीमच माताजी मन्दिर : यह मन्दिर फतहसागर झील के उत्तर में स्थित है। 767 मीटर ऊँची नुकीली चोटी वाली पहाड़ी (तिखलिया पहाड़ी) जिसे देवाली का मगरा भी कहा जाता है, पर अम्बाजी का एक मन्दिर (नीमच माता मन्दिर) स्थापित है। 'नीमच' नाम का तात्पर्य नीम से उत्पन्न (नीम की जायी) है। विश्वास किया जाता है कि इसका निर्माण कायस्थ समुदाय द्वारा 1650 ई.सं. में किया गया था। इस ऊँची पहाड़ी की चोटी पर स्थित मन्दिर की यात्रा गिर्वा घाटी तथा उसके विकास सी स्फूर्तिदायक झाँकी प्रदान करती है। इस मन्दिर परिसर से फतहसागर, इसकी पाल, नेहरू गार्डन, सौर वेधशाला, मोती मगरी, सहेलियों की बाड़ी एवं शहर के बाहरी स्वरूप का काफी भव्य एवं मनोहारी दृश्य परिलक्षित होता है। इस पहाड़ी से सभी कांटेदार जंगली बबूल के पेड़ों को हटाकर नीम के पेड़ लगाने से यह पहाड़ी वर्षभर हरी–भरी बनी रहेगी।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार उदयपुर की कमला वैष्णवी शक्ति है–नीमच माता, जिनसे हमें सिद्ध है जल, हरित और प्राकृतिक सम्पदा। नीमच माता को नवदुर्गा और दस महाविद्याएँ, अनन्त सिद्धियाँ देने वाली कहा गया है। दसवें स्थान पर कमला वैष्णवी शक्ति है, जो प्राकृतिक सम्पदाओं की अधिष्ठात्री देवी लक्ष्मी है। उदयपुर में फतहसागर किनारे मानो कमला वैष्णवी के रूप में माँ नीमच माता विराजित है जिनसे यहाँ अथाह जल, हरित पर्वत श्रृंखला और प्राकृतिक सौन्दर्य सम्पदा है। शहरवासियों के सुख–समृद्धि का आधार भी यही सब हैं। ऊँची पहाड़ी से नीमच माता इसी सिद्धि का आशीष देती प्रतीत होती है। एसआईईआरटी के नीचे बने पार्किंग स्थल से भविष्य को ध्यान में रखते हुए पूर्ण नियोजन के साथ नीमच माता मन्दिर तक पर्यटकों एवं शहरवासियों की सुविधा के लिए रोप–वे बनाया जा रहा है।

चारों ओर हरियाली से आच्छादित देवाली का मगरा पर प्रतिस्थापित नीमच माता मन्दिर

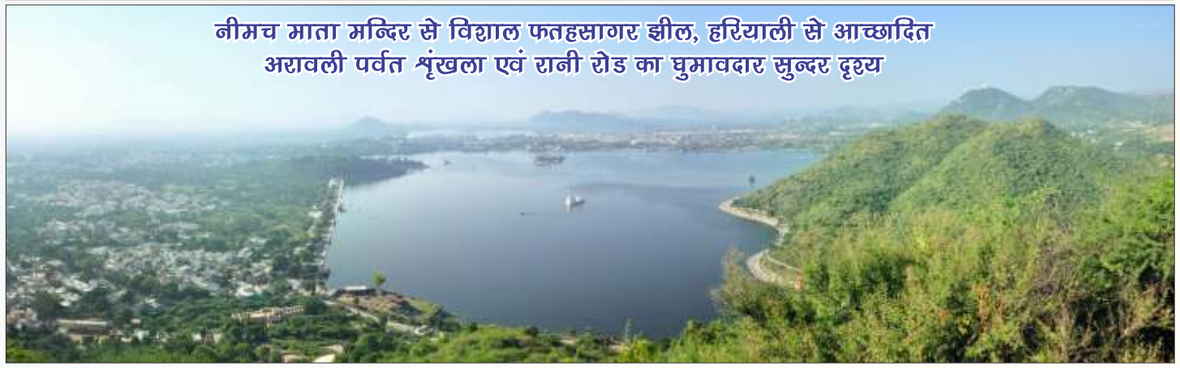

नीमच माता मन्दिर से विशाल फतहसागर झील, हरियाली से आच्छादित अरावली पर्वत श्रृंखला एवं रानी रोड का घुमावदार सुन्दर दृश्य

उदयपुर सौर वेधशाला : उदयपुर सौर वेधशाला को एशिया में सबसे अच्छा सौर अवलोकन स्थल माना जाता है। फतहसागर झील में एक द्वीप पर स्थित सौर वेधशाला दुनिया में द्वीप पर स्थित कुछ सौर वेधशालाओं में एक विशिष्ट स्थान रखती है। यह वेधशाला दक्षिणी कैलिफोर्निया में बिग बीयर लेक में स्थित सौर वेधशाला के मॉडल के अनुसार डिज़ाइन की गई थी। 1975 में, अहमदाबाद के वेधशाला ट्रस्ट के तहत डॉ. अरविंद भटनागर द्वारा उदयपुर सौर वेधशाला की स्थापना की गई थी। यह संगठन मूल रूप से ज्योतिषीय गतिविधियों के लिए प्रतिष्ठित था। हालांकि यह सौर वेधशाला आधुनिक विज्ञान में अनुसंधान करने के उद्देश्य से स्थापित की गई थी। उदयपुर की सौर वेधशाला भारत में सौर भौतिकी को विकसित करने के लिए एक आदर्श केन्द्र बन गया है। पानी से घिरा होने के कारण यह वेधशाला सौर अध्ययन के लिए एक अनुकूल वातावरण प्रदान करती है। चूंकि वायु की गति द्वीप पर जमीन की तुलना में कम होती है, इसलिए सूर्य की स्पष्ट छवियाँ प्राप्त की जा सकती हैं। राजस्थान में स्थित इस वेधशाला का एक लाभ यह भी है कि यहाँ अधिकांश दिन बादल रहित होते हैं। ये सभी कारक सूर्य के निकाले गए चित्रों की गुणवत्ता में आशातीत वृद्धि करते हैं।

इस वेधशाला में दूरबीनों की एक श्रृंखला है जो सौर अवलोकनों की उत्कृष्ट गुणवत्ता प्रदान करती हैं। वेधशाला अपने स्टोर हाउस में 'सोलर वेक्टर मैग्नेटोग्राफ' नामक एक नया उपकरण जोड़ा है। यह उपकरण सक्रिय क्षेत्रों के चुम्बकीय क्षेत्र का निर्धारण करके भविष्य के अनुसंधान कार्यक्रम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसकी स्थापना की अवधि 25 वर्ष से अधिक हो चुकी है, तथा अपने निर्वाह के 22 वर्षों में एक संपूर्ण सौर चक्र देखा है। अब यह अगले सौर चक्र को देख रहा है।

सौर अध्ययन हेतु ऑस्ट्रेलिया और स्पेन के बीच विशाल अनुदैर्ध्य अन्तर को इस वेधशाला द्वारा भरा गया है। यह वेधशाला कई अन्तरराष्ट्रीय संयुक्त कार्यक्रमों में नियमित सौर कवरेज के लिए एक माध्यम भी प्रदान करती है जिसमें GONG (ग्लोबल ऑसिलेशन नेटवर्क ग्रुप) भी शामिल है। वर्ष 1981 से यह वेधशाला भारत सरकार के अंतरिक्ष विभाग के लिए भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला (अहमदाबाद) के नियंत्रण में है।

GONG परियोजना के तहत इस वेधशाला को दुनिया की छः वेधशालाओं में गिना गया है जो कि 24 घंटे सूर्य को देखती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रीय विज्ञान फाउण्डेशन जो सौर मण्डल में कम्पन्न का अध्ययन करता है, ने GONG की इस परियोजना को प्रायोजित किया है। इसलिए यह वेधशाला राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय महत्व का स्थल है।

फतहसागर स्थित सौर वेधशाला में अलग से एक डोम का निर्माण कर एशिया की सबसे बड़ी सौर दूरबीन ''मल्टी एप्लीकेशन सोलर टेलीस्कॉप (मास्ट)'' को स्थापित किया गया है। इस टेलीस्कोप का निर्माण बेल्जियम में हुआ। इस दूरबीन से सौर वैज्ञानिक सूर्य का अधिक गहनता से अध्ययन करने में सक्षम हुए। मास्ट दूरबीन करीब 12 टन वजनी है। टेलीस्कोप मिरर की साईज 50 से.मी. है। इससे चार अन्य उपकरण जुड़े हैं, जो सूर्य की गतिविधियों पर नजर बनाये रखते हैं।

सौलर वेधशाला

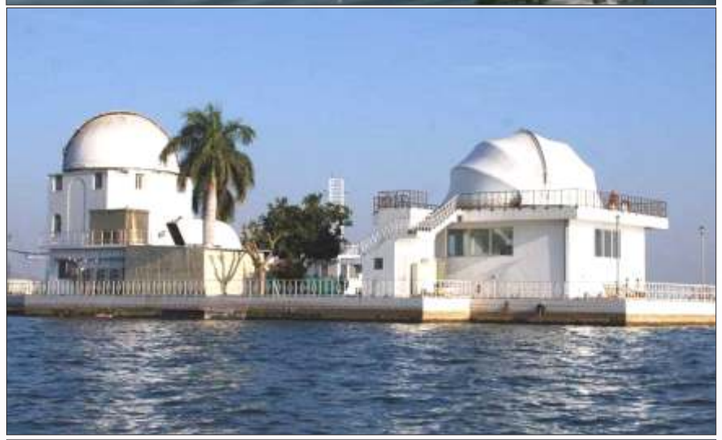

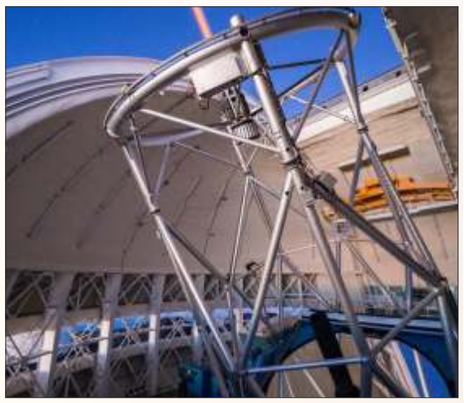

मल्टी एप्लीकेशन सोलर टेलीस्कॉप (मास्ट)

फतहसागर पर पक्षी स्थल : रानी रोड़ के साथ सौर वेधशाला से संजय गार्डन रानी रोड़ तट के साथ नेहरू गार्डन के मध्य संपूर्ण क्षेत्र को स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों के आवास स्थल के रूप में विकसित किया जाना चाहिये। यहाँ मिट्टी के छोटे टापू, घौंसला स्थल, पक्षी आनन्द स्थल का निर्माण कर इस क्षेत्र को ''नो बोटिंग–नो फिशिंग'' जोन घोषित किया जाना चाहिये। इस क्षेत्र का इस प्रकार से विकास किया जाना चाहिये कि जिन देशी एवं प्रवासी पक्षियों ने फतहसागर आना बन्द कर दिया, उनका कलरव पुनः सुनाई देने लगे। इस हेतु रानी रोड पर ध्वनि प्रदूषण को न्यूनतम् करना भी आवश्यक होगा। रानी रोड के पूर्वी छोर एवं राजीव गांधी पार्क के सामने पक्षी आवास स्थल के उद्देश्य से चोकोर मिट्टी के टापू विकसित किये गये। यह कार्य प्रशंसनीय है। काश! इन्हें प्राकृतिक रूप से गोल आकार देकर अधिकतम् जल स्तर से ऊँचे बनाये जाते, तो अधिक उपयुक्त रहता।

इन पेड़ों के साथ लघु गोल टापू विकसित किये जाने चाहिये

फतहसागर में प्रवासी पक्षियों का डेरा

फतहसागर का रानी रोड से सटा हुआ पूर्वी–दक्षिणी छोर–स्थानीय एवं प्रवासी पक्षियों हेतु संरक्षित आवास गृह के रूप में विकसित किया जाना चाहिये।

रानी रोड पर अविकसित पार्क

प्राकृतिक रूप से बना टापू

कृत्रिम रूप से बना टापू

पानी में डूबा हुआ कृत्रिम टापू

छिछला क्षेत्र सुरक्षित रखिए, यह पक्षियों का दाना-पानी स्थल है।

राजीव गाँधी पार्क : फतहसागर के पश्चिमी छोर पर झील के किनारे रानी रोड़ पर ढलान युक्त भूमि पर यह विशाल पार्क स्थित है। यह पार्क पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गाँधी जो कि राष्ट्र के सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री थे, की स्मृति में बनाया गया था जिसका उद्घाटन 8 मई, 2008 को किया गया। इसमें स्वर्गीय राजीव गाँधी की एक आदमकद मूर्ति स्थापित है। यह पार्क पौधों के महत्त्व, वन्य जीवों के साथ वन्य जीवन और जल संरक्षण के स्वर्गीय राजीव गाँधी के विजन को दर्शाता है, क्योंकि ये सभी मानव जीवन को प्रभावित करते हैं। इस पार्क का भू निर्माण एवं डिजाइन मैसूर के वृन्दावन गार्डन से प्रेरित हैं। यह पर्यटकों के साथ–साथ स्थानीय शहरवासियों के मध्य लोकप्रिय है। परिवार एवं युवा जोड़ों के लिए यह पार्क एक अच्छा विकल्प है। साथ ही इस पार्क में बच्चों के लिए भी एक विशेष मनोरंजन स्थल बनाया गया है। इसमें सुन्दर फव्वारें, पेड़, मन्डप और वन्य जीवों और जानवरों की आकर्षण झाँकियाँ बनी हुई हैं। झील के किनारे पर पार्क में प्रवेश करने से पहले संगमरमर या ग्रेनाइट के सुन्दर क्यूब्स एवं अन्य सुन्दर कलाकृतियाँ आगन्तुकों को आकर्षित करती हैं, जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता है। यह पार्क अपनी विशालता, स्वच्छता एवं शांत वातावरण के लिए सभी का पसन्दीदा स्थान है। यह पार्क एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल शिल्पग्राम के पास ही स्थित है।

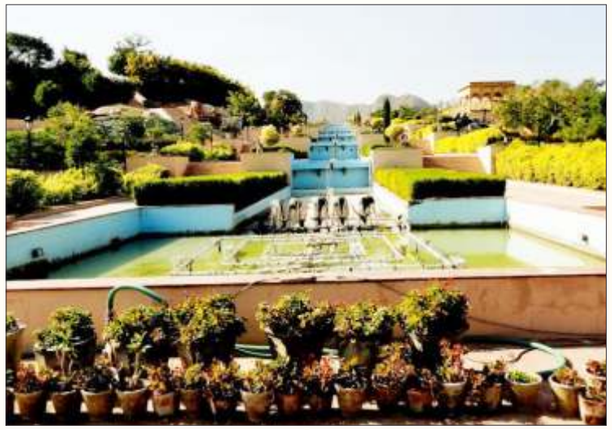

संजय गाँधी पार्क : फतहसागर के दक्षिणी तट पर स्थित एक छोटी पहाड़ी पर बहु–उद्देशीय सुन्दर पार्क का निर्माण संजय गाँधी की स्मृति में करवाया गया। यह पार्क चिल्ड्रन पार्क के साथ फतहसागर के विशाल परिदृश्य, अरावली की पहाड़ियाँ एवं झील में विचरते जलीय पक्षियों की ऊँचाई से अठखेलियाँ करने के मनोहरी दृश्य देखने के लिए एक उपयुक्त स्थल है। पार्क का वातावरण बहुत ही शांत एवं सुरम्य है। इसमें बच्चों के मनोरंजन के लिए एक दिलचस्प चिल्ड्रन पार्क भी उपलब्ध है। सभी दिशाओं में स्टेप्ड फव्वारें एवं मंडप बहुत ही आकर्षक हैं।

संजय गाँधी का जन्म 14 दिसम्बर, 1946 को नई दिल्ली में भूतपूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी और फिरोज गाँधी के बेटे के रूप में हुआ। उन्होंने ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग की योग्यता अर्जित कर पायलट बनने का लाइसेन्स भी प्राप्त किया। संजय गांधी एक लोकप्रिय भारतीय नेता थे। वे नेहरू–गाँधी परिवार के सदस्य थे। उन्होंने सक्रिय राजनीतिक दशक में भारतीय राजनीति को अपनी सोच और कार्यों से प्रभावित किया। 23 जून, 1980 को नई दिल्ली के सफदरजंग एयरपोर्ट के पास प्लेन क्रेश हो जाने से उनकी मृत्यु हो गयी।

अविकसित पार्क एवं ओपन जिम : फतहसागर के दक्षिणी किनारे पर रानी रोड छोर पर स्थित छोटी तलाई के सामने एक छोटी पहाड़ी पर एक अविकसित पार्क है। पिछले कुछ वर्षों से यह इसी अवस्था में है। ऊँचाई पर होने से इसकी स्थिति अद्वितीय है। यहाँ से फतहसागर झील के सुन्दर स्वरूप को दृष्टिपात करने के साथ जलीय पक्षियों को विचरण एवं अठखेलियां करते हुए देखा जा सकता है। इसके टॉप पर बड़े फव्वारें के लिए स्थान बना हुआ है। इसके साथ एवं नीचे भूतल पर चारों ओर पक्का भ्रमण पाथवे है। इसको बहुत सुन्दर रूप से विकसित किया जा सकता है। नीचे भ्रमण पाथवे के साथ छोटे फव्वारें एवं ढलान पर टेरेस बनाकर सुन्दर मौसमी एवं सदाबहार फूल लगाये जा सकते हैं। टॉप पर संगीत की कर्णप्रिय धुन बिखेरते हुए रंग–बिरंगी रोशनी से सुसज्जित फव्वारे स्थापित किये जाने चाहिये।

नगर निगम, उदयपुर ने इस अविकसित पार्क के मध्य क्षेत्र को विकसित कर स्मार्ट सिटी परियोजना के अन्तर्गत प्रातः एवं सायंकाल भ्रमण पर आने वाले शहरवासियों एवं पर्यटकों के लिए कई प्रकार के उपकरणों से सुसज्जित एक ओपन जिम स्थापित की है, यह कार्य प्रशंसनीय है। शहरवासियों के मध्य यह जिम लोकप्रिय भी हो रही है। कई बच्चे, युवा एवं बुजुर्ग इस जिम में व्यायाम करने आते हैं। हालांकि यह जिम दुर्दशा की भी शिकार होने लगी हैं। यहाँ लगे कुछ उपकरण टूटने लगे हैं। इनकी सुरक्षा, व्यवस्थित उपयोग, नियमित रखरखाव पर नजर रखने वाला कोई नहीं दिखता। नगर निगम को जिम प्रातः एवं सायंकाल एक निश्चित समय पर एक प्रशिक्षित ट्रेनर की उपस्थिति में ही खोलनी चाहिए। जिम एवं पार्क की सुरक्षा के लिए फ्रन्ट में सुन्दर दीवार बनाकर एक फाटक लगाने के साथ सीसीटीवी कैमरे से निगरानी की व्यवस्था होनी चाहिये। टूटे उपकरणों को मजबूत एवं उच्च गुणवत्ता वाले उपकरणों से परिवर्तित कर इसकी सुन्दरता को बनाये रखना चाहिये।

अविकसित पार्क एवं ओपन जिम स्थल

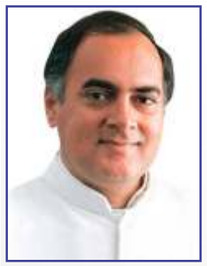

राजीव गाँधी भारत के सातवें एवं सबसे युवा प्रधानमंत्री बने एवं वर्ष 1984 से 1989 तक देश सेवा में समर्पित रहे। राजीव गाँधी का जन्म 20 अगस्त, 1944 में हुआ था। वह भारत के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी व स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू के नाती व भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी के बड़े पुत्र थे। उनके पिता का नाम फिरोज गाँधी था। राजीव गाँधी ने भारत एवं विदेश में शिक्षा प्राप्त कर इंडियन एयरलाइन्स में व्यावसायिक पायलट के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। बाद में इस कार्य को छोड़कर काँग्रेस पार्टी के माध्यम से देश की सक्रिय राजनीति में आगे आए एवं भारत के प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित किया। राजीव गाँधी एक समर्थ नेता थे। उन्होंने किसी भी परिस्थिति में अपना धैर्य नहीं खोया। उन्होंने भारत को सूचना प्रौद्योगिकी एवं कम्प्यूटरीकरण का सपना दिखाया। देश के इस सपूत की 21 मई, 1991 में मद्रास के निकट आत्मघाती हमला कर हत्या कर दी गयी। देश की एकता एवं अखण्डता के लिए राजीव गाँधी का यह बलिदान सदैव स्मरणीय रहेगा।

राजीव गाँधी पार्क का वृहद् स्वरूप

बोलार्ड पार्क : पर्यटकों के प्रमुख केन्द्र फतहसागर झील के दक्षिणी किनारे रानी रोड पर बोलार्ड पार्क स्थित है। इस पार्क में पूर्व उपराष्ट्रपति श्री भैरोसिंह शेखावत की प्रतिमा ऊँचे पेडस्टल पर स्थापित है। रानी रोड, संजय गार्डन, राजीव गांधी पार्क एवं शिल्पग्राम जाने वाले पर्यटक तथा शहरवासी इस पार्क में जरूर जाते हैं। इस पार्क का निर्माण नगर विकास प्रन्यास द्वारा बहुत व्यवस्थित रूप से किया गया है लेकिन रखरखाव के अभाव में यह अपनी लोकप्रियता खोता जा रहा है। इसमें प्रवेश और निकास के द्वार होने चाहिये जिससे रात्रि के समय प्रवेश वर्जित हो ताकि समाज कंटकों द्वारा इसे क्षति नहीं पहुंचायी जा सके।

बोलार्ड पार्क के विविध स्वरूप

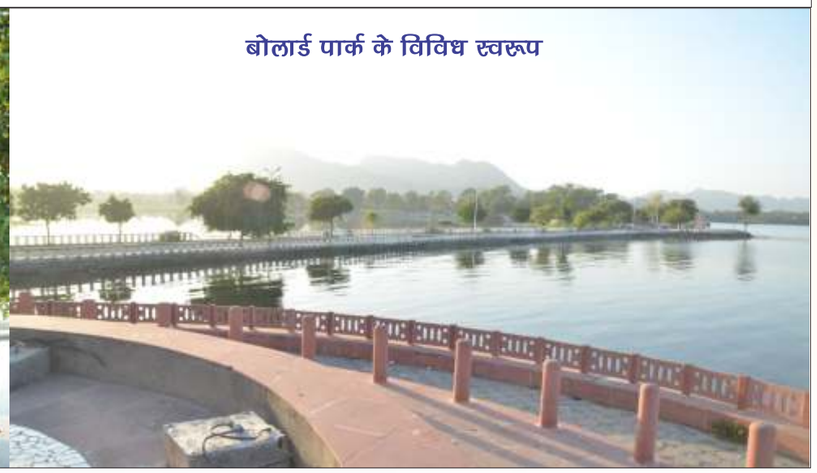

रानी रोड से फतहसागर झील का निखार : फतहसागर झील के रानी रोड छोर पर व्यवस्थित रिंग रोड के निर्माण से इसमें जीवंतता आ गई है। नियमित भ्रमण करने वाले शहरवासी फतहसागर पाल से रानी रोड तक चक्कर लगाते हैं। इस रिंग रोड पर जगह–जगह छोटे–छोटे सुन्दर स्थल विकसित करते हुए उन पर लगे स्कल्पचर इसकी खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं। यहाँ साइकिल ट्रेक अलग से बनाया गया है जो साइकिल चलाने के शौकीन लोगों को एक सुखद अहसास देता है। इसके नियमित रखरखाव के साथ व्यवस्थित प्रकाश व्यवस्था की आवश्यकता है।

स्कल्पचर्स से फतहसागर झील की सुन्दरता में निखार

श्री महाकालेश्वर सिद्ध धाम : फतहसागर की विशाल जल राशि के दक्षिण–पश्चिम में रानी रोड के किनारे पर 3.5 एकड़ से अधिक क्षेत्र में स्थित महाकालेश्वर सिद्ध धाम मेवाड़ में जन–श्रद्धा एवं धार्मिक आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है। यह मन्दिर नगर स्थापना से भी पुराना है। करीब 900 वर्ष पुराना यह मन्दिर एकलिंगनाथजी मन्दिर के समकालीन है। इतिहासविज्ञ प्रो. के.एस. गुप्ता के अनुसार 900 वर्ष पुराने इस मन्दिर के परमार राजवंशकालीन होने के साक्ष्य मिले हैं। मान्यता है कि महाकालेश्वर यहाँ स्वयंभू (स्वयं प्रकट) हुए और माना जाता है कि जहाँ भी स्वयंभू शिवलिंग होते हैं, वहाँ पूजा–अर्चना और लोगों की मान्यता के साथ–साथ ये शिवलिंग अमिट चमत्कारिक, पुण्यदायी और फलदायी होते हैं एवं सभी भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। मन्दिर पहली प्रार्थना के साथ प्रातः 5.30 बजे खुलता है तथा अंतिम प्रार्थना रात्रि 10.30 बजे होती है। इस मन्दिर की विशेषता यह भी है कि सवेरे मंगला, मध्याह्न, सायंकाल और रात्रि को चारों समय भक्तों को शिवलिंग के विग्रह के अलग–अलग रूप में दर्शन होते हैं। प्रार्थना में प्रतिदिन सैकड़ों भक्त शामिल होते हैं। विशेष अवसरों पर मन्दिर के पुजारियों द्वारा यहाँ रूद्राभिषेक भी किया जाता है। भगवान शिव के प्रतिष्ठित भक्त गुरु गोरखनाथ जैसे महान् संतों ने यहाँ पूजा की है। वर्ष 1998 तक सिर्फ 18 वर्गफीट में सीमित भगवान शिव के इस मन्दिर परिसर को अनुपम शिवधाम के रूप में विकसित करने एवं यहाँ पर स्थित पुरातन मन्दिर के जीर्णोद्धार की महत्त्वाकांक्षी योजना का श्रीगणेश श्रावणी पूर्णिमा विक्रम संवत् 2055 तद्नुसार 8 अगस्त, 1998 को हुआ। पुरातन मन्दिर के स्थान पर 3600 वर्गफीट में संगमरमर का भव्य 71 फीट ऊँचाई का शिखरबंध मन्दिर साकार रूप ले चुका है। इसके अतिरिक्त मन्दिर विशालता के साथ–साथ भव्य, स्मार्ट एवं बहुरूपी बनता जा रहा है। सार्वजनिक प्रन्यास मन्दिर श्री महाकालेश्वर के धर्मपरायण 8000 से अधिक सदस्य हैं जिनके आर्थिक सहयोग से ही यह मन्दिर पूर्णता की ओर विकसित हो रहा है।

मन्दिर के परिक्रमा मार्ग में एक्यूप्रेशर टाइल्स लगी हुई हैं ताकि धर्म–कर्म के साथ आरोग्य में भी वृद्धि हो सके। गर्भ–गृह में शिव पंचायत है, जहां भगवान विष्णु, सूर्य, गणेश और माँ दुर्गा को स्थापित किया गया है। मन्दिर के ईशान कोण में नवगृह मंडल है, जहाँ नौ देवों की सवा–सवा फीट ऊँची उनके मूल स्वरूप की प्रतिमाएँ 729 वर्गफीट प्लेटफार्म पर स्थापित हैं। मुख्य मन्दिर के लगभग 45 हजार वर्गफीट की परिधि में 500 से अधिक आकर्षक फव्वारें एवं इनको भव्यता देने के लिए संगमरमर के 32 हँस, 24 हाथी और 8 मोरों की आकृति के फव्वारें भी लगाये गये हैं। मन्दिर के पूर्वी द्वार के सामने स्थित पहाड़ी में 1000 फीट लम्बी भोलेनाथ की आकर्षक गुफा बनाई गई है। 10 फीट ऊँची और 10 फीट चौड़ी यह गुफा फतहसागर महाकाल के गंगा घाट तक जाती है। इसमें एक फीट कलकल बहते जल में श्रद्धालु और पर्यटक भगवान शिव की लीलाओं का बहुरंगी रोशनी में जीवन्त दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर के प्रवेश द्वार पर एक व्यवस्थित गौशाला का निर्माण भी किया गया है। मन्दिर के उत्तरी किनारे पर स्थित फतहसागर झील महाकालेश्वर सिद्ध धाम का जलाभिषेक करती हुई सी प्रतीत होती है। यह मन्दिर शहर के सर्वोत्तम धार्मिक, आध्यात्मिक, प्राकृतिक स्वरुप के साथ श्रेष्ठतम् पर्यटन स्थल बन गया है।

श्री महाकालेश्वर सिद्ध धाम भव्य मन्दिर

भव्य महाकालेश्वर सिद्ध धाम परिसर में चहुँओर स्थापित फव्वारें एवं प्रकाश व्यवस्था

महाकालेश्वर सिद्ध धाम परिसर में विकसित भव्य उद्यान – ध्यान एवं साधना हेतु उपयुक्त प्राकृतिक स्थली

गौशाला

महाकालेश्वर मन्दिर परिसर से फतहसागर रिक्त अवस्था में

महाकालेश्वर सिद्ध धाम परिसर से फतहसागर पूर्ण भराव अवस्था में
महाकालेश्वर का जलाभिषेक करती फतहसागर झील

सज्जनगढ़ : सज्जनगढ़ पैलेस गिर्वा घाटी की सबसे ऊँची पहाड़ी बाँसद्रह जो समुद्रतल से 936 मीटर एवं भूतल से 335 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। महाराणा सज्जनसिंह ने उष्णकाल की ऋतु में रहने के लिए 18 अगस्त, 1883 में उन्होंने इसकी नींव रखी तथा लगभग डेढ़ मंजिल ही बनी होगी कि 23 दिसम्बर, 1884 को उनका असामयिक स्वर्गवास हो गया। तत्पश्चात् उनके उत्तराधिकारी महाराणा फतहसिंह ने इसे 1898 ई.सं. में जनाना महल, दरवाजे, कोट, आदि बनवाकर इसे बहुत ही रमणीय महल के रूप में पूर्ण करवाया। इसे हिमशैल का एक शिखर कहने में भी अतिशयोक्ति नहीं होगी। अरावली की हरी–भरी पहाड़ियों से घिरी रंगभूमि गिर्वा घाटी की भू–आकृति के साथ उदयपुर शहर, मुख्य झीलें फतहसागर एवं पिछोला के साथ नदी–नालों एवं घाटी की ऊँची–नीची स्थलाकृति की विशेषताओं को देखने एवं समझने के लिए यह स्थान सर्वोत्तम उपयुक्त है। महाराणा फतहसिंहजी ने 1900 ई.सं. में इस घाटी में ओदी का भी निर्माण करवाया जिससे सज्जनगढ़ से पश्चिम की ओर देखा जा सकता था।

ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक महत्त्व के उपरान्त भी इसके रख–रखाव पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया था। राज्य सरकार द्वारा शहर की सबसे ऊँची पहाड़ी के ऊपर स्थित सज्जनगढ़ पैलेस पर पुलिस विभाग का वायरलेस नेटवर्क स्थापित किया गया, जिसे वर्तमान में अन्य स्थान पर स्थानान्तरित कर इसके मूल स्वरूप को पुनः स्थापित किया गया।

वर्तमान में वन विभाग द्वारा सज्जनगढ़ जंगल सफारी के रूप में इसका विकास किया जा रहा है। यह उदयपुर शहर की एक अतुलनीय विरासत है तथा इसके चहुँमुखी विकास एवं रख–रखाव पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत इसका जीर्णोद्धार एवं सौन्दर्यीकरण किया गया है।

Marble work can also be seen in balcony, flooring, parapets pillars at the Sajjangarh Palace with walls and arches finished marble like through "Ghutai" - marble paste-lime plastering, both of these structures are post 18th century constructions. Earlier, marble (the divine stone) was mostly used for the construction of idols, statuettes, temples and dams only, but had restricted use in residential houses/palaces, but never in toilets.

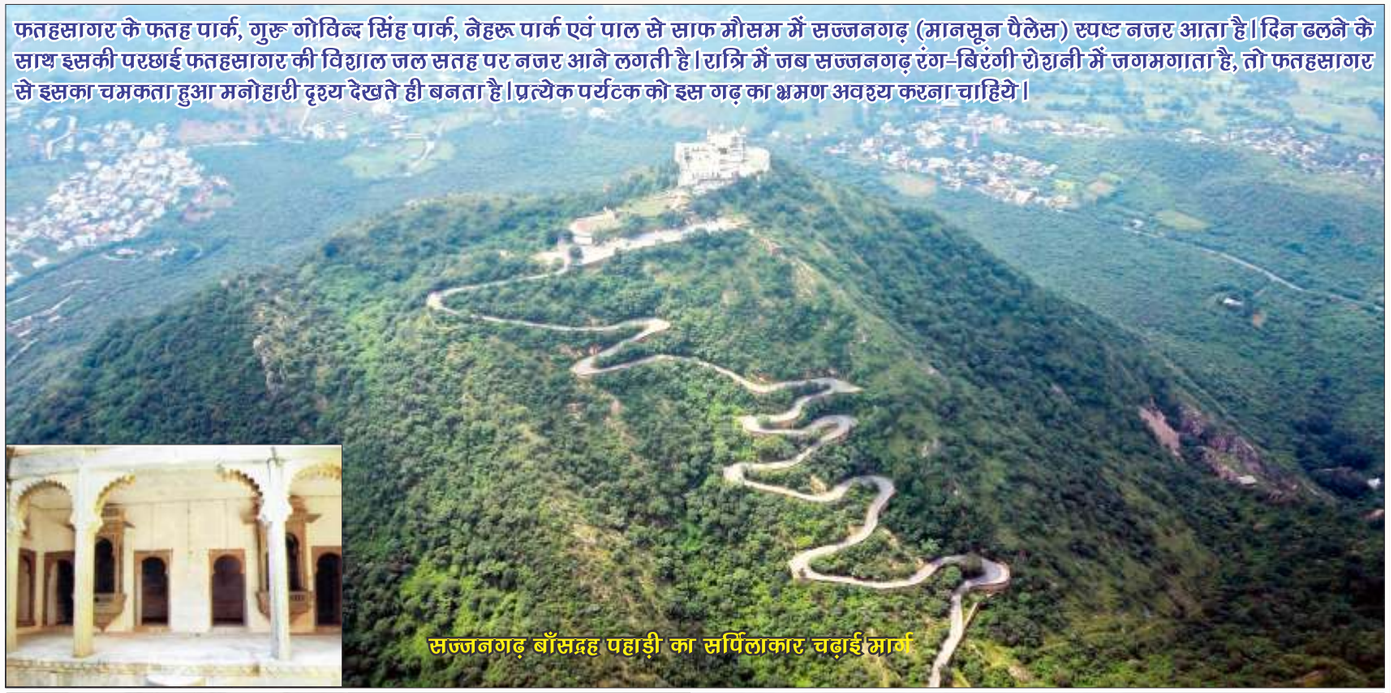

फतहसागर के फतह पार्क, गुरू गोविन्द सिंह पार्क, नेहरू पार्क एवं पाल से साफ मौसम में सज्जनगढ़ (मानसून पैलेस) स्पष्ट नजर आता है। दिन ढलने के साथ इसकी परछाई फतहसागर की विशाल जल सतह पर नजर आने लगती है। रात्रि में जब सज्जनगढ़ रंग-बिरंगी रोशनी में जगमगाता है, तो फतहसागर से इसका चमकता हुआ मनोहारी दृश्य देखते ही बनता है। प्रत्येक पर्यटक को इस गढ़ का भ्रमण अवश्य करना चाहिये।

सज्जनगढ़ बाँसद्रह पहाड़ी का सर्पिलाकार चढ़ाई मार्ग

सज्जनगढ़ की अन्दरूनी साज-सज्जा एवं मार्बल संरचनाएँ

सज्जनगढ़ – अग्रभाग

सज्जनगढ़ – रात्रिकालीन प्रकाशमान दृश्य

सज्जनगढ़ – संपूर्ण परिसर

सज्जनगढ़ – तिरंगी रोशनी में

सज्जनगढ़ – मानसून पैलेस से उदयपुर शहर एवं दोनों मुख्य झीलों का प्राकृतिक मनोहरी दृश्य

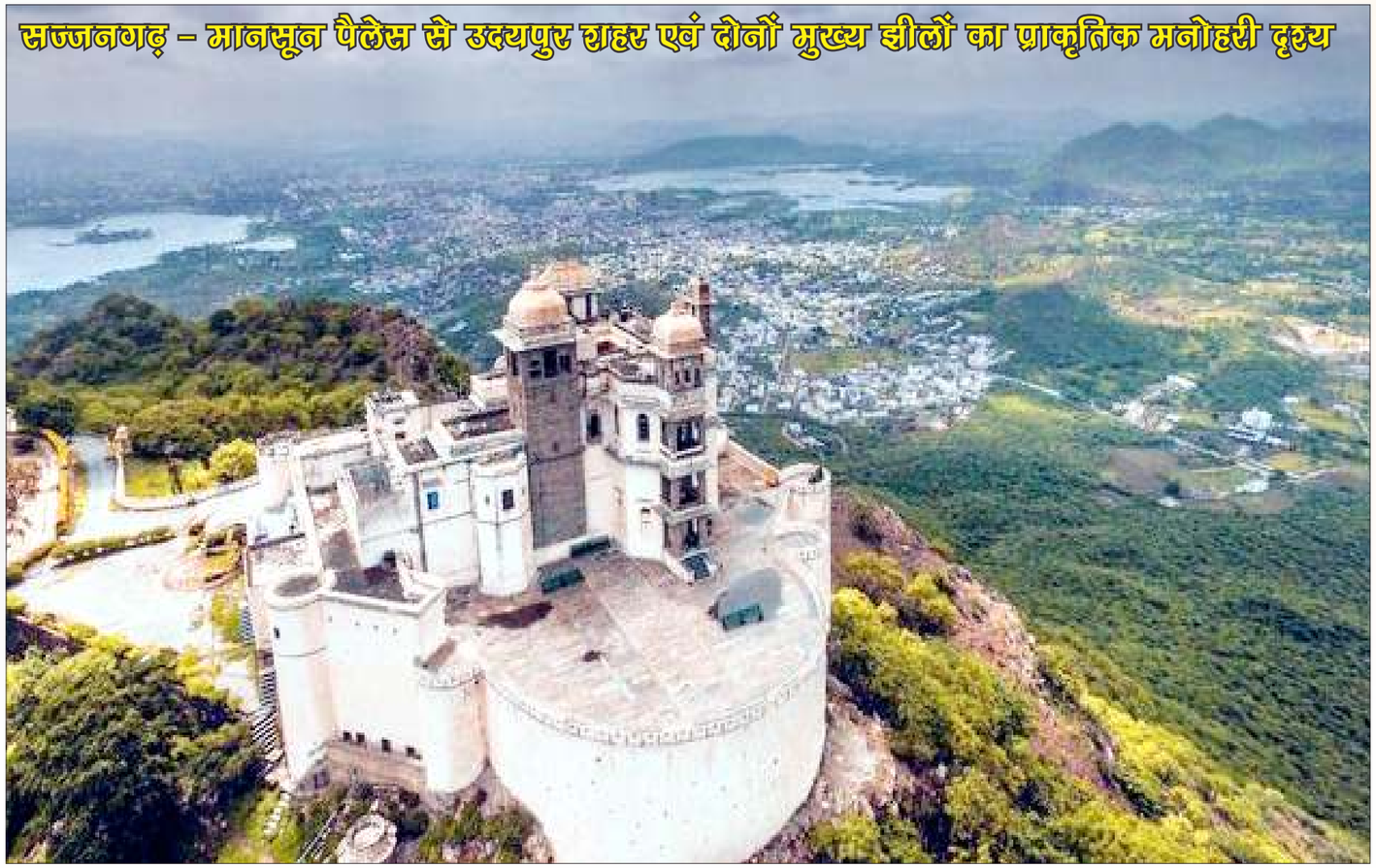

मानसून पैलेस बादलों से घिरा हुआ : सुन्दरतम् प्राकृतिक स्वरूप

सज्जनगढ़ से सूर्यास्त का सुन्दर दृश्य

बादलों से घिरी सज्जनगढ़ की पहाड़ियाँ

सज्जनगढ़ का मुख्य विशाल प्रांगण : उदयपुर के पूर्ण प्राकृतिक स्वरूप के साथ पिछोला एवं फतहसागर झील तंत्र का विहंगम दृश्य

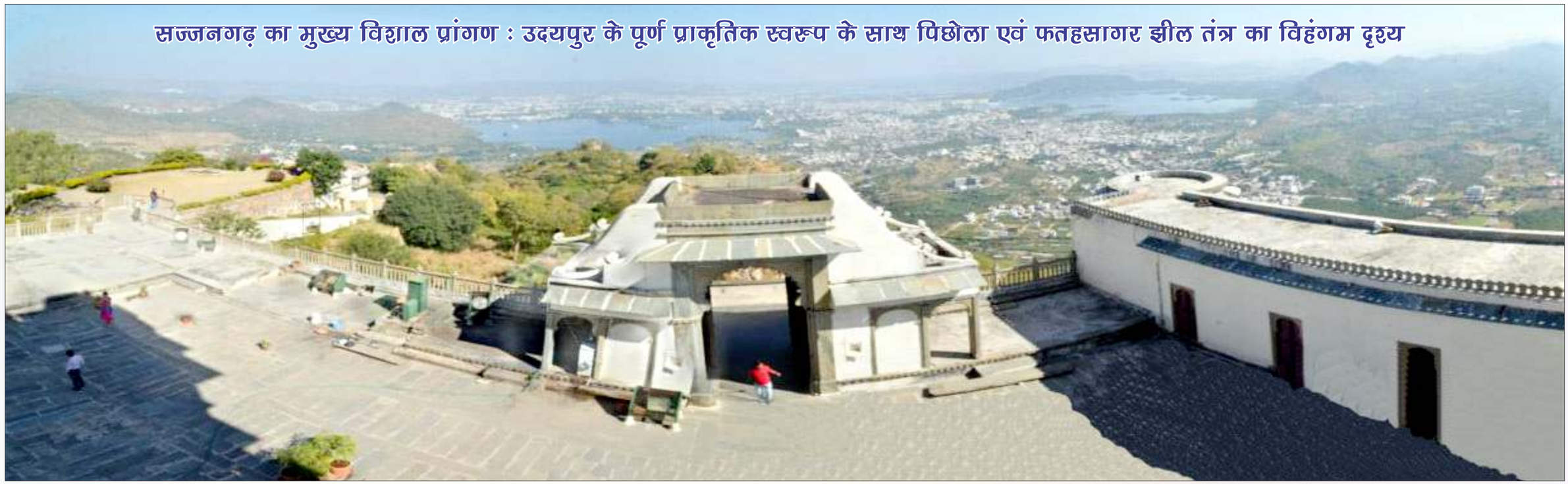

सज्जनगढ़ पर स्थित पार्क, हरीतिमायुक्त नैसर्गिक स्वरूप तथा फतहसागर एवं पिछोला झील की सुनहरी दृश्यावली

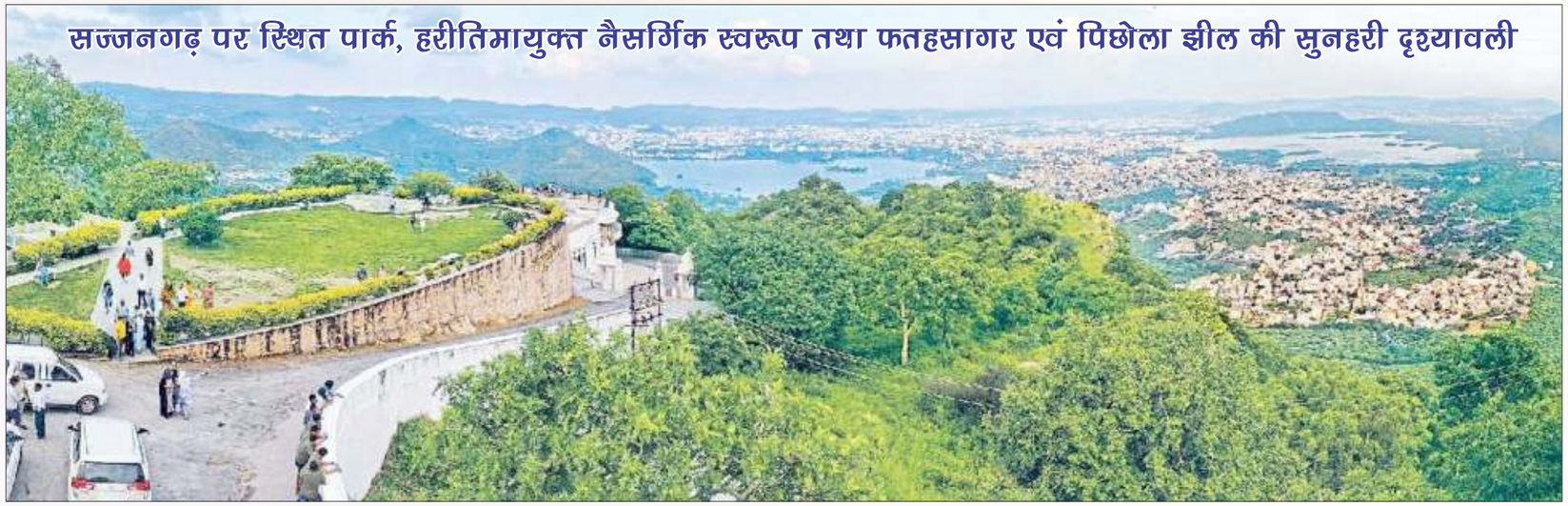

सज्जनगढ़ मुख्य परिसर

सज्जनगढ़ : सघन वन क्षेत्र से गुजरती हुई मुख्य सड़क

सज्जनगढ़ : पश्चिमी छोर पर हरीतिमा युक्त पहाड़ियाँ

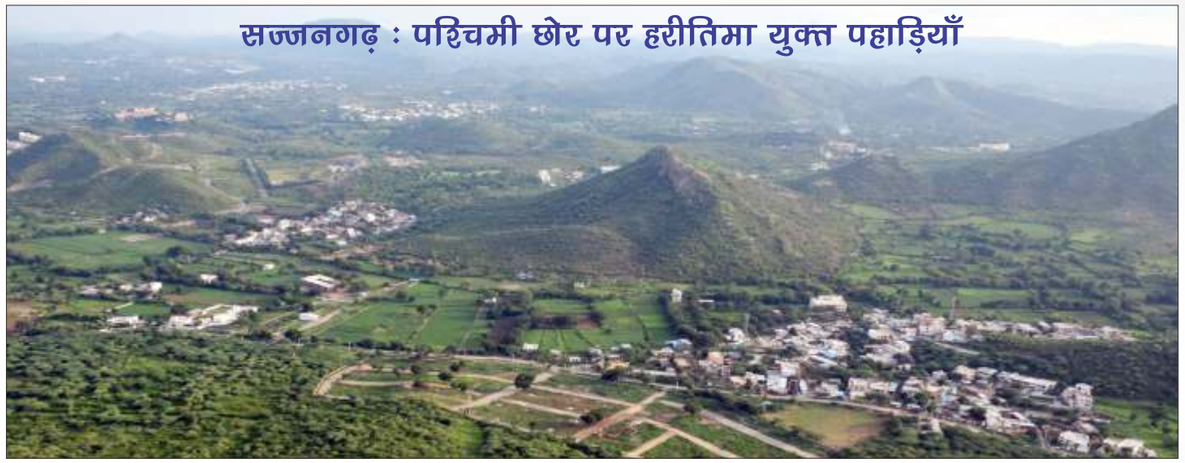

सज्जनगढ़ – चहुँओर दृष्टिगत अकल्पनीय प्राकृतिक सुषमा

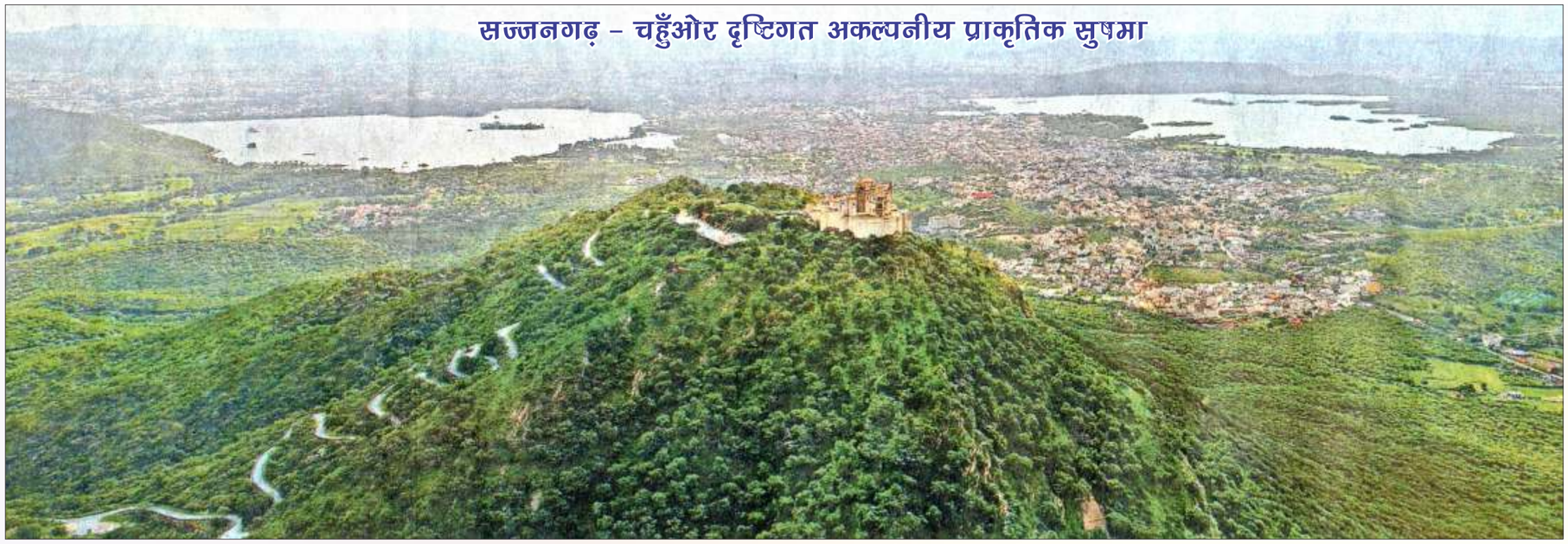

सज्जनगढ़ मुख्य महल

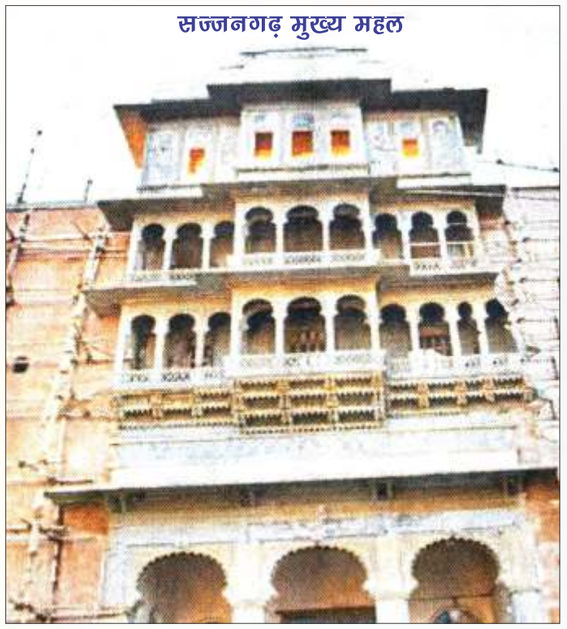

प्रताप गौरव केन्द्र : भारत की गौरवमयी सांस्कृतिक विरासत के प्रति जागृति उत्पन्न कर उसे पुनरूत्थापित करने के उदात्त उद्देश्य से उदयपुर में 'प्रताप गौरव केन्द्र' के नाम से एक राष्ट्रीय स्मारक का निर्माण किया गया। स्मारक को मेवाड़ के वीर सपूत 'महाराणा प्रताप' का नाम दिया जाना अत्यन्त स्वाभाविक है, क्योंकि 16वीं शताब्दी का यह वीर शासक जिनका जन्म

1540 ई.सं., राज्याभिषेक 1572 ई.सं. तथा देहावसान 1587 ई.सं. में हुआ। महाराणा प्रताप ने तत्कालीन समय के मुगल सम्राट अकबर की विस्तारवादी नीति का पुरजोर विरोध किया तथा वे राष्ट्रीयता, बहादुरी, आत्म–सम्मान, देशप्रेम और सदाचारिता के प्रतीक बन गये।

भारत सरकार के 'डाक एवं तार' विभाग द्वारा वर्ष 1967 में महाराणा प्रताप पर 'डाक टिकट' जारी किया गया। इस अवसर पर प्रकाशित विवरणिका में उनके महत्त्व को स्वीकारते हुए कहा गया था – ''इतिहास के पन्नों में हम ऐसे अनेक उदाहरण पाते हैं, जब व्यक्तियों ने शक्ति तथा साम्राज्य के विस्तार के लिए अपनी पहचान बनाई लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि किसी ने विपरीत परिस्थितियों में भी नैतिक आदर्शों के प्रति अपनी निष्ठा बनाये रखी। ऐसे विरलों को सदैव सम्मानपूर्वक याद किया जाता है। महाराणा प्रताप एक ऐसे ही व्यक्तित्व थे, जिन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों के आगे झुक कर सुरक्षित जीवन पाने के स्थान पर स्वतंत्रता और राष्ट्र गौरव के महान् आदर्शों के लिए संघर्षशील और कठिनाइयों से भरे जीवन को आत्मसात् किया।''

प्रताप गौरव केन्द्र के निर्माण का शुभारम्भ 18 अगस्त, 2008 को फतहसागर से कुछ दूरी पर नीमजमाता मन्दिर के पीछे स्थित टाइगर हिल की 28 बीघा (21.21 एकड़) भूमि पर किया गया। भारतमाता, मीरां, चेतक आदि की आकर्षक प्रतिमाओं के साथ–साथ यहाँ का प्रमुख आकर्षण अष्टधातु से निर्मित महाराणा प्रताप की 57 फीट ऊँची प्रतिमा है। यह पहली प्रतिमा है जिसमें उन्हें राज्य संन्यासी की मुद्रा में दिखाया गया है।

सभागार, संग्रहालय, रिसर्च सेन्टर, लाइट एण्ड साउण्ड शो, डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म, मेकेनिकल मॉडल्स से युक्त पवेलियन, हॉल ऑफ फेम, बाग–बगीचे, कुण्ड आदि आकर्षणों के साथ में उदयपुर के पर्यटन मानचित्र पर '**प्रताप गौरव केन्द्र**' अपनी पूरी आभा के साथ वर्तमान में विशिष्ट पहचान बन गया है।

राष्ट्रीय तीर्थ भक्ति धाम : प्रताप गौरव केन्द्र पर नव निर्मित भक्तिधाम की प्राण प्रतिष्ठा कर जन समुदाय को समर्पित किया गया। भक्तिधाम मन्दिरों का एक समूह है जिसमें मेवाड़ के सभी प्रमुख तीर्थों की प्रतिकृतियाँ शामिल की गयी हैं। इसमें मेवाड़ के अधिपति श्री भगवान एकलिंगनाथ के अलावा रिद्धि–सिद्धि विनायक, श्रीनाथजी, चारभुजानाथ, द्वारिकाधीश, सांवलियाजी, चामुण्डा देवी, जैन मन्दिर केसरियानाथजी तथा राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान के विग्रहों से युक्त राम दरबार शामिल है। इस भक्तिधाम से पर्यटकों व तीर्थ यात्रियों को एक ही स्थान पर सभी मन्दिरों के दर्शन करने का लाभ मिल रहा है।

सहेलियों की बाड़ी : यह भव्य बगीचा महाराणा संग्राम सिंह (द्वितीय) ने सन् 1710–1734 के बीच राजपरिवार की महिलाओं के आमोद–प्रमोद के लिए निर्मित करवाया था, इसलिए इसका नाम ''सहेलियों की बाड़ी'' रखा गया। यह देश के सुन्दरतम् बगीचों में गिना जाता है। इसे देखकर अन्तःपुर की जीवनशैली का आभास स्वतः ही हो जाता है। पहले वस्तुतः फतहसागर के नीचे कई छोटे–छोटे बगीचे थे, जिन्हें महाराणा फतहसिंह ने सहेलियों की बाड़ी में मिलाकर इसे एक भव्य स्वरूप प्रदान किया। चारों तरफ हरी–भरी घास, मनमोहक फूलों की कतारों एवं आकर्षक फव्वारों पर स्वतः ही दृष्टि ठहर सी जाती है।

कमल तलाई

संगमरमर निर्मित हाथी जिसकी सूँड़ से फव्वारा निकलता है।

बायां फव्वारा चौक

महल के पीछे स्थित जलकुण्ड, इसका पुनर्निर्माण एवं सौन्दर्यीकरण कर दर्शनीय बनाया जा सकता है

जलकुण्ड जिसके चारों ओर फव्वारों के साथ बीच में संगमरमर की छतरी के छज्जों से छलकता पानी एवं उनके मध्य ढलवा ब्रोंज की पुतली से निकलता पानी

मुख्य फव्वारा चौक

संगमरमर के गुम्बद वाली शिस्ट निर्मित स्तम्भ-छतरी, जिसमें छज्जों के बीच की वलयाकार जगहों से जल-प्रवाह निकलने की व्यवस्था है।

मुख्य प्रवेश द्वार

इतिहास के पृष्ठों से : महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय (1710–1734 ई.सं.) द्वारा राजमहल की महिलाओं विशेषकर राजकुमारियों तथा उनकी सहेलियों के लिए एक विशिष्ट बाग बनवाया था। जैसा कि इसके नाम से ही विदित होता है कि यह लड़कियों के समूह के खेल–कूद तथा मनोरंजन के लिए बनाया गया था। यह देवाली तालाब के अनुप्रवाह क्षेत्र में निर्मित है। देवाली तालाब की पाल अतिवृष्टि के कारण टूट जाने के उपरान्त यह बाड़ी विरान सी हो गयी थी। तत्पश्चात् महाराणा फतहसिंह ने इस बाड़ी का नवीनीकरण कराते हुए एक विशाल सुन्दर बाग बनाया और महलों की मरम्मत तथा वृद्धि कराकर उनमें चित्रकारी व काँच की पच्चीकारी का काम, हौज, फव्वारें, छतरियाँ आदि बनवायी। महलों के अन्दर के चौक में हौज के चारों कोनों पर पलेवे के श्याम पत्थर की 4 छतरियें और हौज के बीच में राजनगर के संगमरमर की नक्काशी के काम की छतरी, जिसके छज्जों में से पानी की चद्दर और कलश की जगह कपोत पक्षी जिनकी चोंच में से फव्वारें छूटते हुए हैं और हौज के चारों तरफ भी फव्वारे चलते हैं, उस समय चातुर्मास ही प्रतीत होता है। अन्दर के हौज के दोनों तरफ जहां की बनाई हुई ढलवां ब्रोंज की दो पुतलियें हैं जिनके हाथ में से फव्वारा चलता है। सच पूछा जाए तो सहेलियों की बाड़ी को नंदन वन की उपमा भी दें तो कुछ अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि महलों के हौज और फव्वारों के अलावा कोट के अन्दर के बाग की तलाई में कमल और मध्य में फव्वारा, तलाई पर चारों ओर संगमरमर के एक ही पत्थर के चार हाथी, जिनकी सूंडों में फव्वारें चलते हुए कमल के पत्तों पर गिरते हैं, वे श्रावण भाद्रपद का वर्षा का दृश्य बतलाते हैं। यह बाग ऐसा सुन्दर, छटादार और आनन्ददायक था कि शाही खानदान के लोग और बड़े–बड़े यूरोपियन मेहमानों को गार्डन पार्टी इसी बाग में दी जाती थी। इस बाड़ी की छतरियों का स्थापत्य अद्भुत है और उद्यान के सभी भागों में चारों ओर भूमिगत जलयंत्र लगे हुए हैं, जो चालू किये जाने पर वर्षा ऋतु सा दृश्य परिलक्षित करते हैं।

दायां फव्वारा चौक

पाथ-वे

सुन्दर पार्क एवं फव्वारें

सहेलियों की बाड़ी उदयपुर का सर्वोत्तम दर्शनीय स्थल है परन्तु इसके नवीनीकरण की महत्ती आवश्यकता है। इस हेतु कुछ महत्त्वपूर्ण निम्नांकित बिन्दुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया जा रहा है :–

(1) विरासत में मिली सहेलियों की बाड़ी जीर्णोद्धार पश्चात् करीब 100 वर्षों से भी अधिक पुरानी है। अब करीब–करीब सभी क्षेत्रों के फव्वारों से पानी कम दबाव से निकलता है एवं कुछ पूर्णतया बन्द हैं। सहेलियों की बाड़ी की सुन्दरता का मुख्य स्रोत फव्वारें ही हैं। ऐसा कहा जाता है कि पूर्व में ये

फव्वारें : कतिपय कम दबाव के कारण शिथिल एवं कुछ पूर्णतया बन्द अवस्था में

सभी फव्वारें फतहसागर झील के पानी के दबाव से प्राकृतिक रूप से संचालित होते थे। वर्तमान में ये वाटर पम्प के दबाव से चलते हैं। इन फव्वारों का नवीनीकरण इस दर्शनीय बाड़ी की शोभा पूर्व की भाँति बनाये रखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य को देश की ख्यातिप्राप्त तकनीकी रूप से श्रेष्ठ संस्था से करवाया जाना चाहिये जो इस तरह के कार्यों को संपादित करने में दक्ष हो। इसके अतिरिक्त इस कार्य को उदयपुर के विशिष्ट औद्योगिक प्रतिष्ठान द्वारा अपने सी.एस.आर. फण्ड एवं सरकारी आर्थिक सहयोग के साथ करवाया जा सकता है।

(2) इसके मुख्य फव्वारा चौक में स्थित महल के अन्दर राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर द्वारा विज्ञान केन्द्र की स्थापना कर विज्ञान संग्रहालय कई वर्षों से संचालित किया जा रहा था। इस संग्रहालय का सहेलियों की बाड़ी में औचित्य नहीं है, अतः संस्थान द्वारा इसे अपने मुख्य भवन में स्थानान्तरित कर आर्ट गैलेरी 'कलांगन' के रूप में विकसित कर वर्ष 2018 में लोकार्पण किया गया, यह प्रशंसनीय कदम है। इतिहास के पृष्ठों में कहा गया है कि इस महल में पूर्व में चित्रकारी एवं काँच की पच्चीकारी का कार्य किया हुआ था। विरासत में मिले इस महल को पुनः सुसज्जित कर इसमें सहेलियों की बाड़ी के सभी मौसम के अन्य चित्रों के साथ उदयपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों के बड़े आकार के सुन्दर चित्र लगाये जाने चाहिये। उदयपुर में आने वाले सभी पर्यटक सहेलियों की बाड़ी में अवश्य आते हैं जो उक्त भव्य चित्रों को देखकर उन स्थलों पर भ्रमण हेतु जाने का मानस अवश्य बनायेंगे।

(3) सहेलियों की बाड़ी के बाहरी उद्यान की बनावट मुगल शैली पर आधारित है। बाहरी उद्यान को बायें व दायें दो भागों में बाँटा गया हैं। इस बाड़ी के पश्चिमी छोर पर एक गोलाकार कमल तलाई स्थित है, जिसके बीच में एक बड़ा फव्वारा है। इस फव्वारें के चारों ओर सुन्दर कमल खिले हुए रहते हैं। तलाई के चारों ओर अनेक छोटे फव्वारों के साथ संगमरमर से निर्मित एवं समरूप चार विशाल हाथी स्थित हैं, जिनकी सूँड़ों से नियमित रूप से फव्वारें चलते हुए कमल के पत्तों पर गिरते हैं। यह दृश्य बहुत ही अनुपम एवं मनोहारी दृष्टिगत होता है। मुगल शैली का उद्यान होने से इसके चारों भागों को एक समान स्वरूप देने के साथ प्रत्येक उद्यान की अपनी एक विशिष्ट विशेषता होनी चाहिये। इन उद्यानों के उच्चतम् रखरखाव के लिए संपूर्ण बाड़ी के जल निकास की उत्तम व्यवस्था करना आवश्यक है।

(4) इस तलाई के पश्चिमी छोर पर एक चबूतरे पर राजा–महाराजाओं का एक बैठक स्थल बना हुआ है। इसके ठीक सामने के महलों के पिछवाड़े में एक गौखड़ा बना हुआ है। ऐसा कहा जाता है कि राजा–महाराजा चबूतरे पर एवं रानी–महारानी व राजकुमारियाँ गोखड़े पर बैठकर इस तलाई के चारों ओर होने वाले परम्परागत नृत्य को देखने का लुत्फ उठाते थे। वर्तमान में उक्त स्थलों पर पर्यटकों को नहीं आने दिया जाता है। इस गोखड़े के पीछे एक छोटा हौज है जो चारों ओर से ऊँची दीवार से घिरा हुआ है। शायद इसमें जल–क्रीड़ा होती थी। इस हौज में उच्च स्तर के फव्वारें स्थापित कर दोनों ओर स्थित बगीचों में सुन्दर फुलवारी विकसित कर इसे पर्यटकों के लिए खोल देना चाहिये। गौखड़े से सुन्दर फोटोग्राफी की जा सकती है।

(5) इस बाड़ी के पेड़ एक उद्यान के अनुरूप नहीं दिखते हैं तथा ऐसा परिलक्षित होता है कि जामुन, आम, नीम आदि के पेड़ स्वतः ही विकसित हुए हो। किसी भी विकसित उद्यान में पेड़ उनकी सुन्दरता के अनुरूप एवं एकरूपता में ही लगाये जाने चाहिये। सुन्दरता के हिसाब से उद्यान में अनेक पाम ट्री लगाये गये हैं, जिनकी शृंखला को न तो आगे बढ़ाया गया, और न ही इन पेड़ों के रखरखाव पर पूरा ध्यान दिया गया है।

(6) बाड़ी के उद्यान के मार्गों के किनारे वनस्पतिक फेन्सिंग के आगे सीमेन्ट के पतले स्लेब लगाये गये हैं, जबकि यह वनस्पति फेन्सिंग अत्यन्त सुन्दर दिखने के साथ मार्ग की सुन्दरता में भी अभिवृद्धि करती है, वहाँ सीमेन्ट स्लेब का खर्च व्यर्थ ही कर दिया गया है एवं टूटे हुए सीमेन्ट के स्लेब इस बाड़ी की सुन्दरता के अनुकूल नहीं हैं।

(7) मुख्य उद्यान की ऊँची चारदीवारी के साथ ईंटों एवं चिप्स के माध्यम से एक पाथ–वे एवं क्यारी भी बनाई गई है। इस पाथ–वे पर प्रातःकाल स्थानीय नागरिक घुमते हुए देखे जा सकते हैं। चारदीवारी के पास बनाई गई क्यारी में सुन्दर पौधे लगाने का प्रयास किया गया लेकिन पौधों की चयन एवं दूरी सही नहीं होने से इनकी सुन्दरता में कोई अभिवृद्धि नहीं हुई। चारदीवारी के साथ लगी क्यारी एवं पाथ–वे पर ग्लास/नेट की सुन्दर गैलेरी विकसित की जानी चाहिये। इस गैलेरी में सीढ़ीदार बनावट पर सुन्दर पौधे रखकर अतिरिक्त शुल्क के साथ पर्यटकों के लिए एक अतिरिक्त सुन्दर स्थल विकसित किया जा सकता है। पौधे (बोनसाई, क्रोटोन, केक्ट्स, फर्न, गुलाब, आदि) पी. पी.पी. मोड़ पर विभिन्न नर्सरियों एवं औद्योगिक प्रतिष्ठानों के विज्ञापन के साथ रखें जा सकते हैं। साथ ही इस गैलेरी में विभिन्न प्रकार के एक्वेरियम भी स्थापित किये जा सकते हैं।

(8) सहेलियों की बाड़ी के मध्य चौक, जहां टिकिट वितरण केन्द्र स्थित है, वहाँ बहुत अच्छी तरह से फूल एवं बारहमासी सुन्दर पौधों के गमले स्थायी सीढ़ीदार बनावट एवं लोहे के स्टेण्ड पर सजाकर रखे गये हैं। इस स्थल पर आधुनिक सुविधा कक्ष भी बना हुआ है। इसका एक द्वार सहेलियों की बाड़ी के उद्यान की ओर से भी होना चाहिये ताकि यह पर्यटकों के लिए सुविधाजनक रहेगा। सभी सुन्दर गमलों और बनावट को मुख्य उद्यान के चारों ओर की दीवारों पर स्थानान्तरित कर इस क्षेत्र को बड़े ग्लास, नेट, प्लास्टिक हाउस आदि बनाकर पौधों का बहुलीकरण विधिपूर्वक किया जा सकता है तथा फूलों की नर्सरी स्थापित कर अच्छे मौसमी फूल समय पर रोपे जा सकते हैं।

(9) उद्यान में दो गोलाकार फव्वारा स्थल हैं जिनके चारों ओर वनस्पतिक पौधों की कतार है। अभी वनस्पति पौधों की बढ़वार अनियंत्रित हैं। इसे व्यवस्थित कर एक निश्चित ऊँचाई निर्धारित की जानी चाहिये।

(10) इसके प्रवेश द्वार के साथ प्रथम चौक है, जिसे विकसित कर उद्यान का स्वरूप दिया गया है, लेकिन इसमें पूर्णता नहीं दिखती है। इसके दक्षिणी–पश्चिमी छोर पर मिट्टी एवं उद्यान से निकला हुआ सूखा व हरा कचरा डाला जाता है। इसके मध्य चौक में आधुनिक 2–3 कम्पोस्ट पिट बनाये जा सकते हैं, जिसमें इस कचरे को कम्पोस्ट के रूप में तैयार किया जा सकता है। इससे यह दर्शनीय हो सकेगा और उद्यान के लिए कम्पोस्ट क्रय करने की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। सहेलियों की बाड़ी के प्रथम चौक को सुन्दर बनाने के साथ इसके चारों ओर एक ''वॉक–वे'' भी बनाया जावे जिससे आम नागरिक प्रातः एवं सायंकालीन भ्रमण सुगमता से कर सके। साथ ही बाड़ी का मुख्य उद्यान पर्यटकों के लिए आरक्षित किया जावे।

(11) इस चौक में एक तरफ दो व चारपहिया वाहन की आधुनिक सशुल्क पार्किंग और दूसरी ओर उच्च स्तरीय फूड हब विकसित किया जा सकता है। इन दोनों सुविधाओं से पर्यटक बेखौफ इस अति विशिष्ट दर्शनीय स्थल का आनन्द ले सकेंगे एवं खाद्यान्न आवश्यकता की पूर्ति यहाँ से संभव हो सकेगी। साथ ही प्रशासन को इन दोनों आवश्यक सुविधाओं से आमदनी भी प्राप्त होती रहेगी। इससे सहेलियों की बाड़ी के प्रवेश द्वार पर वास्तविक पार्किंग निषेध क्षेत्र घोषित किया जा सकेगा। पुलिस सुरक्षा एवं पेयजल हट को किसी अन्य स्थल पर स्थानान्तरित कर इसके मुख्य प्रवेश स्थल पर एक सुन्दर द्वार बनाया जावे, जिसके मूल स्वरूप में महिलाएँ, फव्वारें, सुन्दर फूल एवं पौधें दृष्टिगत होने चाहिये।

(12) इस बाड़ी की सफाई व्यवस्था पर और अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। यहाँ प्रतिदिन पौधों एवं पेड़ों से सूखे पत्ते, फूल आदि गिरते रहते हैं, अतः संपूर्ण बाड़ी की सफाई के साथ सभी कचरा पात्रों से प्रतिदिन कचरा निकालने की भी व्यवस्था होनी चाहिये।

(13) बाड़ी के मुख्य उद्यान में 100 वर्षों पूर्व स्थापित किये गये पत्थर के चौके वर्तमान में जीर्ण–शीर्ण होने लगे हैं, जिनका बदलाव आवश्यक है। इसके अतिरिक्त उद्यान के मुख्य मार्गों पर हाल ही में लगाये गये जोधपुर स्टोन के चौकों की जड़ाई भी उच्च स्तर की नहीं है एवं इनमें से कुछ तो टूटने लगे हैं, अतः ऐसे विशिष्ट दर्शनीय स्थल पर कार्य की गुणवत्ता पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

(14) वेलकम एवं मुख्य फव्वारा स्थल की सुरक्षा हेतु सीमेन्ट कंकरीट के ढाले हुए पोल मय मोटी रस्सी के लगाये गये हैं। यह संरचना इस दर्शनीय स्थल के लिए किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं है। इसके स्थान पर उच्च स्तर के सुन्दर रस्ट प्रूफ एवं जंजीर युक्त लोहे या स्टील से निर्मित पोल लगाये जाने चाहिये।

मैं हूँ मेवाड़ का मुख्य पर्यटन स्थल!
आज सहमी हुई हूँ, कल फिर उभर आऊँगी, मेरे जीर्णोद्धार की महत्ती आवश्यकता है।

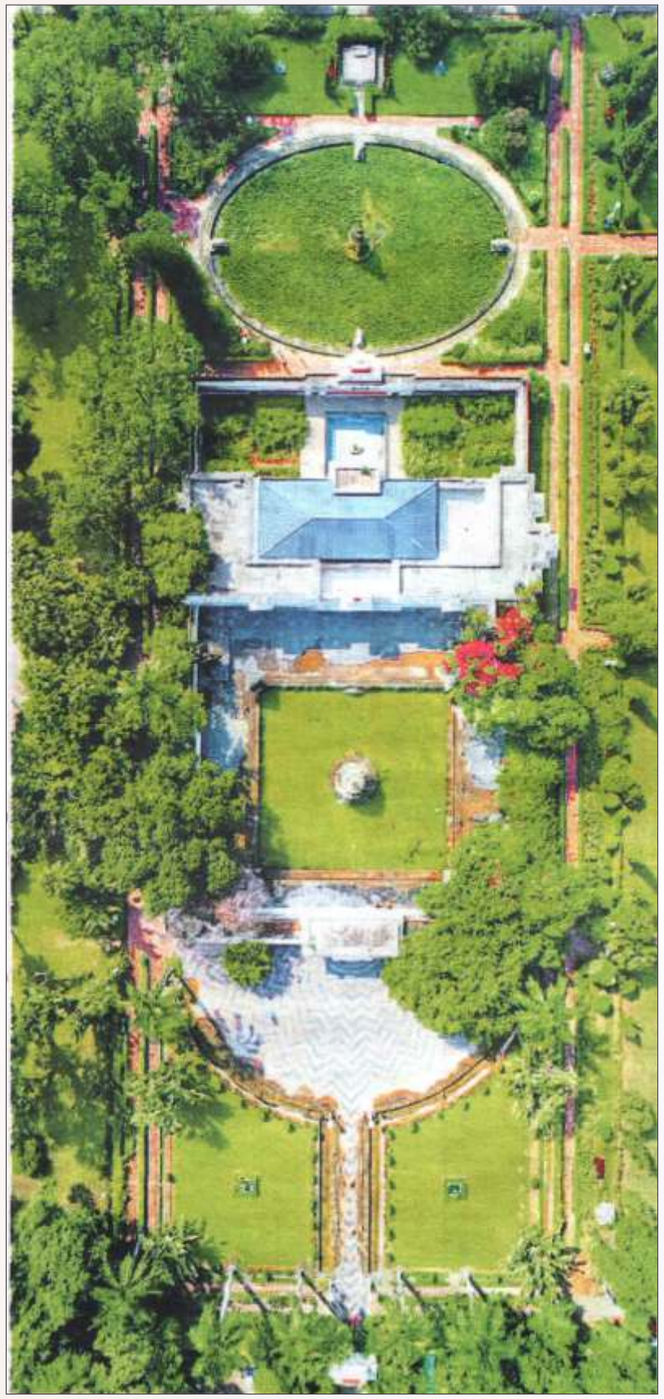

सहेलियों की बाड़ी के जीर्णोद्धार के लिए कतिपय सुझाव देने का प्रयास किया गया है, जिससे विरासत में मिले स्वरूप को पुनः स्थापित किया जा सके।

सहेलियों की बाड़ी में पर्यटकों की स्थिति : सहेलियों की बाड़ी उदयपुर शहर का एक मुख्य पर्यटन स्थल है। पिछले 5 वर्षों में उदयपुर आए कुल (भारतीय एवं विदेशी) पर्यटकों में से करीब 47 प्रतिशत पर्यटक सहेलियों की बाड़ी के भ्रमण हेतु आ चुके हैं। अतः इस विशिष्ट दर्शनीय स्थल का रखरखाव उच्च स्तर का होना चाहिये, जिस हेतु उद्यान विशेषज्ञों से अवश्य परामर्श लिया जाना चाहिये। सहेलियों की बाड़ी के फव्वारें पूर्व में फतहसागर के पानी के दबाव से संचालित होते थे, परन्तु वर्तमान में इन्हें उच्च क्षमता के वाटर पम्प से संचालित किया जा रहा हैं। इन फव्वारों की दशा में उच्च स्तर का परिवर्तन एवं सुधार अति आवश्यक है। मुख्य फव्वारा स्थल के साथ उत्तर–दक्षिण दिशा में स्थित छोटे गोलाकार स्थलों एवं कमल तलाई के फव्वारों को ठीक करना आवश्यक है। ये फव्वारें ही सहेलियों की बाड़ी की शान है। इन्हें ठीक करने हेतु उच्च दक्षता युक्त विशेषज्ञों की फर्म से ही यह कार्य करवाया जाना चाहिये।

सहेलियों की बाड़ी में वर्षवार पर्यटकों की संख्या एवं कुल आय

वर्ष	शहर के पर्यटक	राजस्व वर्ष	सहेलियों की बाड़ी में पर्यटक संख्या			कुल आय (रुपये में)
			भारतीय	विदेशी	कुल	
2016	938815	2016-17	469551	64524	534075	7312485
2017	1021485	2017-18	404017	68731	472748	7045415
2018	1136946	2018-19	446327	74548	520875	9032310
2019	1185606	2019-20	473857	58303	532160	12953460
2020	400527	2020-21	146193	147	146340	2429060
कुल	**4683379**	**कुल**	**1939945**	**266253**	**2206198**	**38772730**

सहेलियों की बाड़ी के रखरखाव एवं विकास कार्यों पर खर्च : पिछले पाँच वर्षों में सहेलियों की बाड़ी के विकास कार्यों पर करीब 28.60 लाख रुपये खर्च किये गये, जिसके अन्तर्गत लोन, पाथ–वे, चारों तरफ के वॉक–वे आदि के रखरखाव के साथ नवीनीकरण किया गया। फव्वारों की दशा पर ध्यान नहीं दिया गया है जो कि इसकी सुन्दरता के लिए अति आवश्यक था। इस बगीचे को पूर्णतया मुगल उद्यान पद्धति से विकसित किया जाना चाहिये। सहेलियों की बाड़ी के रखरखाव एवं साफ–सफाई व्यवस्था पर पिछले पाँच वर्षों में औसतन 19.50 लाख रूपये खर्च हुए हैं। इसमें लोन के रखरखाव, फूलों की क्यारियों, वृक्षों की छंटाई, नये पौधों के समावेश आदि पर अधिक खर्च करने की आवश्यकता है।

सहेलियों की बाड़ी पर खर्च राशि (रुपयों में)

वर्ष	रखरखाव	विकास कार्य
2016-17	1924320	-
2017-18	1873140	2857000
2018-19	1862904	-
2019-20	1916542	-
2020-21	2184732	-
कुल	**9761638**	**2857000**

पिछले पाँच वर्षों में पर्यटकों से कुल आय 3.88 करोड़ रुपये हुई लेकिन इस पर कुल खर्च 1.26 करोड़ के करीब रहा। इसके समुचित विकास हेतु टिकिट दर में वृद्धि कर राज्य सरकार, नगर विकास प्रन्यास, नगर निगम के साथ उदयपुर के प्रतिष्ठित औद्योगिक घरानों का सहयोग लेते हुए इसे दुनिया के सुन्दरतम् स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। यह तभी संभव है जब उक्त सभी विकास कार्य पूर्ण नियोजित, गुणवत्तापूर्ण एवं उच्च स्तरीय होंगे।

फतहसागर झील की तलहटी में स्थित सहेलियों की बाड़ी में कुल पाँच स्थानों पर फव्वारें लगाए गए हैं जिनके अलग–अलग नाम हैं। इसके प्रवेश द्वार पर स्थित फव्वारें को 'स्वागत फव्वारा' के नाम से जाना जाता है। इसके बाद 'बिन बादल बरसात', 'सावन भादवो', 'कमल तलाई', एवं 'रासलीला' नामक फव्वारें स्थित हैं। ये फव्वारें पूर्व में फतहसागर के पानी के ग्रेविटी सिस्टम से चलते थे किन्तु वर्तमान में ये मोटर पम्प से संचालित हैं। सावन भादवो नामक फव्वारें के बीच में मार्बल की छतरी बनी हुई है तथा इसके चारों ओर ब्लेक स्टोन की छतरियां हैं। इन सभी छतरियों में फव्वारें लगे हुए हैं जिनके पानी की आवाज से बारिश सा आभास होता है। कमल तलाई में मार्बल के चार हाथी लगे हुए हैं जिनकी सूँड से निकलता फव्वारा लोगों को आकर्षित करता है। कमल तलाई के मध्य धातु से निर्मित बहुत बड़ा फव्वारा है। मुख्य फव्वारा स्थल के बाहर दोनों तरफ रासलीला फव्वारे नज़र आ रहे हैं।